दोषजनक अन्न से, विषमभोजन से तथा अजीर्ण भोजन से बड़े भयंकर रोग सूतिका को होजाते हैं ॥ १ ॥

अङ्गमर्दो ज्वरः कम्पः पिपासा गुरुगात्रता ।
शोफः शूलातिसारौ च सूतिकारोगलक्षणम् ॥ २ ॥

अंगड़ाईयां टूटना, ज्वर, कम्पकम्पी आना, प्यास लगनी, शरीर का भारी होना, सूजन होना, शूल तथा अतिसार होना ये सूतिकारोग के लक्षण हैं ॥२॥

ज्वरादीनां रोगविशेषाणां निदानविशेषमाह—

ज्वरातीसारशोथाश्च शूलानाहबलक्षयाः ।
तन्द्रारुचिप्रसेकाद्या वातश्लेष्मसमुद्भवाः ॥ ३ ॥

ज्वर, अतिसार, शोथ, शूल, आनाह तथा बल की क्षीणता, तन्द्रा, अरुचि, कफ थूकना आदि ये सभी उपद्रव वात कफ से उत्पन्न होते हैं ॥ ३ ॥

कृच्छ्रसाध्या हि ते रोगाः क्षीणमांसबलाश्रिताः ।
ते सर्वे सूतिकानाम्ना रोगास्ते चाप्युपद्रवाः ॥ ४ ॥

ये सभी रोग यदि प्रसूता स्त्री क्षीणमांस तथा क्षीणबल की हो तो कष्टसाध्य होते हैं । ये सभी उपद्रव और रोग सूतिकारोग नाम से कहाते हैं ॥ ४॥

अथ सूतिकारोगचिकित्सामाह ।

सूतिकारोगशान्त्यर्थं कुर्याद्वातहरीं क्रियाम् ।
दशमूलकृतं क्वाथं कोष्णं दद्याद् घृतान्वितम् ॥ १ ॥

सूतिकारोग की शान्ति के लिये वातनाशक क्रिया करनी चाहियें । दशमूल के क्वाथ में घी मिलाकर कोसा २ पिलाना चाहिये ॥ १ ॥

अमृतानागरसहचरभद्रोत्कटपञ्चमूलजलदजलम् ।
शृतशीतं मधुयुक्तं शमयत्याचिरेण सूतिकातङ्कम् ॥ २ ॥

गिलोय, सोंठ, झिण्टी या कटसरैया, भद्रमोथा, लघु पंचमूल अर्थात् शालपर्णी, पृष्टपर्णी, गोखरू, छोटी कटेली, बड़ी कटेली, मोथा, बाला इन सब का क्वाथ कर के शीतल कर के शहद डालकर पिलावें तो शीघ्र ही सूतिकारोग का नाश होता है ॥ २ ॥

अथ देवदार्वादिः—**देवदारु वचा कुष्ठं पिप्पली विश्वभेषजम् ।**
भूनिम्बः कट्फलं मुस्तं तिक्ता धान्यं हरीतकी ॥१॥

देवदार, बच, कूठ, पीपल, सोंठ, चिरायता, कायफल, मोथा, कुटकी, धनियां, हरड़ ॥ १ ॥

गजकृष्णा च दुःस्पर्शा गोक्षुरुर्धन्वयासकः ।
बृहत्यतिविषा छिन्ना कर्कटं कृष्णजीरकम् ॥ २ ॥

गजपीपल, जवासा, गोखरू, धमासा, बड़ी कटेली, अतीस, गिलोय, काकड़ासिंही, काला जीरा ॥ २ ॥

समभागान्वितैरेतैः सिन्धुरामठसंयुतम्।
काथमष्टावशेषं तु प्रसूतां पाययेत्स्त्रियम्॥ ३॥

इन सब को समभाग लेकर सेंधानमक, हींग मिलाकर क्राथ कर के आठवां भाग शेष रखकर प्रसूता को पिला देवें॥ ३॥

शूलकासज्वरश्वासमूर्च्छाकम्पाशिरोऽर्तिभिः।
युक्तं प्रलापतृड्दाहतन्द्रातीसारवान्तिभिः॥ ४॥

तो शूल, कास, ज्वर, श्वास, मूर्च्छा, कम्प, शिरःपीड़ा, प्रलाप, दाह, तन्द्रा, अतीसार. वमन॥ ४॥

निहन्ति सूतिकारोगं वातपित्तकफोद्भवम्।
कषायो देवदार्वादिः सूतायाः परमौषधम्॥ ५॥

इन सब के सहित सूतिकारोग को जो वातपित्त तथा कफ से हुआ हो नष्ट करता है। यह देवदार्वादि कषाय सूतिकारोग की परम औषध है॥ ५॥

अथ निर्गुण्ड्यादिकाथः—

संयोजितो दलितया कणया कवोष्णो निर्गुण्डिकालशुननागरजः कषायः
पीतो निहन्ति कफमारुतकोपजातं सूत्यामयं सकलमेव सुदुस्तरं च १

संभालु, लहसन, सोंठ इन का कोसा २ क्राथ पिप्पली का चूर्ण डालकर पिलाया जाये तो कफ वायु क कोप से उत्पन्न हुए २ सूतिकारोग की सब भयंकर अवस्थाओं को यह नष्ट करता है॥ १॥

अथ सहचरादिः—सहचरकुलत्थपुष्करदारुनिशादारुवेतसक्काथः।
पीतः सहिङ्गुलवणः शमयति शूलज्वरौ सूत्याः॥१॥

झिण्टी, कुलथी, पोहकरमूल, दारुहल्दी, दवदार तथा बेत इन सब का क्राथ हींग तथा नमक डालकर पिलायें तो सूतिकाका शूल तथा ज्वर शांत होते हैं॥१॥

अथ पञ्चमूलादिः—पञ्चमूलस्य वा क्राथं तप्तलोहेन संगतम्।
सूतिकारोगनाशाय पिबेद्वा तद्युतां सुराम्॥ १॥

लघु पंच मूल का क्राथ करके उसमें लोहा गरम २ करके बुझाया जाये तो इस क्राथ को पिलाने से सूतिकारोग नष्ट होता है। अथवा पञ्चमूल से युक्त की हुई सुरा पिलावे॥ १॥

अथ पञ्चजीरकपाकः—जीरकं स्थूलजीरश्च शतपुष्पाद्वयं तथा।
यवानी चाजमोदा च धान्यकं मेथिकाऽपि च॥ १॥

जीरा श्वेत, मोटा काला जीरा या मगरेला, सौंफ, सोया, अजवायन, अजमोद धनियां, मेथी॥ १॥

शुण्ठी कृष्णा कणामूलं चित्रकं हपुषाऽपि च।
विदारीफलचूर्णं तु कुष्ठं कम्पिल्लकं तथा॥ २॥

सोंठ, पिप्पली, पिप्पलामूल, चीता, हाऊबेर, विदारीकन्द का चूर्ण, कूठ तथा कमीला॥ २॥

एतानि पलमात्राणि गुडं पलशतं मतम्।
क्षीरं प्रस्थद्वयं दद्यात्सर्पिषः कुडवं तथा॥ ३॥

इन में से प्रत्येक पदार्थ एक २ पल ले, गुड १०० पल ले। दूध दो प्रस्थ लें, घी एक कुडव लें॥ ३॥

पञ्चजीरकपाकोऽयं प्रसूतानां प्रशस्यते।
युज्यते सूतिकारोगे योनिरोगे ज्वरे क्षये।
कासे श्वासे पाण्डुरोगे कार्श्ये वातामयेषु च॥ ४॥

इन सबका विधिपूर्वक पाक बना लें। यह पंचजीरकपाक सूतिकाओं के लिये परमोत्तम है। सूतिकारोग, योनिरोग, ज्वर तथा क्षय में उपयोग किया जाता है। कास, श्वास, पाण्डुरोग, कृशता तथा वातरोगों में लाभदायक है॥ ४॥ इति पंचजीरकपाकः।

सौभाग्यशुण्ठी—

आज्यस्याञ्जलियुग्ममत्र पयसः प्रस्थद्वयं खण्डतः
पञ्चाशत्पलमत्र चूर्णितमथ प्रक्षिप्यते नागरम्।
प्रस्थार्धं गुडवद्विपाच्य विधिना मुष्टित्रयं धान्यका-
न्मिस्याः पञ्चपलं पलं कृमिरिपोः साजाजिजीरादपि॥१॥

गौ का घी दो कुडव लें, दूध दो प्रस्थ, खांड ५० पल। सोंठ आधा प्रस्थ ले सबका विधिपूर्वक गुडपाक के समान पाक करें। फिर धनियां ३ पल, सौंफ ५ पल, विडंग १ पल, श्वेत जीरा, कालाजीरा प्रत्येक एक २ पल लें॥ १॥

व्योषाम्भोददलोरगेन्द्रसुमनःसद्राविडीनां पलं
पक्वं नागरखण्डसंज्ञकमिदं सौभाग्यदं योषिताम्।
तृट्च्छर्दिज्वरदाहशोषशमनं सश्वासकासापहं
प्लीहव्याधिविनाशनं कृमिहरं मन्दाग्निसंदीपनम्॥ २॥

सोंठ, मिरच, पीपल, नागरमोथा, तेजपात, इन्द्रजौ, जावित्री, छोटी इलायची प्रत्येक एक २ पल लें। इन सबको विधिपूर्वक चूर्ण करके मिला दें। यह सौभाग्य शुण्ठिपाक स्त्रियों के लिये सौभाग्य देता है। प्यास, वमन, ज्वर, दाह, शोथ इनकी शान्ति करता है। श्वास तथा कास को शान्त करता है। प्लीहारोग का नाश करता है, कृमिरोग को नाश करता है तथा मन्दाग्नि को दीप्त करता है॥ २॥ इति सौभाग्यशुण्ठी॥

अन्यच—नागरं कणशः कृत्वा प्रस्थमात्रं भिषग्वरः।
अजादुग्धाढकद्वंद्वे विपचेन्मन्दवह्निना॥ १॥

सोंठ को टुकड़े २ करके एक प्रस्थ ले। इसे दो आढ़क बकरी के दूध में डाल कर मन्द २ अग्नि पर पकावे॥ १॥

घनीभूते तु पयसि तस्माच्छुण्ठीं समुद्धरेत्।

अतिसूक्ष्मं विनिष्पिष्य शोषयेदातपे खरे ॥ २ ॥

जब दूध कुछ गाढ़ा हो जाये तो उस में से सोंठ के टुकड़ों को निकाल ले। फिर इस सोंठ को अत्यन्त सूक्ष्म पीसकर तीव्र धूप में सुखा लेवे ॥ २ ॥

घृतमानीं समावाप्य तद्दुग्धं तु पुनः पचेत्।
यावत्पिण्डत्वमायाति ततस्तत्र विनिक्षिपेत् ॥ ३ ॥

घी एक शराव डालकर उस दूध को फिर पकाकर खोया बना ले (और सोंठ भी उसी में मिला देवे) ॥ ३ ॥

चातुर्जातं तुगा वेल्लं धान्यकं जीरकद्वयम्।
मिशिमाकल्लकं शुण्ठीं लवङ्गं च शतावरीम् ॥ ४ ॥

फिर दारचीनी, इलायची, तेजपात, नागकेसर, बंशलोचन, वायविडंग, धनियां, श्वेतजीरा, कालाजीरा, सौंफ, अकरकरा, सोंठ, लौंग, शतावर ॥ ४ ॥

तालमूली त्रिकटुकं कपिकच्छूं च षट्कटु।
जातीफलं जातिपत्रीं शृङ्गाटं वृद्धदारुकम् ॥ ५ ॥

मूसली, सोंठ, मिरच, पीपल, कौंच, सोंठ, मिरच, पीपल, पिप्पलामूल, चव्य चीता, जायफल, जावित्री, सिंघाड़ा, विधारा ॥ ५ ॥

त्रिवृतां पद्मबीजं च त्रिफलां च बलात्रयम्।
जलं सेव्यं वाजिगन्धाचन्दनागुरुकारवीः ॥ ६ ॥
कङ्कोलमजगन्धां च द्राक्षामक्षोटवारिजे।
अजमोदं च बादामं नारीकेलगतं तथा ॥ ७ ॥

त्रिवी, कमल के बीज, हरड़, बहेड़ा, आंवला, बला, अतिबला, नागबला, बाला, खस, असगन्ध, चन्दन, अगर, काला मोटा जीरा, कंकोल, अजमोद, दाख अखरोट, कमल, अजमोद, बदाम, नारियल ॥ ७ ॥

कर्पूरमभ्रकं लोहं वङ्गं ताम्रं शिलाजतु।
स्वर्णमाक्षिकमप्येतत्प्रत्येकं कर्षमात्रकम् ॥ ८ ॥

कपूर, अभ्रकभस्म, लोहाभस्म, बंगभस्म, ताम्बाभस्म, शिलाजीत, स्वर्णमाक्षिक भस्म इन में से एक २ द्रव्य एक २ कर्ष लेकर चूर्ण करके ॥ ८ ॥

चूर्णीकृत्य क्षिपेत्तत्र पाणिभ्यां मर्दयेद्दृढम्।
ततः खण्डतुलां पक्त्वा तथा तच्च क्रियां चरेत् ॥ ९ ॥

उसी पाक में मिला देवे और हाथों से खूब दृढ़ता से मिला देवे। तब खांड एक सौ पल लेकर उसकी चाशनी बनाकर उसमें डाल देवे ॥ ९ ॥

खण्डनागरकं नाम्ना भैषज्यमिदमुत्तमम्।
यथाबलमिदं खादेत्प्रातः सायं च भेषजम् ॥ १० ॥

इसे खण्डनागरक नामक औषध कहते हैं। इस औषध को बलानुसार प्रातः तथा

सायं खावे ॥ १० ॥

स्त्रीणामतिहितं नात्र पथ्यापथ्यविचारणा।
क्षये पाण्डौ ज्वरे कासे श्वासे मन्दानले तथा ॥ ११ ॥

यह स्त्रियों के लिये अति हितकारी है। इसमें पथ्यापथ्य की विवेचना नहीं करनी चाहिये। क्षयरोग में, पाण्डुरोग में, ज्वर में, कास में, श्वास में, मन्दाग्नि में ॥ ११ ॥

संग्रहण्यां रक्तगुल्मे प्रदरे सोमरोगके।
दुग्धक्षये मूत्रकृच्छ्रे कामलायां गलग्रहे ॥ १२ ॥

संग्रहणी में, रक्तगुल्म में, प्रदर में, सोमरोग में, दूध की कमी में, मूत्रकृच्छ्र में, कामला में, गलग्रह में ॥ १२ ॥

पित्तरोगेषु सर्वेषु वातपित्तगदेषु च।
सूतिकापवनव्याधौ शस्तमेतन्न संशयः ॥ १३ ॥

सभी पित्त के रोगों में तथा वातपित्त के रोगों में, सूतिका में तथा वातरोग में अथवा सूतिका वायु में यह औषध निस्सन्देह उत्तम है ॥ १३ ॥

अश्विभ्यां पूर्वमुदितः सेव्यो योगोऽयमुत्तमः।
एषा सौभाग्यदा शुण्ठी स्त्रीणां पुत्रप्रदा शुभा ॥ १४ ॥

इसे पहले अश्विनीकुमारों ने बनाया था। इस सौभाग्यशुण्ठी को स्त्रियों को सेवन करावें तो उन को पुत्र प्राप्त होता है ॥ १४ ॥ इति द्वितीय सौभाग्यशुण्ठीपाकः ॥

अथान्यच्च—नागरस्य पलान्यष्टौ घृतस्य पलविंशतिम्।
क्षीराढकेन संयुक्तां खण्डस्यार्धतुलां पचेत् ॥ १ ॥

सोंठ ८ पल, घी २० पल, दूध १ आढक और खांड ५० पल डालकर सब को एकत्र पका लेवे ॥ १ ॥

शताह्वाजीरकव्योषत्रिसुगन्धियवानिकाः।
कारवीमिसिचव्याग्निमुस्तानां च पलं पलम् ॥ २ ॥

सौंफ, जीरा, सोंठ, मिरच, पीपल, दारचीनी, तेजपात, इलायची, अजवायन कालाजीरा, सौंफ, चव्य, चीता, मोथा इन में से प्रत्येक पदार्थ एक २ पल लें ॥ २ ॥

लेहीभूतमिदं सिद्धं घृतभाण्डे निधापयेत्।
तद्यथाग्निबलं खादेत्सूतिका तु विशेषतः ॥ ३ ॥

सब को विधिपूर्वक एकत्र मिला लें और घी से चिकने हुए २ पात्र में रखे। उसे अग्निबलानुसार विशेष कर के सूतिका खावे ॥ ३ ॥

बल्यं वर्ण्यं तथाऽऽयुष्यं वलीपलितनाशनम्।
वयसः स्थापनं हृद्यं मन्दाग्नेर्दीपनं परम् ॥ ४ ॥

यह बलदायक है, वर्णप्रसादक है, आयुष्यवर्धक है, बली तथा पलित को

नाश करता है। आयुस्थापक है, हृदय के लिये हितकारक है, मन्दाग्नि को परम दीपन करता है ॥ ४ ॥

आमवातप्रशमनं सौभाग्यकरमुत्तमम् ।
मक्कल्लशूलशमनं सूतिकारोगनाशनम् ॥ ५ ॥

आमवात को प्रशान्त करता है, उत्तम सौभाग्यदायक है। मक्कलशूल को नाश करता है तथा सूतिकारोग को नाश करता है ॥५॥ इति तृतीयसौभाग्यशुण्ठी॥

अथ प्रतापलङ्केश्वरो रसः—

एकेन्दुचन्द्रानलवार्धिदन्तीकलैकभागं क्रमशो विमिश्रम् ।
सूताभ्रगन्धोषणलोहशङ्खवन्योत्पलाभस्मविषं च पिष्टम् ॥ १ ॥

शुद्धपारा १ भाग, अभ्रकभस्म १ भाग, शुद्धगंधक १ भाग, काली मिरच का चूर्ण ३ भाग, लोहभस्म ४ भाग, शंखभस्म ८ भाग, जंगली उपलों की भस्म १६ भाग, विषशोधित १ भाग। सबको विधिपूर्वक मिलाकर पीसकर रखे ॥१॥

प्रसूतिवातेऽनिलदन्तबन्धे सार्द्राम्भसा वल्लममुष्य लिह्यात् ।
वातामये श्लेष्मगदेऽर्शसि स्यात्पुरामृतार्द्रात्रिफलायुतोऽयम् ॥२॥

प्रसूतिवात में जब वायु से दांत बंद होजावें तब इसे अदरक के रस से डेढ रत्ति से तीन रत्ति तक मात्रा अवस्था तथा बलानुसार चटावें तो लाभ होता है। वातरोग में, कफरोग में, अर्शरोग में इस रस को गूगल, गिलोय, अदरक तथा त्रिफला के चूर्ण वा क्वाथ के साथ खाना चाहिये। २॥

सशृङ्गबेरद्रव एष हन्ति ससंनिपातं ज्वरमुग्ररूपम् ।
निजानुपानैर्निजपथ्ययुक्तः सर्वातिसारान् ग्रहणीविकारान् ॥३॥

इसे केवल अदरक के स्वरस से खावें तो उग्र सन्निपात के ज्वर को भी नष्ट करता है ॥ ग्रहणी तथा अतीसार के अनुपानों तथा पथ्यों के साथ इसें सेवन किया जाये तो सभी अतिसारों तथा ग्रहणी के रोगों को नष्ट करता है ॥३॥

प्रतापलङ्केश्वरनामधेयः सूतः प्रोक्तो गिरिराजपुत्र्या ॥ ४ ॥

वह प्रताप लंकेश्वर नामक रस पार्वती जी नें स्वयं प्रयोग किया था ॥४॥ इति प्रतापलङ्केश्वरः।

अथ प्रसूताया नियमसमयावधिमाह—

सर्वतः परिशुद्धा स्यात्स्निग्धपथ्याऽल्पभोजना ।
स्वेदाभ्यङ्गपरा नित्यं भवेन्मासमतन्द्रिता ॥ १ ॥

सब प्रकार से प्रसूता को शुद्ध रखना चाहिये, अर्थात् मैले स्थान, मैले कपड़े तथा मैला शरीर नहीं होने देना चाहिये प्रत्युत शुद्ध पवित्र घर, शुद्ध स्वच्छ कपड़े, तथा शरीर भी शुद्ध रखना चाहिये। स्निग्ध अर्थात् घी आदि से चिकना किया हुआ पथ्य देना चाहिये और वह पथ्य भोजन भी थोड़ा ही करने देवें। प्रसूता नित्य पसीना लेवे अर्थात् ईंट गरम करके योनि आदि को सेकें तथा नित्य तैल

आदि की मालिश करे। एक मास तक बिना आलस के पूर्वलिखित सब कर्म करती रहे॥ १॥

प्रसूता सार्धमासान्ते दृष्टे वा पुनरार्तवे।
सूतिकानामहीना स्यादिति धन्वन्तरेर्मतम्॥ २॥

प्रसूता स्त्री डेढ मास के पश्चात् अथवा फिर ऋतुधर्म होने के पश्चात् प्रसूता नाम से छूट जाती है, ऐसा धन्वन्तरी का मत है॥ २॥

उपद्रवैर्विशुद्धां च विज्ञाय वरवर्णिनीम्।
ऊर्ध्वं चतुर्भ्यो मासेभ्यः परिहारं विसर्जयेत्॥ ३॥

जब सब उपद्रवों से रहित होकर वह सुन्दरी सर्वथा शक्ति सम्पन्न होजाये तब चार महीनों के बाद सब परिहार अर्थात् परहेजों को छोड़कर जो इच्छा हो खावे पीवे तथा विहार करे॥३॥ इति भावप्रकाशात्॥ इति सूतिकारोगचिकित्सा

इति हरद्वारीयगुरुकुलविश्वविद्यालयस्नातकेन श्रीविद्याधरविद्यालंकारेणलवपुरीय श्रीमद्दयानन्दायुर्वेद महाविद्यालयीय वैद्यकविराजोपाधिधारिणायुर्वेदशास्त्रिणा राजयक्ष्मचिकित्सकेन जलचिकित्साविशेषज्ञेन रसेन्द्रसारसंग्रहटीकाकर्त्रा कृतायां योगरत्नाकरस्य रत्नगर्भानाम्निटीकायां सूतिकारोगचिकित्सा समाप्ता॥

अथ स्तनरोगस्य निदानपूर्विकां चिकित्सामाह।

सक्षीरौ वाप्यदुग्धौ वा दोषः प्राप्य स्तनौ स्त्रियाः।
रक्तं मांसं च संदूष्य स्तनरोगाय कल्पते॥ १॥

स्त्री के दूध वाले स्तनों में अथवा बिना दूध वाले स्तनों में वातादिदोष प्राप्त होकर रक्त तथा मांस को दूषित करके स्तनरोग कर देते हैं॥ १॥

स्तनरोगाणामतिदेशेन लक्षणान्याह—

पञ्चानामपि तेषां हि रक्तजं विद्रधिं विना।
लक्षणानि समानानि बाह्यविद्रधिलक्षणैः॥ २॥

वात, पित्त, कफ, सन्निपात तथा आगन्तुक अर्थात् अभिघात तथा शल्य आदि के प्रहार से हुआ २, इस प्रकार से ये पांच स्तनरोग बाह्यविद्रधि के लक्षणों से मिलते हैं। केवल रक्तज विद्रधि के लक्षणों से कोई स्तन विद्रधि नहीं मिलता क्योंकि रक्तजस्तनविद्रधि असम्भव है, व्याधि के स्वभाव के कारण यह हो ही नहीं सकता॥ २॥ इति स्तनरोगनिदानम्।

अथ स्तनरोगचिकित्सा—**शोथं स्तनोत्थितमवेक्ष्य भिषग्विदध्या-**
द्यद्विद्रधावभिहितं बहुधा विधानम्।
आमे विदह्यति तथैव गते च पाकं यस्याः
यस्याः स्तनौ सततमेव च निर्गृहीतौ (निर्दुहीत)॥ १॥

वैद्य स्तन में हुए २ शोथ को देखकर विद्रधि में कहे हुए अनेक प्रकार के

उपायों को करे। आम अवस्था में, विदह्यमान अवस्था में तथा पकने के बाद जिस स्त्री के स्तनों को लगातार ऐसा पकता हुआ देखे। (चक्रदत्त में, " तस्याः स्तनौसततमेव च निर्दुहीत " ऐसा पाठ है, अर्थात् air pump आदि द्वारा स्तन को दोह लेवे) ॥ १ ॥

पित्तघ्नानि सुशीतानि द्रव्याण्यत्र प्रयोजयेत्।
जलौकाभिर्हरेद्रक्तं तत्स्तनावुपनाहयेत् ॥ २ ॥

ऐसे समय पित्तनाशक सुशीतल द्रव्य स्तन पर लेपादि में प्रयुक्त करे। जौंकें लगाकर रक्त निकलवा देवे। और उसके स्तनों का उपनाहन अर्थात् पुल्टिश आदि से सेक करे ॥ २ ॥

लेपो विशालामूलेन हन्ति पीडां स्तनोत्थिताम्।
निशाकनककल्काभ्यां लेपः प्रोक्तः स्तनार्तिहा ॥ ३ ॥

इन्द्रायण की जड़ का लेप स्तन पर करे तो स्तनों की पीड़ा दूर होती है। हल्दी तथा धतूरे के पत्तों का कल्क करके लेप करें तो स्तन की पीड़ा नष्ट होती है३

लेपान्निहन्ति मूलं स्तनरोगं वन्ध्यकर्कोट्याः।
निर्वाप्य तप्तलोहं सलिले तद्वा पिबेत्तत्र ॥ ४ ॥

बांझ ककोड़े की जड़ पीसकर स्तनों पर लेप करें तो स्तन रोगों को नष्ट करती है। तथा तपाये हुए लोहे को पानी में बुझाकर उस स्त्री को पिलावे इससे भी स्तन रोगों की शान्ति होती है ॥ ४ ॥ इति स्तनरोग चिकित्सा।

इति हरद्वारीय गुरुकुलविश्वविद्यालयस्नातकेन श्रीविद्याधरविद्यालंकारेणायुर्वेद-शास्त्रिणा लवपुरीय श्रीमद्दयानन्दायुर्वेदमहाविद्यालयीय वैद्यकविराजोपाधिधारिणा राजयक्ष्मचिकित्सकेन जलचिकित्साविशेषज्ञेन रसेन्द्रसारसंग्रहटीकाकर्त्रा कृतायां योगरत्नाकरस्य रत्नगर्भानाम्निटीकायां स्तनरोगस्यचिकित्सा समाप्ता।

अथ क्षीरदोषचिकित्सा।

उक्तं सुश्रुते—रक्तप्रसादो मधुरः पक्वाहारनिमित्तजः।
कृत्स्नदेहात्स्तनौ प्राप्तः स्तन्यमित्यभिधीयते ॥ १ ॥

पके हुए भोजन से उत्पन्न हुए २ रस का प्रसाद भाग जो मीठा होता है, और सारे शरीर से स्तनों में आ जाता है उसे स्तन्य या दूध कहते हैं ॥ १ ॥

माधवेनाप्युक्तम्—गुरुभिर्विविधैरन्नैर्दुष्टैर्दोषैः प्रदूषितम्।
क्षीरं धात्र्याः कुमारस्य नानारोगाय कल्पते ॥ २ ॥

गुरु अर्थात् भारी विविध प्रकार के अन्नों के सेवन करने से, तथा दूषित हुए २ दोषों से प्रदूषित हुआ २ दूध पिलाने वाली माता व धाय का दूध बच्चे के लिये नाना रोगों का कारण बन जाता है ॥ २ ॥

अथ वातदुष्टक्षीरलक्षणम्—कषायं सलिलप्लावि स्तन्यं मारुतदूषितम्।

कसैले स्वाद का, पानी में तैरने वाला दूध वात से दूषित होता है ।

अथ पित्तदुष्टक्षीरलक्षणम्—**कट्वम्ललवणं पीतराजिमत्पित्तसंज्ञितम् ॥ ३॥**

जो कटु रस युक्त हो, खट्टे स्वाद का हो, लवण रस युक्त हो तथा पीली लकीरों वाला हो उसे पित्त दुष्ट दुग्ध कहते हैं ॥ ३ ॥

अथ कफदुष्टक्षीरलक्षणम्—**कफदुष्टं घनं तोये निमज्जति सुपिच्छिलम् ।**

कफ से दूषित हुआ २ दूध घना अर्थात् गाढ़ा होता है, पिच्छिल होता है तथा जल में डालें तो डूब जाता है ॥

अथ द्वन्द्वजसन्निपातजमाह—**द्विलिङ्गं द्वंद्वजं विद्यात्सर्वलिङ्गं त्रिदोषजम् ॥ ४॥**

जिस में दो २ दोषों के लक्षण मिलते हों उसे द्वन्द्वज और जिसमें तीनों दोषों के लक्षण मिलते हों उसे त्रिदोषज कहते हैं ॥ ४ ॥

अथाविकृतस्तन्यमाह—**अदुष्टं चाम्बुनिक्षिप्तमेकीभवति पाण्डुरम् ।**

मधुरं चाविवर्णं च तत्प्रसन्नं विनिर्दिशेत् ॥ १ ॥

जो दूध दूषित नहीं होता, उसे जल में डालें तो जल के साथ मिलकर एक हो जाता है और वह श्वेत रंग का होता है, स्वाद में मीठा होता है तथा किसी अन्य रंग का नहीं होता है अर्थात् नीला पीलादि रंग उसमें नहीं होता है, उसे प्रसन्न अर्थात् शुद्ध दूध समझना चाहिये ॥ १ ॥ इति क्षीरदोषानिदानम् ।

अथ तच्चिकित्सा । वातजस्तन्यचिकित्सा—

तत्र वातात्मके स्तन्ये दशमूलीं त्र्यहं पिबेत् ।

वातव्याधिहरं सर्पिः पीत्वा मृदु विरेचयेत् ॥ १ ॥

वात से दुष्ट हुए २ दूध में तीन दिन तक दशमूल का क्वाथ पिलावें । तथा वातव्याधिनाशक घी पिलाकर हलका विरेचन दे देवें ॥ १ ॥

पित्तजस्तन्यचिकित्सा—**पित्तदुष्टेऽमृताभीरुपटोलं निम्बचन्दनम् ।**

धात्री कुमारश्च पिबेत्क्वाथयित्वा सशर्करम् ॥ २॥

पित्त से दुष्ट हुए २ दूध में गिलोय, शतावर, पटोलपत्र, नीम की छाल, लालचन्दन इन सबका क्वाथ खांड मिलाकर दूध पिलाने वाली स्त्री को पिलावें तथा बच्चे को भी पिलावें ॥ २ ॥

कफजस्तन्यचिकित्सा—**कफदुष्टे घृतं पेयं यष्टीसैन्धवसंयुतम् ।**

राठपुष्पैः स्तनौ लिम्पेच्छिशोश्च दशनच्छदौ ॥ ३॥

सुखमेवं वमेद्बालः कफकोपश्च शाम्यति ।

कफ से दूषित हुए २ दूध में मुलट्ठी तथा सेंधानमक से मिलाकर घी पिलावें मदन के फूलों के कल्क से स्तनों को लीप दें और बच्चे के होठों को भी लीप दें ॥ ३ ॥ इस प्रकार करने से बच्चा सुख से वमन कर देता है तथा कफ का कोप शान्त हो जाता है ।

द्वंद्वजत्रिदोषजस्तन्यचिकित्सा—**द्वंद्वदुष्टं द्वियोगाभ्यां पूर्वोक्ताभ्यां विशोधयेत् ॥ ४**

द्वन्द्व दुष्ट क्षीर में पूर्वोक्त दो २ दोषों के नष्ट करने वाले क्वाथों को मिलाकर क्वाथ करके पिलावें। अर्थात् पित्तवात से दूषित दूध में पित्त तथा वात के क्वाथों के द्रव्यों को एकत्र कर क्वाथ करके पिलावें। पित्त कफ से दूषित दूध हो तो पित्त तथा कफमें कहे द्रव्यों को एकत्र क्वाथ कर पिलायें, वात कफ से दूषित दूध में वात तथा कफ में कहे हुए द्रव्यों के क्वाथ को पिलावें। इस प्रकार द्वन्द्वज दुष्ट दूध शुद्ध होता है ॥४॥

स्तन्ये त्रिदोषसंदुष्टे शकृदामं जलोपमम्।
नानावर्णरुजं चार्धविबद्धमुपवेश्यते ॥ ५ ॥

त्रिदोषों से दुष्ट हुए दूध में बच्चे का मल आंव युक्त होता है तथा जल के समान पतला होता है, नाना प्रकार के रंग वाला होता है तथा नाना पीड़ाओं वाला होता है तथा आधा बंधा हुआ होता है और आधा पतला होता है ॥ ५ ॥

पाठा मूर्वा च भूनिम्बदारुशुण्ठीकलिङ्गकाः।
सारिवाघनतिक्ताख्यं तच्च स्तन्यविशोधनम् ॥ ६ ॥

पाठा, मूर्वामूल, चिरायता, दारुहल्दी, सोंठ, इन्द्रजौ, शारिबा, नागरमोथा, कुटकी। इन सबका क्वाथ करके पिलावें तो त्रिदोषजनि दूषित दूध भी विशुद्ध हो जाता है ॥ ६ ॥इति क्षीरदोषविशुद्धिचिकित्सा।

अथ स्तन्यजननविधिः—भूमिकूष्माण्डमूलस्य क्षीरपिष्टस्य या रसम्।
पिबेत्सशर्करं तस्याः क्षीरं बहु विवर्धते ॥ १ ॥

विदारीकन्द को दूध में पीसकर रस निकाल कर खांड डालकर जो स्त्री पीवे उसका दूध बहुत बढ़ता है ॥ १ ॥

शतावरी क्षीरपिष्टा पीता स्तन्यविवर्धनी।
कवोष्णं कणया पीतं क्षीरं क्षीरविवर्धनम् ॥ २॥

शतावर को दूध से पीसकर पीवें तो स्त्री का दूध बढ़ता है। पिप्पली के साथ कोसा २ दूध पिया जाये तो स्त्री के दूध को बढ़ाता है ॥ २ ॥

वनकार्पासकेक्षूणां मूलं सौवीरकेण वा।
विदारिकन्दं सुरया पिबेद्वा स्तन्यवर्धनम् ॥ ३ ॥

बन कपास की जड़ और गन्ने की जड़ को सौवीर कांजी से पिलावें। अथवा विदारीकन्द के चूर्ण को सुरा से पीवें तो दूध बढ़ता है ॥ ३ ॥

अथ वज्रकाञ्जिकम्—पिप्पली पिप्पलीमूलं चव्यं शुण्ठी यवानिका।
जीरके द्वे हरिद्रे द्वे विडं सौवर्चलं तथा ॥ १ ॥

पिप्पली, पिप्पलामूल, चव्य, सोंठ, अजवायन, श्वेतजीरा, कालाजीरा, हल्दी, दारुहल्दी, विड्लवण, सौंचललवण ॥ २ ॥

एतैरेवौषधैः पिष्टैरारनालं विपाचयेत्।
तद्यथाग्निबलं पीत्वा प्रसूता सुखमश्नुते ॥ २ ॥

इन सब औषधियों को समभाग लेकर कांजी में डालकर पका लेवे। (कांजी पाक की विधि भी क्षीरपाक के समान है। कांजी ८ पल ले, जल ३२ पल ले, पिप्पली आदि पदार्थ प्रत्येक ४ माषा लें। सबको पकाकर कांजी मात्र शेष रखें) इस कांजी को अग्नि बलानुसार पीकर प्रसूता को सुख प्राप्त होता है ॥ २ ॥

आमवातहरं वृष्यं कफघ्नं वातनाशनम्।
तद्वज्रकाञ्जिकं नाम्ना स्त्रीणामग्निविवर्धनम् ॥
मक्कल्लशूलशमनं परं क्षीरविवर्धनम् ॥ ३ ॥

यह कांजी आमवात नाश करती है, वृष्य है, कफनाशक है तथा वातनाशक है। यह वज्रकाञ्जिक स्त्रियों की अग्नि को बढ़ाता है। मक्कल शूल को शान्त करता है तथा दूध को बढ़ाता है ॥३॥ इति वज्रकाञ्जिकम्। इति स्तन्यजननविधिः ॥

अथ पथ्यापथ्यम्—यत्पथ्यं यदपथ्यं च रक्तपित्तेषु कीर्तितम्।
प्रदरेऽपि यथादोषं तत्तु नारी रुजि त्यजेत् ॥ १ ॥

जो पथ्य और जो अपथ्य रक्तपित्तरोग में कहा है वही प्रदररोग में भी स्त्री को दोषानुसार करना चाहिये ॥ १ ॥

वातव्याधिमतां पथ्यापथ्यं च यदुदीरितम्।
योनिव्यापत्सु सर्वासु तद्विद्यात्तु यथामलम् ॥ २ ॥

वातरोगों में जैसा पथ्यापथ्य कहा है सभी योनिरोगों में दोषानुसार वैसा ही पथ्यापथ्य करना चाहिये ॥ २ ॥

शालयः षष्टिका मुद्गा गोधूमा लाजसक्तवः।
नवनीतं घृतं क्षीरं रसाला मधु शर्करा।
पनसं कदलं धात्री द्राक्षाम्लं स्वादु शीतलम् ॥ ३ ॥

शाली धान्य, साठी के चावल, मूंग, गेहूं, धान की खीलों के सत्तु, मक्खन, घी, दूध, रसाला, शहद की खांड, अथवा शहद और खांड। कटहल, केला, आंवला, दाख, खट्टा, मीठा, शीतल पदार्थ ॥ ३ ॥

कस्तूरी चन्दनं माला कर्पूरमनुलेपनम्।
चन्द्रिका स्नानमभ्यङ्गो मृदुशय्या हिमानिलः ॥ ४ ॥

कस्तूरी, चन्दन, माला धारण, कपूर का शरीर पर लेप करना। चांदनीरात में टहलना स्नान, तेल की मालिश, कोमल शय्या, शीतल वायु ॥ ४ ॥

संतर्पणं प्रियाश्लेषो विहाराश्च मनोरमाः।
प्रियंकरं चान्नपानं गर्भिणीनां हितं सदा ॥ ५ ॥

संतर्पण, प्रिय अर्थात् पति से आलिंगन मात्र करना, मनोरम विहार अर्थात् मन चाहे विनोद तथा भ्रमणादि करना। प्रिय अन्न तथा पान सेवन करना ये सभी बातें गर्भिणी स्त्रियों के लिये हित हैं ॥ ५ ॥ इति पथ्यम् ॥

स्वेदनं वमनं क्षारं कदन्नं विषमाशनम्।
अपथ्यमिदमुद्दिष्टं गुर्विणीनां महर्षिभिः॥ १॥

परन्तु स्वेद लेना, वमन लेना, क्षार पदार्थ खाने, दूषित अन्न खाना, विषम भोजन करना। ये सभी बातें महर्षियों ने गर्भवती स्त्रियों के लिये अपथ्य मानी हैं॥ १

सूतिकाख्येषु रोगेषु वातश्लेष्मोद्भवेषु च।
तत्र रोगानुकल्पेन पथ्यापथ्यानि निर्दिशेत्॥ २॥

सूतिकारोगों में, वात कफ से हुए २ रोगों में, उन २ रोगों के अनुसार कहे हुए उचित पथ्यापथ्य करें॥ २॥ इति पथ्यापथ्यम्। इति स्त्रीरोगाधिकारः॥

इति हरद्वारीयगुरुकुलविश्वविद्यालयस्नातकेन श्रीविद्याधरविद्यालंकारेणलवपुरीय श्रीमद्दयानन्दायुर्वेदमहाविद्यालयीय वैद्यकविराजोपाधिधारिणायुर्वेदशास्त्रिणा राजयक्ष्मचिकित्सकेन जलचिकित्साविशेषज्ञेन रसेन्द्रसारसंग्रहटीकाकर्त्रा कृतायां योगरत्नाकरस्य रत्नगर्भानाम्निटीकायां क्षीरदोषहरणं क्षीरजननप्रकरणञ्च समाप्तम्। समाप्तश्च स्त्रीरोगाधिकारः॥

अथ बालरोगाधिकारः।

तत्र बालरोगाणां निदानानि लक्षणानि चाऽऽह—

धात्र्यास्तु गुरुभिर्भोज्यैर्विषमैर्दोषलैस्तथा।
दोषा देहे प्रकुप्यन्ति ततः स्तन्यं प्रदुष्यति॥ १॥

दूध पिलाने वाली माता या धाई के गुरु भोजन करने से, विषम भोजन करने से तथा दोष वाले भोजन करने से देह में दोष प्रकुपित हो जाते हैं। उससे दूध प्रकुपित हो जाता है॥ १॥

मिथ्याहारविहारिण्या दुष्टा वातादयस्त्रयः।
दूषयन्ति पयस्तेन जायन्ते व्याधयः शिशोः॥ २॥

मिथ्या आहार तथा मिथ्या विहार से धाय के वातादि तीनों दोष दूषित होते हैं। उससे दूध दूषित हो जाता है उससे बालक को रोग उत्पन्न होते हैं॥ २॥

अथ वात दुष्ट दुग्धपायिनः शिशोर्लक्षणान्याह—

वातदुष्टं शिशुः स्तन्यं पिबन्वातगदातुरः।
क्षामस्वरः कृशाङ्गः स्याद्बद्धविण्मूत्रमारुतः॥ ३॥

वात से दूषित हुए २ दूध को शिशु पीता है तो वातरोग से पीडित होजाता है, स्वर क्षीण होजाता है, अंग कृश होजाते हैं। मल मूत्र तथा वायु बंधकर आते हैं अथवा रुककर आते हैं॥ ३॥

पित्तदुष्टस्तन्यपायिनः शिशोर्लक्षणानि—

स्विन्नो भिन्नमलो बालः कामलापित्तरोगवान्।
तृष्णालुरुष्णसर्वाङ्गः पित्तदुष्टं पयः पिबन्॥ ४॥

पित्त से दूषित हुए २ दूध को पीनेवाला बच्चा स्वेदयुक्त अर्थात् पसीनेसे युक्त रहता है, मल

टूटा हुआ निकलता है, कामला तथा पित्तरोग से युक्त रहता है, तृष्णायुक्त होता है, सारे अंग गरम होते हैं ॥ ४ ॥

कफदुष्टस्तन्यपायिनशिशोर्लक्षणानि—

कफदुष्टं पिबन्क्षीरं लालालुः श्लेष्मरोगवान्।
निद्रार्दितो जडः शूनवक्त्राक्षश्छर्दनः शिशुः ॥ ५ ॥

कफ से दूषित हुए २ दूध को पीनेवाले बच्चे के लारें टपकती रहती हैं, कफ के रोगों से घिरा रहता है। निद्रा से युक्त रहता है, जडवत् निश्चेष्ट रहता है, मुंह तथा आंखें सूजी होती हैं तथा वमन भी आती रहती है ॥ ५ ॥

अथ शिशोर्वक्तुमक्षमस्यान्तर्गतवेदनाज्ञानोपायमाह—

शिशोस्तीव्रामतीव्रां च रोदनाल्लक्षयेद्रुजम् ॥ १ ॥

शिशु की पीड़ा रोने से ही पता लग जाती है कि पीड़ा तीव्र है या अतीव्र है। तीव्र पीड़ा होती है तो बच्चा भी तीव्रता से रोता है। पीड़ा कम होती है तो बच्चा भी कम जोर से रोता है ॥ १ ॥

अथ कुकूणकमाह—**कुकूणकः क्षीरदोषाच्छिशूनामेव वर्त्मनि।**
जायते तेन तन्नेत्रं कण्डूरं च स्रवेन्मुहुः ॥ १ ॥

कुकूणकरोग दूषित दूध के पीने से ही शिशु को होता है। यह रोग नेत्र के वर्त्म अर्थात् पलकों में होता है, उस से वह नेत्र खुजली युक्त होजाता है तथा बार २ बहता है ॥ १ ॥

शिशुः कुर्याल्ललाटाक्षिकण्ठनासावघर्षणम्।
शक्तो नार्कप्रभां द्रष्टुं न वर्त्मोन्मीलनक्षमः ॥ २ ॥

तथा बच्चा मस्तक, आंखें, कण्ठ तथा नाक को घिसता है, सूर्य की प्रभा देखने में समर्थ नहीं होता, न ही वर्त्म अर्थात् पलकों को खोलने में समर्थ होता है॥

अथ पारिगर्भिकमाह—**मातुः कुमारो गर्भिण्याः स्तन्यं प्रायः पिबन्नपि।**
श्वासाग्निसादवमथुतन्द्राकासारुचिभ्रमैः ॥ २ ॥

बच्चा गर्भवती माता के दूध को पीता हुआ, अथवा दूध न पीता हुआ भी श्वास, अग्निसाद अर्थात् अग्निमांद्य, वमन, तन्द्रा, कास, अरुचि तथा भ्रमरोगों से युक्त होजाता है ॥ १ ॥

युज्यते कोष्ठवृद्ध्या च तमाहु पारिगर्भिकम्।
रोगं परिभवाख्यं च तत्र युञ्जीत दीपनम् ॥ २ ॥

तथा कोष्ठवृद्धि से युक्त होजाता है अर्थात् पेट बढ़ जाता है, इस रोग को पारिगर्भिकरोग अथवा परिभवरोग कहते हैं। इसमें अग्निदीपन करनेवाले औषध देवें॥

अथ तालुकण्टकमाह—**तालुमांसे कफः क्रुद्धः कुरुते तालुकण्टकम्।**
तेन तालुप्रदेशस्य निम्नता मूर्ध्नि जायते ॥ १ ॥

तालु के मांस में क्रुद्ध हुआ २ कफ तालुकण्टकरोग को कर देता है, इस से बच्चे के सिर में तालुप्रदेश नीचा गढे के समान झुक जाता है ॥ १ ॥

तालुपातः स्तनद्वेषः कृच्छ्रात्पानं शकृद्द्रवम्।
तृडक्षिकण्ठास्यरुजो ग्रीवादुर्धरता वमिः ॥ २ ॥

तालुपातरोग में अर्थात् तालु के ढीले होजाने में बच्चा स्तन को मुंह नहीं लगाता, कठिनता से दूध पीता है, मल पतला आता है, प्यास लगती है, आंख, गल और मुंह के रोग होजाते हैं, तथा गर्दन को दुःख से धारण करता है, अर्थात् गरदन टिकती नहीं। दूध की वमन होती है ॥ २ ॥

अथ महापद्ममाह—**विसर्पस्तु शिशोः प्राणनाशनो बस्तिशीर्षजः।**
पद्मवर्णो महापद्मरोगो दोषत्रयोद्भवः ॥ १ ॥

बच्चे की बस्ति में तथा सिर में उत्पन्न हुआ २ विसर्परोग प्राणनाशक होता है। यह त्रिदोषज होता है तथा इस का रंग लाल कमल के समान होता है इसे महापद्मरोग कहते हैं ॥ १ ॥

शङ्खाभ्यां हृदयं याति हृदयाच्च गुदं व्रजेत्।
क्षुद्ररोगे च कथिते अजगल्ल्यहिपूतने ॥ २ ॥

सिर में होने वाला महापद्मरोग शंखदेश में प्रायः होता है। शंख देशों से यह हृदय को जाता है, और बस्ति से हुआ २ महापद्मरोग पहले हृदय को जाता है। (इस अवस्था में शंख मुंह तथा गुदा और बस्ति का रंग लाल होता है)। तथा क्षुद्ररोगों में अजगल्ली तथा अहिपूतना कहे हैं वे रोग बच्चों को भी हो जाते हैं वे ही लक्षण इनके भी होते हैं ॥ ५ ॥

अथान्येऽपि विकारा बालानां भवन्ति तानतिदेशनाऽऽह—

ज्वराद्या व्याधयः सर्वे महतां ये पुरेरिताः।
बालदेहेऽपि ते तद्वज्ज्ञेयाः स्युः कुशलैरिह ॥ १ ॥

जो ज्वरादिरोग बड़े बूढ़ों को होते हैं वे भी सब बच्चों को होते ही हैं ॥१॥

अथ दन्तोद्भेदकान्रोगानाह-**दन्तोद्भेदः शिशोः सर्वरोगाणां कारणं स्मृतः।**
विशेषाज्ज्वरविड्भेदकासच्छर्दिशिरोरुजाम्।
अभिष्यन्दस्य पोथक्या विसर्पस्य च जायते ॥ १ ॥

दांत निकलना बच्चे के लिये सभी रोगों का कारण होता है। विशेष करके इसमें ज्वर होता है मल टूट २ कर आता है, खांसी होती है, वमन होता है तथा शिर पीड़ा होती है। अभिष्यन्द, पोथकी तथा विसर्प भी हो जाता है। ये सभी रोग दांत निकलने के समय होते हैं ॥१॥ इति बालरोगनिदानलक्षणानि ॥

अथ ग्रहग्रस्तबालरोगलक्षणानि-**बालग्रहा अनाचारात्पीडयन्ति शिशुं यतः।**
तस्मात्तदुपसर्गेभ्यो रक्षेद्बालं प्रयत्नतः ॥ १ ॥

क्योंकि अनाचार अर्थात् ठीक आचार के न सेवन करने से बालग्रह शिशु

को पीड़ा देते हैं, इस कारण उनके उपद्रवों से बच्चे की प्रयत्न से रक्षा करनी चाहिये।
अथ बालग्रहाणां नामान्याह—**स्कन्दग्रहस्तु प्रथमः स्कन्दापस्मार एव च।**
शकुनी रेवती चैव पूतना गन्धपूतना ॥ १ ॥

स्कन्दग्रह, स्कन्दापस्मार, शकुनी, रेवती, पूतना, गन्ध पूतना ॥ १ ॥

पूतना शीतपूर्वा च तथैव मुखमण्डिका।
नवमो नैगमेयश्च प्रोक्ता बालग्रहा अमी ॥ २ ॥

शीतपूतना, मुखमण्डिका तथा नैगमेयग्रह ये नौ ग्रह बालग्रह कहाते हैं ॥२॥

अथ सामान्यग्रहजुष्टानां बालानां लक्षणान्याह—

क्षणादुद्विजते बालः क्षणात्त्रस्यति रोदिति।
नखैर्दन्तैर्दारयति धात्रीमात्मानमेव च ॥ १ ॥

क्षणभर में बालक उद्विग्न हो अर्थात् विह्वल हो, क्षण में डरे, क्षण में रोवे, नख तथा दांतों से धाय को तथा अपने को दारण करे अर्थात् काटे ॥ १ ॥

ऊर्ध्वं निरीक्षते दन्तान्खादेत्कूजति जृम्भति।
भ्रुवौ क्षिपति दन्तोष्ठं फेनं वमति चासकृत् ॥ २ ॥

ऊपर की तरफ ही देखता रहे, दांतों को खावे; गले में अस्फुट शब्द कूं कूं करे या नाद करे। जंभाई लेवे, भवें टेढ़ी मेढ़ी करे, दांत और होंठ काटे। तथा बच्चा बार २ झाग गिराता है ॥ २ ॥

क्षामोऽति निशि जागर्ति शूनाङ्गो भिन्नविट्स्वरः।
मांसशोणितगन्धिश्च न चाश्नाति यथा पुरा ॥ ३ ॥

अत्यन्त कृश हो जाता है तथा रात को जागता है, अंग सूज जाते हैं, मल टूटा हुआ निकलता है तथा स्वर भी टूटता हुआ निकलता है। मांस तथा खून की दुर्गन्ध आती है, पहले के समान खाता नहीं है ॥ ३ ॥

दुर्बलो मलिनाङ्गश्च नष्टसंज्ञोऽपि जायते।
सामान्यग्रहजुष्टानां लक्षणं समुदाहृतम् ॥ ४ ॥

बच्चा दुर्बल होता जाता है तथा मैले अंग वाला होता है तथा मूर्च्छित भी हो जाता है। ये सभी लक्षण सामान्य ग्रह जुष्ट बालक के होते हैं ॥ ४ ॥

अथ विशिष्टग्रहजुष्टानां लक्षणान्याह—तत्राऽऽदौ स्कन्दग्रहस्य लक्षणमाह—

एकनेत्रस्य गात्रस्य स्रावः स्यन्दनकम्पनम्।
ऊर्ध्वदृष्ट्या निरीक्षेत वक्रास्यो रक्तगन्धिकः ॥ १ ॥
दन्तान्खादति वित्रस्तः स्तन्यं नैवाभिनन्दति।
स्कन्दग्रहगृहीतानां रोदनं चाल्पमेव च ॥ २ ॥

बच्चे के बांयां वा दायां एक नेत्र बहता रहता है, शरीर में पसीना आता है, शरीर थोड़ा हिलता है अथवा बड़े बेग से हिलता है, ऊपर को देखता रहता है,

टेढा मुंह हो जाता है, खून की गन्ध आती है। दांतों को खाता है, डरा हुआ रहता है, दूध नहीं पीता है। स्कन्दग्रह से युक्त बच्चे रोते भी थोड़ा ही हैं ॥२॥

अथ स्कन्दापस्मारग्रहस्य लक्षणम्—**नष्टसंज्ञो वमेत्फेनं संज्ञावानतिरोदिति।**
पूयशोणितगन्धित्वं स्कन्दापस्मारलक्षणम् ॥१॥

मूर्च्छित होने पर जो बच्चा झाग की वमन करे, जब ज्ञानबान अर्थात् होशमें हो तब बहुत रोवे। पीप तथा रक्त की गन्ध आती हो यह स्कन्धापस्मार के लक्षण हैं ॥१॥

अथ शकुन्या लक्षणमाह—

स्रस्ताङ्गो भयचकितो विहङ्गगन्धिः सास्रावव्रणपरिपीडितः समन्तात्
स्फोटैश्च प्रचिततनुः सदाहपाकैर्विज्ञेयो भवति शिशुः क्षतः शकुन्या १

बच्चे के अंग ढीले से हो जाते हैं अर्थात् अंग लटक जाने की पीड़ा के समान पीड़ा होती है, बच्चा डर से अकारण ही चकित सा हो जाता है। विहंग अर्थात् जलचर तथा मांसाद पक्षियों के समान शरीर में से गन्ध आती है आस्राव अर्थात् पीपादि से युक्त व्रणों से पीड़ित होता है। तथा नये २ फोड़ों से शरीर भरा हुआ होता है। दाह तथा पाक से बालक का शरीर युक्त होता है। इसे शकुनिग्रह से युक्त समझना चाहिये ॥ १ ॥

अथ रेवतीग्रहलक्षणम्—**व्रणैः स्फोटैश्चितं गात्रं पङ्कगन्धं स्रवेदसृक्।**
भिन्नवर्चा ज्वरी दाही रेवतीग्रहलक्षणम् ॥१॥

व्रण तथा फोड़ों से अंग भर जाते हैं। शरीर में से सड़े हुए कीचड़ की सी दुर्गन्ध वाला रक्त निकलता रहता है, मल टूट २ कर निकलता है, ज्वर होता है, दाह होता है। ये सभी लक्षण रेवती ग्रह से युक्त बालक के होते हैं ॥ १ ॥

अथ पूतनालक्षणमाह—**अतीसारो ज्वरस्तृष्णा तिर्यक्प्रेक्षणरोदनम्।**
नष्ट निद्रस्तथोद्विग्नो ग्रस्तः पूतनया शिशुः ॥ १ ॥

अतीसार हो, ज्वर हो, तृष्णा हो, बच्चा टेढ़ा देखता हो और बच्चा रोता हो, सोता न हो, तथा उद्विग्न रहता हो तो समझो पूतनाग्रह से युक्त है ॥१॥

अथ गन्धपूतनालक्षणमाह—

छर्दिः कासो ज्वरस्तृष्णा वसागन्धोऽतिरोदनम्।
स्तन्यद्वेषोऽतिसारश्च गन्धपूतनया भवेत् ॥ १ ॥

बच्चे को खांसी हो, ज्वर हो, तृष्णा हो, वसा अर्थात् चर्बी के समान गंध आती हो, अत्यन्त रोता हो, दूध पीने से द्वेष करता हो, अतिसार आते हों तो समझो गन्धपूतना ग्रह से ग्रस्त है ॥ १ ॥

अथ शीतपूतनयालक्षणमाह—**वेपते कासते क्षीणो नेत्ररोगो विगन्धिता।**
छर्द्यतीसारयुक्तश्च शीतपूतनया शिशुः ॥१॥

जब बच्चा कांपता हो, खांसता हो, क्षीण हो, नेत्र रोगों से युक्त हो, गन्ध न आती हो, वमन तथा अतिसार युक्त हो तो समझो शीत पूतनाग्रह से युक्त होता है१

अथ मुखमण्डनिकालक्षणमाह—प्रसन्नवर्णवदनः शिराभिरभिसंवृतः ।
मूत्रगन्धिश्च बह्वाशी मुखमण्डनिकाग्रहे १

बच्चा प्रसन्न मुख तथा सुन्दर रंग वाला हो, शिरायें अर्थात् नसें उभर आई हों मूत्र की गन्ध आती हो, बहुत खाता हो, य लक्षण मुखमण्डनिकाग्रह में होते हैं॥

अथ नैगमेयग्रहलक्षणमाह—

छर्दिः स्यन्दनकण्ठास्यशोषो मूर्च्छा विगन्धता ।
ऊर्ध्वं पश्येद्दशेद्दन्तान्नैगमेयग्रह वदेत् ॥ १ ॥

बच्चे को वमन होती है, लारें बहती हैं वा पसीना आता है, कण्ठ तथा मुंह सूखता है, मूर्च्छा आती है तथा ऊपर को देखता रहता है, दांतों को काटता है । इसे नैगमेयग्रह कहते हैं ॥ १ ॥

अथ साध्यासाध्यलक्षणमाह—स्रस्ताक्षश्च स्तनद्वेषी मुह्यते चानिशं मुहुः ।
तं बालमचिराद्धन्ति ग्रहः संपूर्णलक्षणः ॥२॥

बच्चे की आंखें लटक जावें या ढीली पड़ जावें ("प्रस्तब्धाक्षः" भी माधव निदानादि में पाठ है, अर्थात् आंखें अकड़ जावें) स्तन पीने से द्वेष करे, बारबार रातदिन में कई बार मूर्च्छित हो जावे, ऐसे बच्चे को सम्पूर्ण लक्षणों से युक्त ग्रह शीघ्र ही मार देते हैं ॥ २ ॥ इति ग्रहग्रस्तबालरोगाः ।

अथ चिकित्सा ।

तत्राऽऽदौ बालरोगाणां चिकित्सा—भैषज्यं पूर्वमुद्दिष्टं महतां यज्ज्वरादिषु ।
तदेव कार्यं बलानां किं तु दाहादिकं विना ॥ १ ॥

जो २ औषध ज्वरादि रोगों की बड़े आदमियों के लिये लिखी गई हैं वे सब ही बच्चों को देनी चाहियें परन्तु दाह आदि नहीं करना चाहियें ॥ १ ॥

**दाहादिकं विना अग्निदाहक्षारवमनविरेचनाशिराव्यधादिकं विना ।
महाकष्टे चोत्पन्ने वमनाविरेकाद्यपि दद्यात् ।**

दाहादि के बिना अर्थात् अग्निदाह, क्षार, वमन, विरेचन, शिराव्यध आदि कार्य बच्चों को नहीं करने चाहियें । महाकष्ट होने पर वमन विरेचन आदि भी देना चाहिये ॥

यतः आह सुश्रुतः—विरेकबस्तिवमनान्यृते कुर्याच्च नात्ययात् ।
त एव दोषा दूष्याश्च ज्वराद्या व्याधश्च ते ।
अतस्तदेव भैषज्यं मात्रा त्वस्य कनीयसी ॥ १ ॥

सुश्रुत में लिखा है बच्चे को विरेचन, वस्ति तथा वमन अत्यन्त कष्टके बिना नहीं करावे। बच्चों के बड़े मनुष्यों के समान ही दोष और दूष्य होते हैं तथा वैसी ही व्याधियें होती हैं और वे ही औषध होते हैं । केवल उनकी मात्रा थोड़ी देनी होती है ॥ १ ॥

अथ कनीयसीं मात्रामाह विश्वामित्रः—

विडङ्गफलमात्रं तु जातमात्रस्य भेषजम् ।

अनेनैव प्रमाणेन मासि मासि प्रवर्धयेत् ॥ १ ॥

विश्वामित्र ने कहा है कि जब बच्चा उत्पन्न ही हुआ होता है तब विडंग के दाने के समान ही काष्ठादि औषधियों की मात्रा देनी चाहिये । इसी प्रमाण से प्रत्येक मास में मात्रा बढ़ानी चाहिये ॥ १ ॥

अथ तन्त्रान्तरे त्वन्यथाऽभिहितम्—

प्रथमे मासि बालाय देया भैषज्यरक्तिका ।
अवलेह्या तु कर्तव्या मधुक्षीरसिताघृतैः ॥ १ ॥

अन्य शास्त्रों में लिखा है कि पहले मास में बच्चे को काष्ठौषध एक रत्ति देनी चाहिये और उसे शहद, दूध, खांड तथा घी से मिलाकर चटाना चाहिये ॥१॥

एकैकां वर्धयेत्तावद्यावत्संवत्सरो भवेत् ।
तदूर्ध्वं माषवृद्धिः स्याद्यावत्षोडश वत्सराः ॥ २ ॥

फिर प्रतिमास एक २ रत्ति मात्रा बढ़ाता जाये। वर्षभर तक इस प्रकार मात्रा बढ़ा सकते हैं। अर्थात् छटे महीने में ६ रत्ति और १२वें मास में १२ रत्ति मात्रा देनी चाहिये । जब एक साल का बच्चा हो जाये तब से १६ वर्ष तक एक २ माषा प्रति वर्ष वृद्धि करनी चाहिये ॥ २ ॥

ततः स्थिरा भवेत्तावद्यावद्वर्षाणि सप्ततिः ।
ततो बालकवन्मात्रा ह्रासनीया शनैः शनैः ॥ ३ ॥

तब से लेकर ७० वर्ष की आयु तक तो स्थिर मात्रा रखनी चाहिये । उस के बाद बालकों के समान ही वृद्धों के लिये दवाई की मात्रा को धीरे २ घटाता रहे॥३॥

चूर्णकल्कावलेहानामियं मात्रा प्रकीर्तिता ।
कषायस्य पुनः सैव विज्ञातव्या चतुर्गुणा ॥ ४ ॥

पूर्वलिखित मात्रा चूर्ण, कल्क तथा अवलेहों की है, और क्वाथ की मात्रा देनी हो तो इन से चौगुनी देना । अर्थात् प्रथम मास के बच्चे को ४ रत्ति दें तो एक साल के बच्चे को ४८ रत्ति क्वाथ पिलावें ॥ ४ ॥

क्षीरपस्य शिशोर्देयमौषधं क्षीरसर्पिषा ।
धात्र्यास्तु केवलं देयं न क्षीरेणापि सर्पिषा ॥ ५ ॥

जो बच्चा दूध पीता हो उसे दूध तथा घी से मिलाकर औषध देनी चाहिये परन्तु धाय को औषध देनी हो तो दूध तथा घी के साथ मिलाकर देने की आवश्यकता नहीं । अकेली औषध दें ॥ ५ ॥

अथ ज्वरस्य चिकित्सा—**सर्वं निवार्यते बाले स्तन्यं नैव निवार्यते ।**
मात्रया लङ्घयेद्धात्रीं शिशोरेतद्धिलङ्घनम् ॥ १ ॥

बच्चे के लिये अपथ्य के रूप में सब कुछ छुड़ाया जा सकता है, पर दूध नहीं छुड़ाया जा सकता । यदि बच्चे को लंघन अर्थात् उपवास कराना हो तो धाय को मात्रा से लंघन करावे । अर्थात् भोजनादिकम मात्रा में देकर सहने

योग्य लंघन करावे, ऐसा करने से ही बच्चे का भी लंघन होजाता है ॥ १ ॥

क्षीरादस्यौषधं धात्र्याः क्षीरान्नादस्य चोभयोः ॥ २ ॥
अन्नादस्य तु बालस्य योजयेत्कुशलो भिषक् ॥

जो बच्चा केवल दूध पीता हो उसके लिये उसकी धाई को औषध पिलानी चाहिये। जो बच्चा दूध पीता हो तथा अन्न भी खाता हो, तो उसे तथा धाई को दोनों को ही औषध पिलानी चाहिये ॥ २ ॥ जो बच्चा अन्न ही खाने लग गया हो उसे स्वयं दवाई पीनी चाहिये ॥

अथ भद्रमुस्तादिक्वाथसर्वज्वरेषु—भद्रमुस्ताभयानिम्बपटोलमधुकैः कृतः।
क्वाथः कोष्णः शिशोरेष निःशेषज्वरनाशनः ॥१॥

भद्रमोथा, हरड़, नीम की छाल, पटोल तथा मुलठ्ठी इन सब से बनाया हुआ क्वाथ कोसा २ पिलाया जाये तो बच्चे के सभी प्रकार के ज्वरों का नाश करता है ॥

अथ एलादिचूर्णम्—

एलाम्राऽस्थिकटुत्रिकत्रिफलिकावेल्लाब्दशृङ्गीविषा-
लोध्रं धातकिचित्रकाब्ध्रहपुषाबिल्वाजमोदाः समाः।
वस्वंशा तुरगी जया नृपलवा सर्वैः समांशा सिता
बालानां ज्वरकार्श्यकासशमनश्चूर्णोऽतिसारं जयेत् ॥ २ ॥

छोटी इलायची, आम की गुठली की गिरी, सोंठ, मिरच, पीपल, हरड़, बहेड़ा, आंवला, विडंग, मोथा, काकड़ासिंगी, अतीस, लोध, धाय के फूल, चीता, धनियां, हाऊबेर, बिल का गूदा, अजवायन प्रत्येक पदार्थ समभाग लेवें। सब से आठवां भाग असगन्ध लेवें, भांग शोधित १६वां भाग डालें। सब को मिला कर जितना चूर्ण हो उसके समान भाग खांड डालें। इस चूर्ण को उचित मात्रा में बच्चों को सेवन करावें तो बच्चों के ज्वर, सूखना अर्थात् कृशता तथा खांसी का नाश होता है ॥ २ ॥

अथ जिह्वायां लेपः—बालो योऽचिरजातः स्तन्यं गृह्णाति नो तदा तस्य।
सैन्धवधात्रीमधुघृतपथ्याकल्केन घर्षयेज्जिह्वाम् ॥१॥

जो नया ही उत्पन्न हुआ २ बच्चा दूध पीने के लिये स्तन को न पकड़ता हो तो उसकी जीभ को सेंधानमक, आंवला, शहद, घी तथा हरड़ इन सब के कल्क से घिसें। इस से दूध पीने लगता है ॥ १ ॥

अथ पलंकषादिधूपः—पलंकषा वचा कुष्ठं गजचर्माविचर्म च।
निम्बस्य पत्रं क्षौद्रेण सार्धमुक्तं तु धूपनम्।
ज्वरवेगं निहन्त्याशु बालकानां विशेषतः ॥ १ ॥

गूगल, बच, कूठ, हाथी का चमड़ा, भेड़ का चमड़ा, नीम के पत्ते, सबको शहद से मिलाकर धूप देवें। बालकों के ज्वर के वेग को यह धूप विशेष करके नष्ट करती है ॥ १ ॥

अथ मूर्वाद्युद्वर्तनम्—मूर्वानिशासर्षपरामसेनश्वेतासमङ्गाम्बुदकारवीणाम् ।
छागीपयोभिः सह पेषितानामुद्वर्तनं स्याज्ज्वरजिच्छिशूनाम् १

मूर्वामूल, हल्दी, सरसों, चिरायता, श्वेत वच, मंजीठ, मोथा, कालाजीरा, इन सबको पीसकर बकरी के दूध से मिलाकर उबटना करें तो बच्चों का ज्वर नष्ट होता है ॥ १ ॥ इति ज्वरचिकित्सा ।

अथातिसारग्रहण्योश्चिकित्सा घनादिचूर्णम्—

घनकृष्णारुणाशृङ्गीचूर्णं क्षौद्रेण संयुतम् ।
शिशोर्ज्वरातिसारघ्नं कासं श्वासं वमिं हरेत् ॥ १ ॥

नागरमोथा, पिप्पली, मंजीठ, काकड़ासिंघी, इन सबको समभाग लेकर चूर्ण करके शहद से मिलाकर चटावें तो बच्चे के ज्वर तथा अतिसार को नाश करता है, खांसी, श्वास तथा वमन को नाश करता है ॥ १॥

लोध्रादिचूर्णं—लोध्रेण पिप्पली वाला बालकातिसृतौ हितः ।

लोध, पिप्पली, सुगन्धबाला इनका चूर्ण बच्चे के अतिसार में हित है ।

श्रीरसादि—श्रीरसो माक्षिकयुतो धातकीकुसुमैः समम् ॥ २ ॥

राल, धाय के फूल, शहद सबको मिलाकर बच्चे को चटायें तो भी अतिसार का नाश होता है ॥ २ ॥

अतीसारे बिल्वादि—

बिल्वं च पुष्पाणि च धातकीनां जलं सलोध्रं गजपिप्पली च ।
क्वाथावलेहौ मधुना विमिश्रौ बालेषु योज्यावतिसारितेषु ॥ ३ ॥

बिल का गूदा, धाय के फूल, बाला, लोध, गजपीपल । इन सबको मिलाकर क्वाथ वा अवलेह बना ले । इसमें शहद मिलाकर पिलावें तो बालकों का अतिसार रोग नष्ट हो जाता है ॥ ३ ॥

समङ्गादि—समङ्गाधातकीलोध्रसारिवाभिः शृतं जलम् ।
दुर्धरेऽपि शिशोर्देयमतीसारे समाक्षिकम् ॥ ४ ॥

मंजीठ, धाय के फूल, लोध, शारिवा इन सबको समभाग लेकर जल पकायें । तो भयंकर अतिसार में भी शहद से मिलाकर देने से लाभ होता है ॥ ४ ॥

विडङ्गादि—विडङ्गान्यजमोदा च पिप्पलीतण्डुलानि च ।
एषामालिह्य चूर्णानि सुखतप्तेन वारिणा ॥ ५ ॥
आमे प्रवृत्तेऽतीसारे कुमारं पाययेद्भिषक् ।

वायविडंग, अजवायन, पिप्पली के चावल अर्थात् कण, इन सबको समभाग लेकर चूर्ण करके सुखोष्ण जल से पिलावें तो यह ॥५॥ आमातिसार में बच्चों को बहुत लाभ देता है ।

मोचारसादि यवागुः—मोचारसं समङ्गा च धातकी पद्मकेसरम् ।
पिष्टैरेतैर्यवागूः स्याद्रक्तातीसारनाशिनी ॥ ६ ॥

मोचरस, मंजीठ, धाय के फूल, पद्मकेसर इन सब को पीसकर इन की यवागू बनाकर दी जाये तो रक्तातीसार का नाश करती है ॥ ६ ॥ इति मोचरसादियवागू रक्तातिसारे ॥

नागरादिक्वाथः—नागरातिविषामुस्तबालकेन्द्रयवैः शृतम्।
कुमारं पाययेत्प्रातः सर्वातीसारनाशनम् ॥ १ ॥

सोंठ, अतीस, मोथा, वाला, इन्द्रजौ इन सब का क्वाथ कुमार को प्रातः पिलावें तो सभी प्रकार के अतिसारों का नाश होता है ॥ १ ॥

लाजादिचूर्णम्—लाजाः सयष्टिमधुका शर्करा क्षौद्रमेव च।
तण्डुलोदकयोगेन क्षिप्रं हन्ति प्रवाहिकाम् ॥ २ ॥

लाजा अर्थात् धान की खीलें, मुलठी, खांड, शहद इन सबको चावलों के धुले जल से मिलाकर बच्चे को पिलावें तो प्रवाहिका का नाश होता है ॥२। इति लाजादिचूर्णं प्रवाहिकायाम्।

लोध्रादि ज्वरातिसारे—लोध्रेन्द्रयवधान्याकधात्रीह्रीबेरमुस्तकम्।
मधुना लेहयेद्बालं ज्वरातीसारनाशनम् ॥१॥

लोध, इन्द्रजौ, धनियां, आंवला, बाला, मोथा सबका चूर्ण शहद से मिलाकर बच्चे को चटावे तो ज्वरातीसार का नाश होता है ॥ १ ॥

रजन्यादिचूर्णं संग्रहण्यादौ—रजनी सरलो दारु बृहती गजपिप्पली।
पृश्निपर्णी शताह्वा च लीढा माक्षिकसर्पिषा २

हल्दी, सरलकाष्ठ अर्थात् चीलकी लकड़ी या राल देवदार, बड़ी कटेली, गजपीपल, पृष्टपर्णी, सौंफ, इन सब को समभाग लेकर चूर्ण करें। इसे घी तथा शहद से मिलाकर चटावें २

दीपनी ग्रहणीं हन्ति मारुतार्तिं सकामलाम्।
ज्वरातीसारपाण्डुत्वं बालानां सर्वरोगनुत् ॥ ३ ॥

तो यह चूर्ण अग्निदीपन करता है, ग्रहणीरोग को नष्ट करता है, वातरोग को दूर करता है, कामलारोग का नाश करता है। ज्वर, अतीसार तथा पाण्डुरोग का नाश करता है। तथा बालकों के सभी रोगों का नाश करता है ॥ ३ ॥ इति रजन्यादि चूर्णं संग्रहण्यादौ। इत्यतीसार ग्रहण्योश्चिकित्सा।

अथ कासरोगचिकित्सा—पौष्करातिविषाशृङ्गीमागधीधन्वयासकैः।
कृतं चूर्णं तु सक्षौद्रं शिशूनां पञ्चकासाजित् ॥१॥

पोहकरमूल, अतीस, काकड़ासिंघी, पिप्पली, धमासा इन सबको समभाग लेकर चूर्ण करके शहद से मिलाकर चटावें तो बच्चों की पांचों प्रकार की खांसी नष्ट होती है ॥ १ ॥ इति पौष्करादिचूर्णम्।

अथ मुस्तकादिरसः—मुस्तकातिविषावासाकणाशृङ्गीरसं लिहन्।
मधुना मुच्यते बालः कासैः पञ्चभिरुच्छ्रितैः ॥१॥

नागरमोथा, अतीस, बांसा, पीपली, काकड़ासिंघी इनके रस अर्थात् घने क्वाथ को शहद से मिलाकर चटाया जाये तो बालक पांचों प्रकार की खांसियों से छूट जाता है ॥ १ ॥

अथ व्याघ्रीकुसुमाद्यवलेहिका—व्याघ्रीकुसुमसंजातकेसरैरवलेहिका।
मधुना चिरसंजातान्शिशोः कासान्व्यपोहति ॥१॥

छोटी कटेली के फूलों का केंसर इकठ्ठा करके उसमें शहद मिलाकर चटनी बनायें तो बच्चे की चिर से हुई २ सब प्रकार की खांसियों को यह योग नाश कर देता है ॥ १ ॥

अथ कासश्वासचिकित्सामाह—धान्यं शर्करया युक्तं तण्डुलोदकसंयुतम्।
पानमेतत्प्रदातव्यं कासश्वासापहं शिशोः ॥ १ ॥

धनियां, खांड तथा चावलों का धोवन इन तीनों को मिलाकर पानक बनाकर बच्चों को पिलावें तो बच्चे के कास तथा श्वास इससे नष्ट होते हैं ॥ १ ॥ इति धान्यादिपानकम्।

अथ द्राक्षादिचूर्णम्—द्राक्षावासाभयाकृष्णाचूर्णं क्षौद्रेण सर्पिषा।
लीढं श्वासं निहन्त्याशु कासं च तमकं तथा ॥१॥

दाख, बांसा, हरड़, पीपली इन सबका चूर्ण शहद तथा घी मिलाकर चटावें तो श्वास को, कास को तथा तमक श्वास को शीघ्र नष्ट करता है।

अथ दुरालभादिलेहः—दुरालभाकणाद्राक्षापथ्याः क्षौद्रेण लेहयेत्।
त्रिरात्रं पञ्चरात्रं वा कासश्वासहरः शिशोः ॥१॥

जवासा, पिप्पली, दाख, हरड़ इन सबका चूर्ण शहद से मिलाकर चटावें। इसे तीन रात वा पांच रात चटावें तो बच्चों के कास तथा श्वास नष्ट होते हैं ॥१॥

तुगावलेहः—तुगा च क्षौद्रसंलीढा कासश्वासौ शिशोर्जयेत् ॥ १ ॥

वंशलोचन का चूर्ण शहद से मिलाकर चाटें तो बच्चे के कास तथा श्वास का नाश होता है ॥ १ ॥ इति श्वासकासयोश्चिकित्सा।

अथ हिक्कायां छर्द्यां च—चूर्णं कटुरोहिण्या मधुना सह योजयेत्।
हिक्कां प्रशमयेत्क्षिप्रं छर्दिं चापि चिरोत्थिताम् ॥१॥

कुटकी का चूर्ण शहद के साथ मिलाकर चटावें तो शीघ्र ही हिचकी तथा वमन जो चिरकाल की भी हो तो भी शीघ्र ही दूर होती है ॥ १ ॥

आम्रास्थ्यादिचूर्णम्—आम्रास्थिलाजसिन्धूत्थं सक्षौद्रं छर्दिनुद्भवेत्।

आम की गुठली के मध्य की गिरी, धान की खीलें, सेंधानमक इनका चूर्ण शहद से मिलाकर चाटें तो वमन का नाश करता है ॥

घनादिचूर्णम्—घनशृङ्गीविषाणां च चूर्णं हन्ति समादिकम्।
वान्ति ज्वरं तथा योगो मधुनातिविषारजः ॥ २ ॥

नागरमोथा, काकड़ासिंघी, अतीस इनका चूर्ण शहद से मिलाकर चटावें।

अथवा अतीस का चूर्ण शहद से मिलाकर चटावें तो वमन तथा ज्वर को नष्ट करता है ॥ २ ॥

अथ क्षीरच्छर्द्याम्—**पीतं पीतं वमेद्यस्तु स्तन्यं तं मधुसर्पिषा।**
द्विवार्ताकीफलरसं पञ्चकोलं च लेहयेत् ॥ १ ॥

जो बच्चा दूध बार २ पीकर वमन कर देवे। उसे छोटी कटेली के फलों का रस तथा बड़ी कटेली के फलों के रस में पंचकोल का चूर्ण तथा शहद और घी मिलाकर चटावें ॥ १ ॥

पंचकोलं यथा—**पिप्पलीपिप्पलीमूलं चव्यचित्रकनागरम् ॥**

पिप्पली, पिप्पलीमूल, चव्य, चीता, सोंठ इनको समभाग लेकर चूर्ण करें इसे पंचकोल कहते हैं ॥

अथ तृष्णायाम्—**ह्रीबेरशर्कराक्षौद्रं लीढं तृष्णाहरं परम् ॥ १ ॥**

सुगन्धबाला, खांड तथा शहद इन सबको एकत्र करके चाटने से तृष्णा का नाश अच्छी प्रकार से हो जाता है ॥ १ ॥

अथाऽऽनाहे शूले च—**घृतेन सिन्धुविश्वैलाहिङ्गुभार्ङ्गीरजो लिहन्।**
आनाहं वातिकं शूलं हन्यात्तोयेन वा शिशोः ॥१॥

सेंधानमक, सोंठ, इलायची, हींग, भारंगी इन सबका चूर्ण घी के साथ मिला कर अथवा जल के साथ मिलाकर बच्चे को दें तो आनाह तथा शूल का नाश होता है ॥ १ ॥

अथ रेचनम्—**पिष्ट्वा गन्धर्वबीजानि त्वाखुविण्निम्बुवारिणा।**
नाभौ गुदे वा लेपेन शिशूनां रेचनं परम् ॥ १ ॥

एरण्ड के बीजों को चूहे की मींगनी तथा नींबू के रस से पीसकर नाभि वा गुदा में लेप करें तो बच्चों के लिये उत्तम विरेचन है ॥ १ ॥

मृत्तिकारेचनाय योगः—**इन्दुलोचननेत्राणि शिखिभागं हि योजयेत्।**
त्रुटिगन्धकमुर्दाडशतपुष्पा विचूर्णिताः ॥ २ ॥

छोटी इलायची एक भाग, शुद्ध गन्धक दो भाग, मुर्दार शंख दो भाग, सौंफ तीन भाग ले ॥ २ ॥

माषद्वयं गवां दुग्धैः सेवयेद्दिनपञ्चकम्।
रेचयेन्मृत्तिकां शुद्धां शिशूनां हितमौषधम् ॥ ३ ॥

सबको मिलाकर चूर्ण कर ले। यह चूर्ण दो माषे लेकर गौ के दूध के साथ मिलाकर ५ दिन तक सेवन करायें तो बच्चे ने यदि मिट्टी खाली हो अथवा गर्भावस्था में माता ने मिट्टी खाई हो तो उस मिट्टी को यह योग विरेचन द्वारा बाहर कर देगा। और बच्चों के लिये यह औषध हितकर है। (नोट—छोटे बच्चे को यदि यह औषध खिलाई जावे तो मात्रा चौथाई रत्ति ही दें) ॥ ३ ॥ इति वैद्यविलासात्।

अथ मूत्राघाते—**कणोषणसिताक्षौद्रसूक्ष्मैलासैन्धवैः कृतः।**

मूत्रग्रहे प्रयोक्तव्यः शिशूनां लेह उत्तमः ॥ १ ॥

पिप्पली, कालीमिरच, खांड, शहद, छोटी इलायची, सेंधानमक, इन सबकी चटनी बनाकर चटावें तो बच्चों के लिये मूत्राघात के लिये उत्तम योग है ॥१॥

अथ कार्श्ये—अथ विदारीकन्दादि चूर्णम्—

यथा तु दुर्बलो बालः खादन्नपि च वह्निमान् ।
विदारीकन्दगोधूमयवचूर्णं घृतप्लुतम् ॥ १ ॥

यदि अच्छी अग्नि वाला बालक खाने पर भी दुर्बल हो जाये तो उसे विदारीकन्द, गेहूं तथा जौ इन सबका चूर्ण कर के गौ के घी से मिलाकर खिलावे ॥१॥

खादयेत्तदनु क्षीरं श्रृतं समधुशर्करम् ।

और ऊपर से पका हुआ दूध शहद तथा खांड मिलाकर पिलायें तो बालक पुष्ट हो जाता है ॥ १ ॥

अथ चत्वारिसुवर्णयोगाः—सौवर्णं सुकृतं चूर्णं कुष्ठं मधुघृतं वचा ॥ २ ॥

सुवर्ण की उत्तम भस्म, कूठ, शहद, घी तथा बच इन सबका चूर्ण ॥ २ ॥

मत्स्याक्षकः शङ्खपुष्पी मधुसर्पिः सकाञ्चनम् ।
अर्कपुष्पी घृतं क्षौद्रं चूर्णितं कनकं वचा ॥ ३ ॥

अथवा ब्रह्मबूटी, शंखपुष्पी, शहद, तथा सोने की भस्म इन सबका चूर्ण । अथवा अन्धाहुली, हुलहुल, क्षीरकाकोली, अपराजिता, घी, शहद, सोने की भस्म तथा वच इन सबका चूर्ण ॥ ३ ॥

सहेमचूर्णं कैडर्यं श्वेतदूर्वा घृतं मधु ।
चत्वारोऽभिहिताः प्राश्या अर्धश्लोकसमापनाः ॥
कुमाराणां वपुर्मेधाबलपुष्टिकराः स्मृताः ॥ ४ ॥

अथवा सोने की भस्म, (कैडर्यः—फलितमहानिम्बविशेषे, कट्फलवृक्षे, मदनवृक्षे, पूतिकरंजे), कायफल, श्वेत दूब, घी तथा शहद इन सबका चूर्ण । इन पृथक् २ चूर्णों में से किसी एक चूर्ण को बच्चे को चटावें तो कुमारों का शरीर, मेधा, बुद्धि, बल तथा पुष्टि होती है (प्रत्येक बार छोटे बच्चे को $\frac{1}{32}$ रत्ति की मात्रा स्वर्ण भस्म देनी चाहिये) ॥ ४ ॥

अथ लाक्षादितैलम्—लाक्षारससमं तैलं मस्तुन्यथ चतुर्गुणे ।
रास्नाचन्दनकुष्ठाब्दवाजिगन्धानिशायुतैः ॥ १ ॥

लाख के रस को एक सेर ले, तिल का तैल एक सेर ले, दही का पानी ४ सेर ले । रास्ना, लालचन्दन, कूठ, मोथा, असगन्ध, हल्दी ॥ १ ॥

शताह्वादारुयष्ट्याह्वमूर्वातिक्ताहरेणुभिः ।
संसिद्धं ज्वररक्षोघ्नं बलवर्णकरं शिशोः ॥ २ ॥

सौंफ, दारुहल्दी, मुलहठी, मूर्वामूल, कुटकी, रेणुका इनमें से प्रत्येक द्रव्य समान भाग लेकर सबको मिलाकर तैल से चौथाई भाग अर्थात् एक पाव लेवे। सबको एकत्र करके

विधि पूर्वक तेल पाक करे। यह तेल बालकों के ज्वर नाश करता है, राक्षसों अर्थात् रोग पैदा करने वाले कीटाणुओं का नाश करता है, बल करता है तथा रंग को निखारता है ॥ २ ॥ इति लाक्षादितैलम्।

अथाश्वगन्धाघृतम्—पादकल्केऽश्वगन्धायाः क्षीरेष्टगुणिते पचेत्।
घृतं देयं कुमाराणां पुष्टिकृद्बलवर्धनम् ॥ १ ॥

असगन्ध का कल्क एक पाव करे, गौ का घी एक सेर ले, दूध ८ सेर ले। सबको मिलाकर एकत्र घृतपाक कर लवे। यह घी कुमारों को पिलाने से पुष्टि करता हैं तथा बल बढ़ाता है ॥ १ ॥ इत्यश्वगन्धाघृतम्।

उत्सादनाभिषेकावाह—

सप्तच्छदार्कच्छदनक्तमालमूलैस्तुरंगारिजटासमेतैः।
उत्सादिताङ्गः पशुमूत्रपिष्टैर्ह्रीबेरमुण्डीसलिलाभिषिक्तः ॥१॥

सतौना, आक के पते, बृहत् करञ्ज की जड़, कनेर की जड़ इन सबको समभाग लेकर पीसकर गौ या पशुओं के मूत्र से पीसकर अंगों का उत्सादन करे अर्थात् उबटना करे। और फिर सुगन्ध बाला, मुण्डी बूटी, इनको जल में उबाल कर उस जल का शरीर पर अभिसिञ्चन करे ॥ १ ॥

दिनेदिने याति शिशुः प्रवृद्धिं पतिः क्षपाणामिव शुक्लपक्षे ॥२॥

इससे दिन प्रतिदिन बच्चे की वृद्धि अर्थात् शरीर की वृद्धि ऐसे होती जाती है जैसे चांद की वृद्धि प्रतिदिन शुक्ल पक्ष में होती जाती है ॥ २ ॥ इति राजमार्त्तण्डात्। इति कार्श्यचिकित्सा।

अथ शोथे—मुस्तकूष्माण्डबीजानि भद्रदारुकालिङ्गकान्।
पिष्ट्वा तोयेन संलिम्पेल्लेपोऽयं शोथहृच्छिशोः ॥ १ ॥

मोथा, पेठे की बीज, देवदारु, इन्द्रजौ इन सबको समभाग लेकर जल से पीस कर बच्चे के शोथ स्थान में लगा देवे तो बच्चे की सूजन नष्ट हो जाती है ॥ १ ॥

अथ नाभिशोथे—मृत्पिण्डेनाग्नितप्तेन क्षीरसिक्तेन सोष्मणा।
स्वेदयेदुत्थितां नाभिं शोथस्तेनोपशाम्यति ॥ १ ॥

मिट्टी का ढेला आग में तपाकर उसे दूध से बुझावें उस के द्वारा नाभि को स्वेद देवें तो बच्चे का शोथ उस से नष्ट होजाता है ॥ १ ॥

अथ नाभिपाके—नाभिपाके निशालोध्रप्रियंगुमधुकैः शृतम्।
तैलमभ्यञ्जने शस्तमेभिश्चात्रावधूलनम् ॥ १ ॥

नाभिपाकरोग में हल्दी, लोध, प्रियंगु, मुलठी इन से पकाया हुआ तेल मालिश करने में हितकर है, तथा इन पदार्थों का चूर्ण नाभिपाक पर डालें तो भी उत्तम है ॥ १ ॥

छागशकृदादियोगः—दुग्धेन च्छागशकृता नाभिपाकेऽवचूर्णनम्।

त्वक्चूर्णैः क्षीरिणां वाऽपि कुर्याच्चन्दनरेणुना ॥२॥

बकरी की मींगनी दूध में मिलाकर नाभिपाकमें अवचूर्णित की अर्थात् छिड़की जावे। अथवा क्षीरीवृक्षों की त्वचा के चूर्ण को वा चन्दन के चूर्ण को नाभि पर छिड़कने से नाभिपाकरोग नष्ट होता है ॥ २ ॥

अथ गुदपाके—गुदपाके तु बालानां पित्तघ्नीं कारयेत्क्रियाम्।
रसाञ्जनं विशेषेण पानलेपनयोर्हितम्॥
शङ्खयष्ट्यञ्जनैश्चूर्णं शिशूनां गुदपाकनुत् ॥ १ ॥

गुदापाकरोग में बच्चों को पित्तनाशक क्रिया से आराम करे। विशेष कर के रसौंत को पिलावें तथा लेप करें तो गुदपाक में लाभ होता है॥ शंखभस्म, मुलट्ठी रसौंत इन का चूर्ण बच्चों की गुदापाक को नष्ट करता है ॥ १ ॥

अथाहिपूतने—शङ्खसौवीरयष्ट्याह्वैर्लेपो देयोऽहिपूतने ॥ १ ॥

शंख, सौवीराञ्जन, मुलहठी इन सब का लेप अहिपूतनरोग में करना चाहिये ॥१

अथ पारिगर्भिके—पारिगर्भिकरोगे तु युज्यते वह्निदीपनम् ॥ १ ॥

पारिगर्भिकरोग में अग्निदीपन पदार्थ देवे ॥ १ ॥

अथ क्षतविसर्पविस्फोटज्वरेषु—पटोलत्रिफलारिष्टहरिद्राक्वथितं पिबेत्।
क्षतवीसर्पविस्फोटज्वराणां शान्तये शिशोः ॥१॥

पटोलपत्र, हरड़, बहेड़ा, आंवला, नीम, हल्दी इन सब को क्काथ कर के बच्चे को पिलावें तो क्षत, विसर्प, विस्फोट, ज्वर इन सब की शान्ति होती है ॥१॥

अथ सिध्मपामाविचर्चिकासु—गृहधूमनिशाकुष्ठराजिकेन्द्रयवैः शिशोः॥१॥

रसोई घर का धुंआं, हल्दी, कूठ, राई, इन्द्रजौ ॥ १ ॥

लेपस्तक्रेण हन्त्याशु सिध्मपामाविचर्चिकाः ॥ १ ॥

इन सब को पीसकर तक्र से लेप करें तो सिध्म, पामा तथा विचर्चिकारोग का शीघ्र ही नाश होता है ॥ १ ॥

अथ मुखस्रावे मुखपाके च—सारिवातिललोध्राणां कषायो मधुकस्य च।
संस्राविणि मुखे शस्तो धावनार्थं शिशोः सदा ॥ १ ॥

सारिवा, तिल, लोध, मुलठ्ठी इन का क्वाथ बच्चे के मुंह से लारें टपकने पर मुंह के धोने में श्रेष्ठ है ॥ १ ॥

मुखपाके तु बालानामाम्रसारमयोरसः।
गैरिकं क्षौद्रसंयुक्तं भेषजं सरसाञ्जनम् ॥ २ ॥

बच्चों के मुखपाकरोग में आमसार का रस, गेरू, शहद तथा रसौंत मिला कर लगावें ॥ २ ॥

दार्वीयष्ट्यभयाजातीपत्रक्षौद्रैस्तु धावनम्।
अश्वत्थत्वग्दलक्षौद्रैर्मुखपाके प्रलेपनम् ॥ ३ ॥

दारुहल्दी, मुलहठी, हरड़, चमेली के पत्ते इन सब के क्वाथ में शहद मिला कर मुख को धोवें। पीपल की छाल, पीपल के पत्ते इन का चूर्ण कर के शहद से मिलाकर मुखपाक पर प्रलेपन किया जाये ॥ ३ ॥

अथ रोदने—पिप्पलीत्रिफलाचूर्णं घृतक्षौद्रपरिप्लुतम्।
बालो रोदिति यस्तस्मै लेढुं दद्यात्सुखावहम् ॥ १ ॥

पिप्पली, हरड़, बहेड़ा, आंवला इन सबका चूर्ण घी तथा शहद से मिलाकर जो बच्चा रोता हो उसे चटावें तो बच्चे को सुख मिलता है और रोना बन्द हो जाता है ॥ १ ॥

अथ तालुकण्टके—हरीतकीवचाकुष्ठकल्कं माक्षिकसंयुतम्।
पीत्वा कुमारः स्तन्येन मुच्यते तालुकण्टकात् ॥१॥

हरड़, बच, कूठ इन को समभाग लेकर कल्क करे, इसे शहद में मिलाकर धाय के दूध से पिलावें तो कुमार का तालुकण्टकरोग नष्ट होजाता है ॥ १ ॥

अथ तालुपाके—तालुपाके यवक्षारमधुभ्यां प्रतिसारणम् ॥ १ ॥

तालुपाक, रोग में यवक्षार तथा शहद से तालु तथा मुख का प्रतिसारण करे इस से तालुपाक रोग ठीक हो जाता है ॥ १ ॥

अथ कुकूणके—फलत्रिकं लोध्रपुनर्नवे च स शृङ्गबेरं बृहतीद्वयं च।
आलेपनं श्लेष्महरं सुखोष्णं कुकूणके कार्यमुदाहरन्ति १

हरड़, बहेड़ा, आंवला, लोध, पुनर्नवा, सोंठ, बड़ीकटेली, छोटी कटेली, इन सबका चूर्ण कर के जल से पीसकर कोसा २ लेप करे तो श्लेष्मा का नाश होता है तथा कुकूणक का नाश होता है ॥ १ ॥

अथ नयने—व्योषं सभृङ्गं च मनःशिलालं करञ्जबीजं च सुपिष्टमेतत्।
कण्डूर्दितानामथ वर्त्मनां तु श्रेष्ठं शिशूनां नयनं विदध्यात् ॥१॥

सोंठ, मिरच, पीपल, दारचीनी, मनसिल, हड़ताल, करंज के बीज; इन सब को पीस कर बच्चों के खुजली वाले वर्त्मों में अर्थात् पलकों में अंजन करें तो खुजली नष्ट होती है ॥ १ ॥

अथ दन्तोद्भेदजरोगेषु—दन्तपालीं तु मधुना चूर्णेन प्रतिसारयेत्।
धातकीपुष्पपिप्पल्योर्धात्रीफलरसेन वा ॥ १ ॥

दन्तों की पाली अर्थात् दांत निकलने के स्थान को धाय के फूल तथा पिप्पली के चूर्ण से प्रतिसारण करता या घिसता रहे। अथवा आंवले के फल के रस से दांतों की पाली घिसे ॥ १ ॥

दन्तोत्थानभवा रोगाः पीडयन्ति च बालकम्।
जाते दन्ते हि शाम्यन्ति यतस्तद्धेतुका गदाः ॥ २ ॥

दांत निकलने के समय उत्पन्न हुए रोग बच्चे को पीड़ित करते हैं। दांत के

निकलते ही वे रोग आप से आप नष्ट हो जाते हैं ॥ २ ॥

अथ गलगण्डपाके—

प्राचीगतं पाण्डुरसिन्दुवारमूलं शिशूनां गलके निबद्धम्।
हिनोति दन्तोद्भववेदनां च निःशेषमेकाण्डकुरण्ड एव ॥ ३ ॥

पूर्व की दिशा में गई हुई श्वेत संभालु की जड़ छोटे बच्चों के गले में बांधें तो दांत निकालने की पीड़ा तथा एक अण्ड कोष में हुआ २ कुरण्ड रोग भी सर्वथा दूर होता है ॥ ३ ॥ इति दन्तोद्भिदजरोगेषु।

अथ ताम्रचूडओजः—

यस्ताम्रचूडविहगोभयपार्श्वपक्षपुच्छैर्गवाज्यसहितैः कृतधूपनाङ्गः।
आरभ्य जन्मदिवसाद्दिनसप्तकं हि बालस्य तस्य न कुतश्चन भीतिरस्ति॥

जो वैद्य कुक्कुड के दोनों ओर के पंखों तथा पूंछ को गौ के घी के साथ मिला कर बच्चे को जन्म दिन से लेकर सात दिन तक धूप देता है उस बच्चे को किसी प्रकार का भय नहीं होता है ॥१॥ इतिराजमार्त्तण्डात्। इतिबालरोगाणांचिकित्सा। अथ ग्रहग्रस्तबालरोगाणां चिकित्सामाह। तत्राऽऽदौ सामान्यग्रहजुष्टानां चिकित्सा।

सहामुण्डीनिकोदीच्यकाथस्नानं ग्रहापहम्।
सप्तच्छदाभयनिशाचन्दनैश्चानुलेपनम् ॥ १ ॥

बच्चे को माषपर्णी, मुण्डी बूटी, सुगन्धवाला, इन सबका क्वाथ करके स्नान करावें तो सामान्य ग्रहबाधा नष्ट होती है। सतौना, हरड़, हल्दी, चन्दन इन सब को पीसकर लेप करें तो भी ग्रहबाधा नष्ट होती है ॥ १ ॥

अथ धूपः—सर्पत्वग्लशुनं मूर्वा सर्षपारिष्टपल्लवाः।
विडालविड्जालोममेषशृङ्गीवचा मधु ॥
धूपः शिशोर्ज्वरघ्नोऽयमशेषग्रहनाशनः ॥ १ ॥

सांप की कैंचुली, लहसुन, मूर्वामूल, सरसों, नीम के पत्ते, बिल्ली की विष्ठा, बकरी के लोम तथा मेढासिंगी, बच तथा शहद ॥ इन सबको मिलाकर बच्चों को धूप दी जाय तो उनके ज्वर का नाश होता है तथा सभी ग्रहों का नाश होता है ॥ १ ॥

अथ बालरोगे पर्पटीरसः—

रसं गन्धं समं शुद्धं तयोः कृत्वा तु कज्जलीम्।
लोहदर्व्यां घृताक्तायामाधाय कदलीदलैः ॥ १ ॥
छादयेदुपरिन्यस्तगोमयैर्बदरीन्धनात्।
शिखिनः कोमलादेव विधेया रसपर्पटी ॥ २ ॥

शुद्धपारा, शुद्धगंधक दोनों को समभाग लेकर कज्जली करें। फिर एक लोहे की कड़छी में घी मलकर उस कड़छी में कज्जली को डाल देवे। फिर केले के पत्तों को जो गोबर से लिपी हुई धरती पर बिछाये हुए हों उस पर उस कज्जली

बेर की लकड़ियों पर गरम कर के जब वह नरम सी पिघल जाये तो उसे केले के पत्ते पर बिछा देवे और ऊपर से दबा देवें। इस की जो पर्पटी बनेगी इसे रसपर्पटी कहते हैं ॥ २ ॥

पर्पट्या द्विगुणो जीरः सूर्यांशो रामठः स्मृतः।
दीयते मधुना तेषां शिशोर्गुञ्जाचतुष्टयम् ॥ ३ ॥

अब रसपर्पटी एक भाग लें, श्वेत जीरे का चूर्ण दो भाग लें, हींग बारहवां भाग लें। इस अनुपात से मिलाकर रखें। बच्चे को शहद से मिलाकर चार रत्तिभर चटावें ॥ ३ ॥

श्लेष्मपित्तानिलश्वासकासपीनसपाण्डुताः।
प्लीहाग्निसादशूलानि हन्यादस्य ज्वरं जवात् ॥ ४ ॥

इस से कफ, पित्त, वायु के रोग, श्वास, तथा कास, पीनसरोग, पाण्डुरोग, प्लीहारोग, अग्निमांद्य, शूलरोग तथा ज्वररोग शीघ्रता से नष्ट होते हैं ॥ ४ ॥

अथाष्टमङ्गलघृतम्—वचा कुष्ठं तथा ब्राह्मी सिद्धार्थकमथापि च।
सारिवा सैन्धवं चैव पिप्पली घृतमष्टकम् ॥ १ ॥
सिद्धं घृतमिदं मेध्यं पिबेत्प्रातर्दिने दिने।
दृढस्मृतिः क्षिप्रमेधाः कुमारो बुद्धिमान्भवेत् ॥ २ ॥

बच, कूठ, ब्राह्मी, श्वेत सरसों, शारिवा, सेंधानमक, पिप्पली इन सब को समभाग लेकर कल्क करें। इस से चौगुना घी लेकर, और घी से चौगना जल डालकर घृतपाक करें। इस घी को प्रातःकाल प्रतिदिन बच्चों को पिलावें यह घी मेधाजनक है। इस से स्मरणशक्ति दृढ होती है, मेधा तीव्र होती है तथा कुमार बुद्धिमान् होजाता है ॥ २ ॥

न पिशाचा न रक्षांसि न भूता न च मातरः।
प्रभवन्ति कुमाराणां पिबतामष्टमङ्गलम् ॥
बलिशान्तीष्टिकर्माणि कार्याणि ग्रहशान्तये ॥ ३ ॥

पिशाच, राक्षस, भूत, मातायें अर्थात् सभी अदृश्य रोग इस घी के पीनेवाले बच्चों को नहीं सताते ॥ तथा ग्रहादि शान्ति के लिये बलि, शान्ति तथा ग्रह के इष्टकर्म करने चाहियें। इस से ग्रहशान्ति होती है ॥ ३ ॥

अथ विशिष्टग्रहजुष्टानां चिकित्सा तत्र स्कन्दग्रहजुष्टस्य चिकित्सा—

स्कन्दग्रहोपसृष्टस्य कुमारस्य प्रशस्यते।
वातघ्नद्रुमपत्राणां क्वाथेन परिषेचनम् ॥ १ ॥

स्कन्दग्रह से युक्त बच्चे को वातनाशक पेड़ों के पत्तों के क्वाथ से परिषिञ्चन या स्नान कराना चाहिये ॥ १ ॥

देवदार्वादिःसर्पिः—देवदारूणि रास्नायां मधुरेषु गणेषु च।

सिद्धं सर्पिश्च सक्षीरं पातुमस्मै प्रदापयेत् ॥ २ ॥

देवदारु, रास्ना और मधुर गण के द्रव्यों से सिद्ध किया हुआ घी, दूध में मिलाकर बच्चे को पिलावें ॥ २ ॥

सर्षपादिधूपनम्—सर्षपाः सर्पनिर्मोको वचा काकादनी घृतम् ।

उष्ट्राजाविगवां चापि रोम्णामुद्धूपनं भवेत् ॥ ३ ॥

सरसों, साप की केंचली; बच, श्वेत रत्तियां, घी, ऊंट के बाल, बकरी के बाल, भेंड के बाल, गौ के बाल इन सब को समभाग लेकर धूप दें । इस से स्कन्दापस्मार का नाश होता है ॥ ३ ॥

सोमवल्ल्यादि—सोमवल्लीमिन्द्रवृक्षं बृहती बिल्वजे शमीम् ।

मृगादन्याश्च मूलानि ग्रथितानि विधारयेत् ॥ ४ ॥

सोमवल्ली, श्वेतकुटज, बड़ी कटेली, बिल पर उगा हुआ शमी अर्थात् जंडी का पेड़, इन्द्रायण की जड़ इन को धागे आदि में गूंथकर बच्चे के शरीर पर धारण करावें ॥ ४ ॥

निवेदनम्—

रक्तानि माल्यानि तथा पताका रक्तांश्च गन्धान्विविधांश्च भक्ष्यान् ।

घण्टां च देवाय बलिं निवेद्य सकुक्कुटं स्कन्दग्रहाभिधाय ॥ ५ ॥

लाल मालायें; लाल झण्डे, लाल रंग के सुगन्धित पदार्थ, विविध भक्ष्य और घण्टियां बांधे । तथा स्कन्दग्रह के लिये कुक्कुट के सहित बलि देवे ॥ ५ ॥

स्नानं त्रिरात्रं निशि चत्वरेषु कुर्यात्परं शान्तिपदैर्निवेद्य ।

गायत्रिपूताभिरथाद्भिरग्निं प्रज्वालयेद्वाऽऽहुतिभिश्च धीमान् ॥६॥

फिर रात के समय चौराहे पर बालक को तीन रात स्नान करावें और शान्तिवचनों या शान्तिपाठ का स्तवन करें । यह स्नान गायत्रीमंत्र (ओं भूर्भुवः स्वः, तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो योनः प्रचोदयात् ।" इसे गायत्रीमंत्र कहते हैं) से पवित्र किये हुए जलों से करें । फिर आहुतियों से अग्नि को प्रज्वलित करे ६

रक्षामतः प्रवक्ष्यामि बालानां पापनाशिनीम् ।

अहन्यहनि कर्तव्या याभिरद्भिरतन्द्रितैः ॥ ७ ॥

अब बालकों के पापों के लिये पापनाशन करने वाली रक्षा को लिखते हैं । जिन जलों से निरालस होकर वह रक्षा प्रतिदिन की जाती है ॥ ७ ॥

पाठः—तपसां तेजसां चैव यशसां वपुषां तथा ।

निधानं योऽव्ययो देवः स ते स्कन्दः प्रसीदतु ॥ ८ ॥

तप, तेज, यश तथा शरीरों का खजाना, वह विनाश रहित स्कन्ध देव तेरे लिये प्रसन्न होवे ॥ ८ ॥

ग्रहसेनापतिर्देवो देवसेनापतिर्विभुः ।

देवसेनारिपुहरः पातु त्वां भगवान्गुहः ॥ ९ ॥

ग्रहों के सेनापति देव, देवों के सेनापति विभुः और देवसेना के शत्रुओंका नाशक भगवान गुह तेरी रक्षा करे ॥ ६ ॥

देवदेवस्य महतः पावकस्य च यः सुतः।
गङ्गोमाकृत्तिकानां च स ते शर्म प्रयच्छतु ॥ १० ॥

जो देवों के देव महान अग्नि का पुत्र है, और गङ्गा, उमा तथा कृत्तिका का पुत्र है वह तुझे सुखी करे ॥ १० ॥

रक्तमाल्याम्बरधरो रक्तचन्दनभूषितः।
रक्तदिव्यवपुर्देवः पातु त्वां क्रौञ्चसूदनः ॥ ११ ॥

लाल माला तथा लाल कपड़े धारण करने वाला, लाल चन्दन से भूषित हुआ २ लाल तथा दिव्य शरीर वाला, क्रौंच को नाश करने वाला देव तेरी रक्षा करे ॥ ११ ॥ इति भावप्रकाशात्।

अथ स्कन्दापस्मारग्रहजुष्टस्य चिकित्सा—

बिल्वः शिरीषो गोलोमी सुरसादिश्च यो गणः।
परिषेके प्रयोक्तव्यः स्कन्दापस्मारशान्तये ॥ १ ॥

बिल का गूदा, सिरस की छाल, श्वेत दूब, तथा सुरसादिगण के द्रव्य इन सबको जल में उबालकर उस जल से बच्चे को स्नान करावें तो स्कन्दापस्माररोग शान्त होता है ॥ १ ॥

अथ सुरसादिर्गणो यथा—**सुरसा श्वेतसुरसा पाठा फञ्जी फणिज्झकः।**
सौगन्धिकं भूस्तृणकं राजिका श्वेतबर्बरी ॥२॥

काली तुलसी, श्वेत तुलसी, पाठा, भार्गी, गन्धपलाश, बृहत् गन्धतृण, गन्धतृण, राई, श्वेत बाबुई, तुलसी ॥ २ ॥

कट्फलं खरपुष्पा च कासमर्दश्च शल्लकी।
विडङ्गमथ निर्गुण्डी कर्णिकार उदुम्बरः ॥ ३ ॥

कायफल, बन की बाबुई तुलसी, कसौंदी, शिलारस, वायविडंग, निर्गुण्डी या संभालु, छोटा सोनालु, गूलर ॥ ३ ॥

बला च काकमाची च तथा च विषमुष्टिका ॥ ४ ॥

बला, मकोय, घोड़ा नीम ॥ ४ ॥

कफक्रिमिहरः ख्यातः सुरसादिरयं गणः ॥
अष्टमूत्रे विपक्वं च तैलमभ्यञ्जने हितम् ॥ ५ ॥

यह सुरसादिगण कफ तथा क्रिमिनाशक है। इसी सुरसादिगण का कल्क करलें, इससे चौगुना तिल का तेल लें और तेल से चौगुना गौ भैंस आदि आठों प्राणियों का मूत्र डालकर तेल पका लेवे। इस तेल की मालिश करें तो बच्चे को लाभ होता है ॥ ५ ॥

अथ मूत्राष्टकमाह—**गोजाविमाहिषाश्वानां खरोष्ट्रकरिणां तथा।**

मूत्राष्टकमिति ख्यातं सर्वशास्त्रेषु संमतम् ॥ १ ॥

गौ, बकरी, भेड़, भैंस, घोड़ी, गधी, ऊंटनी, हाथी इन सबके मूत्रों को मूत्राष्टक कहते हैं। ये आठों मूत्र सभी शास्त्रों में सम्मत है ॥ २ ॥

काकोल्यादिघृतम्—क्षीरिवृक्षकषायेण काकोल्यादिगणेन च ।
विपक्वव्यं घृतं पश्चाद्दातव्यं पयसा सह ॥ २ ॥

पीपलादि क्षीरी वृक्षों के क्वाथ को डालकर, तथा काकोल्यादिगण का कल्क डालकर गौ का घी पकावें। इस घी को दूध में डालकर बच्चे को पिलावें ॥२॥

काकोल्यादिर्गणो यथा—काकोली क्षीरकाकोली जीवको ऋषभस्तथा ।
ऋद्धिर्वृद्धिस्तथा मेदा महामेदा गुडूचिका ॥ १ ॥

काकोली, क्षीरकाकोली, जीवक, ऋषभक, ऋद्धि वृद्धि, मेदा, महामेदा, गिलोय१

मुद्गपर्णी माषपर्णी पद्मकं वंशरोचना ।
शृङ्गी प्रपौण्डरीकं च जीवन्ती मधुयष्टिका ॥ २ ॥

मूंगोणी, माषौणी, पद्म ख, वंशलोचन, काकड़ासिंगी, पुण्डरीककाष्ठ, जीवन्ती, मुलठ्ठी ॥ २ ॥

द्राक्षा चेति गणो नाम्ना काकोल्यादिरुदीरितः ।
स्तन्यकृद् बृंहणो वृष्यः पित्तरक्तानिलापहः ॥ ३ ॥

दाख ये सभी पदार्थ काकोल्यादिगण कहाते हैं। इससे दूध बढ़ता है, यह बृंहण होता है, वृष्य होता है तथा रक्तपित्त और वायु का नाश करता है ॥३॥

उत्सादनधूपनधारणानि—उत्सादनं वचाहिङ्गुयुक्तमत्र प्रकीर्तितम् ।
गृध्रोलूकपुरीषाणि केशो हस्तिनखो घृतम् ॥१॥

बच तथा हींग से बच्चे के शरीर का उत्सादन या उबटन करे। गीध तथा उल्लू की बीठ, केश, हाथी के नख, घी ॥ १ ॥

वृषभस्य च रोमाणि योज्यान्युद्धूपने सदा ।
अनन्ता कुक्कुटीबिम्बीमर्कटाश्चापि धारयेत् ॥ २ ॥

सांढ के रोम इन सबको एकत्र करके बच्चे को सदा धूप देवे। अनन्तमूल, सीमल की जड़, बिम्बाफल, अपामार्ग की जड़ इन में से कोई एक बच्चों को गले आदि में धारण करावें ॥ २ ॥

अथ निवेदनम्—पक्वान्यामानि मांसानि प्रसन्नं रुधिरं पयः ।
भूतौदनं निवेद्याथ स्कन्दापस्मारिणे वटे ॥ ३ ॥
चतुष्पथे कारयेच्च स्नानं तेन ततः पठेत् ।

पकाये हुए वा कच्चे मांस, स्वच्छ खून, दूध, ये सभी भूतों का भोज्य पदार्थ वड़ के पेड़ के नीचे स्कन्धापस्मार ग्रह के लिये निवेदन करे अर्थात् रखे ॥३॥

पाठः—स्कन्दापस्मारसंज्ञो यः स्कन्दस्य दयितः सखा ।

विशाखः स शिशोरस्य शिवायास्तु शुभाननः ॥ ४ ॥

और चौक में बच्चे को इनही द्रव्यों से स्नान करावे और यह वाक्य पढ़े, " स्कन्दापस्मारसंज्ञो यः स्कन्दस्य दयितः सखा। विशाखः सशिशोरस्य शिवायास्तु शुभाननः।" अर्थात् स्कन्दग्रह का प्रिय मित्र जो स्कन्दापस्मार है जिसकी शाखा अर्थात् हाथ पैरादि नहीं है, तथा जिसका मुंह शुभ है ऐसा ग्रह इस बच्चे के लिये कल्याणकारी हवे ॥ ४ ॥

अथ शकुनिग्रहजुष्टस्य चिकित्सामाह—

शकुनिग्रहजुष्टस्य कार्यं वैद्येन जानता।
वेतसाम्रकपित्थानां क्वाथेन परिषेचनम् ॥ १ ॥

शकुनीग्रह जुष्ट रोगी को विद्वान वैद्य बेत, आम तथा कैथ से पकाये हुए जल से सिंचन करे ॥ १ ॥

ह्रीबेरमधुकोशीरसारिवोत्पलपद्मकैः।
लोध्रप्रियंगुमञ्जिष्ठागैरिकैः प्रदिहेच्छिशुम् ॥ २ ॥

सुगन्धबाला, मुलठ्ठी, खस, सारिवा, नीलोत्पल, पद्मकाष्ठ, लोध, प्रियंगु, मंजीठ, गेरु इन सबको पीसकर बच्चे के शरीर पर लेप करदेवे ॥ २ ॥

स्कन्दग्रहोक्तधूपाश्च हिता अत्र भवन्ति हि।
स्कन्दापस्मारशमनं घृतमत्रापि पूजितम् ॥ ३ ॥

इस रोग में स्कन्दग्रह में कही हुई धूपें भी देवे उनसे भी हित होता है। स्कन्दापस्मार की शान्ति करने वाला घी भी इस रोग में लाभ देता है ॥३॥

धारणमाह—शतावरीमृगेर्वारुनागदन्तीनिदिग्धिकाः।
लक्ष्मणां सहदेवीं च बृहतीं चापि धारयेत् ॥ ४ ॥

शतावरी, बड़ी इन्द्रायण की जड़, नागदन्ती या हाथी सुंडी, छोटी कटेली, लक्ष्मणा, सहदेवी, बड़ी कटेली इन में से किसी एक औषध को बच्चे के गले आदि में धारण करावे ॥ ४ ॥

अथ निवेदनम्—तिलतण्डुलकं माला हरितालं मनःशिला।
बलिरेषां करञ्जे तु निवेद्यो नियतात्मना ॥ ५ ॥

तिल, चावल, माला, हड़ताल, मनसिल इन सबको करंज के पत्तों पर रख कर संयमी चित्त वाला वैद्य बलि देवे ॥ ५ ॥

निकुम्भोक्तेन विधिना स्नापयेत्तं ततः पठेत्।
पाठः—अन्तरिक्षचरा देवी सर्वालंकारभूषिता।
अयोमुखी सूक्ष्मतुण्डा शकुनी ते प्रसीदतु ॥ ६ ॥

निकुम्भोक्त विधि से बच्चे को स्नान करावे फिर आगे लिखे श्लोकों को पढ़े— " अन्तरिक्ष चरा देवी सर्वालंकारभूषिता। अयोमुखी सूक्ष्मतुण्डा, शकुनी ते प्रसीदतु६

दुर्दर्शना महाकाया पिङ्गाक्षी भैरवस्वरा।
लम्बोदरी शङ्कुकर्णी शकुनी ते प्रसीदतु ॥ ७ ॥

दुर्दर्शना,महाकाया,पिङ्गाक्षी,भैरवस्वरा।लम्बोदरी,शंकुकर्णी शकुनी ते प्रसीदतु" ॥७॥

अर्थात् आकाश में विचरनेवाली दिव्यदेहवाली अर्थात् इन आंखों से न दीखनेवाली, सब अलंकारों अर्थात् सजावट से भूषित हुई २, लोहे के मुंहवाली सूक्ष्म मुंहवाली शकुनी नामक सूक्ष्मग्रहरोग तेरे पर प्रसन्न हो॥ तथा वह देखने में भद्दा है, बड़े शरीरवाला है, भूरी आंखोंवाला है, उस का शब्द भयानक है, पट लंबा है, कान कीले जैसे लंबे हैं ऐसा शकुनीनामक ग्रहरोग तुझ पर प्रसन्न हो। अर्थात् तुझ से दूर होवे ॥ ७ ॥

अथ रेवतीग्रहजुष्टस्य चिकित्सामाह—

अश्वगन्धाऽजशृङ्गी च सारिवाऽथ पुनर्नवा।
सहा विदारी ह्येतासां क्वाथेन परिषेचनम् ॥ १ ॥

असगन्ध, मेढासिंगी, सारिबा, पुनर्नवा या इटसिट, सेवती का पुष्प, विदारीकन्द इन सब का क्वाथ कर के बालक को उस से सिंचन करे ॥ १ ॥

तैलाभ्यङ्गः—**तैलमभ्यञ्जने कार्यं कुष्ठे सर्जरसे तथा।**
पलंकषाया नलदे तथा गौरकदम्बके ॥ २ ॥

कूठ तथा राल का कल्क डालकर तेल पकावे उस तेल की मालिश करे। गूगल, खस के समान पीले रंग का लामज्जक तृण, तथा श्वेतकदम्ब इन सब के कल्क से तेल पकाकर बच्चे को मालिश करे ॥ २॥

सर्पिःपानम्—**धवाश्वकर्णककुभशाल्मकीतिन्दुकेषु च।**
काकोल्यादिगणे वाऽपि सिद्धं सर्पिः पिबेच्छिशुः ॥ ३ ॥

धौ की छाल, साखु की छाल, अर्जुन की छाल, सालभेद, तेंदु की छाल इन से पकाया हुआ घी बच्चे को पिलायें अथवा काकोल्यादिगण के द्रव्यों से गौ का घी पका लें। इस घी को पिलाने से बच्चों के सभी रोग दूर होते हैं ॥३॥

प्रदेहधूपनो—**कुलित्थाः शङ्खचूर्णं च प्रदेहः पूर्वगन्धिकः।**
गृध्रोलूकपुरीषाणि यवान्यवफलो घृतम् ॥ ४ ॥
संध्ययोरुभयोः कार्यमेतद्धूपनं शिशोः।

कुलथी तथा शंख के चूर्ण तथा पूर्वग्रहचिकित्सा में कहे हुए सुगंधवाला आदि गंधद्रव्यों को पीसकर बच्चे के शरीर पर लेप करे। तथा गीध की बीठ तथा उल्लु की बीठ, अजवायन, जौ, घी इन सब को एकत्र कर के ॥ ४ ॥ दोनों संध्याकालों में बच्चों को धूप देवे ॥

बलिनिवेदनम्—**शुक्लाः सुमनसो लाजाः पयः शाल्योदनं दधि ॥ ५ ॥**

श्वेत फूल, धान की खीलें, दूध, शालीधान्य, दही ॥ ५ ॥

बलिर्निवेद्यो गोतीर्थे रेवत्यैः प्रयतात्मना।
स्नानं धात्रीकुमाराभ्यां संगमे कारयेद्भिषक्॥ ६॥

इन सब की बलि गोतीर्थ पर संयमी वैद्य रेवती के लिये देवे। तथा संगम स्थान पर धाय तथा बच्चे को स्नान करावे॥ ६॥

पाठः—**नानाशस्त्रधरा देवी चित्रमाल्यानुलेपना।**
चलन्कुण्डलिनी श्यामा रेवती ते प्रसीदतु॥ ७॥

तथा आगे लिखे श्लोकों को बोले—"नानाशस्त्रधरादेवी चित्रमाल्यानुलेपना। चलत्कुण्डलिनी श्यामा रेवती ते प्रसीदतु॥ ७॥

उपासते यां सततं देव्यो विविधभूषणाः।
लम्बा कराला विनता तथैव बहुपुत्रिका॥
रेवती शुष्कनासा च तुभ्यं देवी प्रसीदतु॥ ८॥

उपासते यां सततं देव्यो विविधभूषणाः। लम्बा कराला विनता तथैव बहुपुत्रिका। रेवती शुष्कनासा च तुभ्यं देवी प्रसीदतु॥ ८"॥

अर्थात् नाना प्रकार के शस्त्रों को धारण की हुई दिव्य देहवाली, विचित्र माला तथा लेप धारण की हुई, कानों के कुण्डल जिस के हिल रहे हैं, जिस का रंग श्याम है, ऐसी रेवती तेरे पर प्रसन्न हो॥ ७॥

जिस को विविध भूषणोंवाली अन्य दिव्य देहवाली देवियें निरन्तर पूजती हैं। जो लंबी है, भयंकर है, झुकी हुई है तथा जिस के बहुत पुत्र हैं, और जिसकी नाक शुष्क रहती है। वह रेवती देवी तेरे पर प्रसन्न होवे॥ ८॥

अथ पूतनाग्रहजुष्टस्य चिकित्सामाह परिषेचनम्—

कपोतवङ्का स्योनाको वरुणः पारिभद्रिकः।
आस्फोता चैव योज्या स्युर्बालानां परिषेचने॥ १॥

ब्रह्मीबूटी, स्योनाक की छाल, वरुण की छाल, पारिभद्र अर्थात् नीम की छाल अपराजिता इन सबका क्वाथ करके बच्चे पर सिंचन करे अथवा इससे स्नान करावें१

तैलम्—**नवा पयस्या गोलोमी हरितालं मनःशिला।**
कुष्ठं सर्जरसश्चैव तैलार्थे कल्क इष्यते॥ २॥

नई क्षीरकाकोली, श्वेत दूर्वा, वा बच, हड़ताल, मनसिल, कूठ, राल इन सब को समभाग लेकर कल्क करे। इस कल्क से चतुर्गुण तिल का तेल, तेल से चौगुना जल मिलाकर पकायें। तेल मात्र शेष रहे तो छानकर बच्चे को इसकी मालिश करे२

तुगाक्षीरी घृतम्—**हितं घृतं तुगाक्षीर्या संसिद्धं मधुनाऽपि च।**

वंशलोचन का कल्क करके चतुर्गुण घी में डाले। और घी से चौगुना जल डालकर घी पाक कर ले। इस घी में शहद मिलाकर पिलाने से बच्चे का रेवती ग्रह बाधा होती है॥

कुष्ठादिधूपः—कुष्ठतालीसखदिराः स्यन्दनोऽर्जुन एव च ॥ ३ ॥

कुष्ठ, तालीसपत्र, खैर की छाल, तिनिश वा सादनगाछ, अर्जुन, इनकी छाल॥३

पनसः ककुभश्चापि मज्जानो बदरस्य च ।
कुक्कुटास्थि घृतं चापि धूपनं सह सर्षपैः ॥ ४ ॥

कटहल की मज्जा, अर्जुन के फल की मज्जा, बेर की मज्जा, कुक्कुड़ कीहड्डियां घी तथा सरसों इनकी धूप देवे ॥ ४ ॥

धारणमाह—काकादनीं चित्रफलां बिम्बीं गुञ्जां च धारयेत् ।

श्वेत रत्तियां, कटेली के फल, बिम्बाफल, लाल रत्तियां इन में से किसी एक को धारण करे ॥

बलिःस्नानश्च—मत्स्यौदनं बलिं दद्यात्कृशरां पललं तथा ॥ ५ ॥

मछली भात, कृशरा तथा मांस की बलि को ॥ ५ ॥

शरावसंपुटे कृत्वा तस्यै शून्ये गृहे भिषक् ।
उत्सृष्टान्नाभिषिक्तस्य शिशोः स्नपनमिष्यते ॥ ६ ॥

एक शरावे में रखकर शून्यगृह में वैद्य रख देवे । फिर अन्न दान कराकर बच्चे को अभिषिञ्चन कर के स्नान करावे ॥ ६ ॥

पुनःधूपनम्—कुष्ठतालीसखदिरं चन्दनं स्यन्दनं तथा ।
देवदारु वचा हिङ्गु कुष्ठं गिरिकदम्बकः ।
एला हरेणवश्चापि योज्या उद्धूपने सदा ॥ ७ ॥

कूठ, तालीसपत्र, खैर, चन्दन लाल, सादनगाछ, देवदार, बच, हींग, कूठ, पर्वतीय कदम्ब या धाराकदम्ब, इलायची, रेणुका इन सब को पीसकर एकत्र कर सदा धूप देवे ॥ ७ ॥

पाठः—मलिनाम्बरसंवीता मलिना रूक्षमूर्धजा ।
शून्यागाराश्रया देवी दारकं पातु पूतना ॥ ८ ॥

"मलिनाम्बरसंवीता मलिना रूक्षमूर्धजा । शून्यागाराश्रया देवी दारकं पातु पूतना" मैले वस्त्रों से युक्त मैली, रूखे बालोंवाली, सूने मकान में रहनेवाली पूतना देवी बच्चे की रक्षा करे ॥ ८ ॥

अथ गन्धपूतनाग्रहजुष्टस्य चिकित्सा—

तिक्तद्रुमाणां पत्रेषु क्वाथः कार्योऽभिषेचने ॥ १ ॥

जो बिल आदि तिक्त रसवाले पेड़ हैं उन के पत्तों के क्वाथ से बच्चे को सिंचन करना चाहिये ॥ १ ॥

अथ तिक्तद्रुमानाह—बिल्वः पटोलः क्षुद्रा च गुडूची वासकस्तथा ।
विसर्पकुष्ठनुत्ख्यातो गणोऽयं पञ्चतिक्तकः ॥ १ ॥

बिल, पटोलपत्र, छोटी कटेली, गिलोय, बांसा । इनको पञ्चतिक्त गण कहा जाता है । इससे विसर्प तथा कुष्ठ का नाश होता है ॥ १ ॥

पिप्पल्यादिघृतम्—पिप्पली पिप्पलीमूलं वर्गो मधुरकोऽपि च।
शालिपर्णी बृहत्यौ च घृतार्थं सममाहरेत् ॥ २ ॥

पिप्पली, पिप्पलामूल, मधुर वर्ग के द्रव्य, शालिपर्णी, छोटी कटेली, बड़ी कटेली इन सबको समभाग लेकर विधिपूर्वक घी पकावें। इस घी को बच्चों को पिलावें २

प्रदेहः—सर्वगन्धैः प्रदेहश्च गात्रे चाक्ष्णोश्च शीतलैः।

सर्वगन्ध अर्थात् इलायची, तेजपात, नागकेसर, दारचीनी, कपूर, कंकोल, अगर, केशर, लवंग इन सबको जल से पीसकर बच्चे के शरीर पर लेप करे। आंखों पर शीतल चन्दनादि पदार्थों का लेप करे॥

धूपनम्—पुरीषं कौक्कुटं केशाश्चर्मसर्पभवं तथा ॥ ३ ॥
जीर्णं च वीद्याधोवासो धूपनार्थोपकल्पयेत्।

कक्कुट की बीठ, केश या बाल, सांप की केंचुल या चमड़ा ॥ ३ ॥ फटा हुआ नीचे पहनने का वस्त्र इन सबको मिलाकर धूप देवे॥

धारणम्—कुक्कुटीं मर्कटीं बिम्बीमनन्तां चापि धारयेत् ॥ ४ ॥

कुक्कुटी अर्थात् सीमल की जड़, वा रत्तियों की जड़ (कुक्कुटी—शाल्मली वृक्षे, "उच्चटा बहुलिङ्गी स्यात्सैवोक्ताकुक्कुटीक्वचित्" रत्ना.) अपामार्ग की जड़ वा कौंच की जड़, बिम्बाफल, अनन्तमूल इनको बच्चे के गले आदि में धारण करावे॥

अथ निवेदनंस्नानञ्च—मांसमन्नं तथा पक्वं शोणितं च चतुष्पथे।
निवेद्यमन्तश्च गृहे शिशोः स्नपनमिष्यते ॥ ५ ॥

पकाये हुए मांस तथा अन्न और खून इन सब को चौराहे में रखे और अन्दर के घर में बच्चे को स्नान करावे ॥ ५ ॥

पाठः—कराला पिङ्गला मुण्डा काषायाम्बरसंवृता।
देवी बालमिमं प्रीता रक्षताद्गन्धपूतना ॥ ६ ॥

"कराला पिङ्गला मुण्डा काषायाम्बर संवृता। देवी बालमिमंप्रीता रक्षताद्गन्धपूतना॥" इस पाठ को करे। इस का अर्थ है, भयंकर, भूरे रंग की, मुण्डी हुई, गेरुवे वस्त्रों से ढकी हुई दिव्य गुणवाली गंधपूतना प्रसन्न होकर इस बालक की रक्षा करे ॥ ६ ॥

अथ शीतपूतनाग्रहजुष्टस्य चिकित्सामाह। गोमूत्रादिसिद्धं तैलम्—

गोमूत्रं बस्तमूत्रं च मुस्तामपरदारु च।
कुष्ठं च सर्वगन्धांश्च तैलार्थमवचारयेत् ॥ १ ॥

गौ का मूत्र, बकरी का मूत्र ये दोनों मिलित तेल से चौगुने। तेल एक भाग, कल्कार्थ मोथा, देवदार, कूठ तथा सर्वगंध (अर्थात् "चातुर्जातककर्पूर कक्कोलागुरुसिल्हकम्। लवंगसहितञ्चैव सर्वगंधं विनिर्दिशेत् ॥ प० प्र० अथवा "चातुर्जातक कर्पूरं कक्कोलागुरु कुङ्कुमम्। लवङ्गसहितञ्चैव सर्वगंधं विनिर्दिशेत् ॥

भा ॥ अर्थात् दारचीनी, इलायची, तेजपात, नागकेसर; कपूर, कंकोल, अगर, केसर, लौंग अथवा केसर की जगह शिलारस डालकर इन सब को लेवे । इन्हें सर्वगन्ध कहते हैं) इन में से प्रत्येक द्रव्य समभाग लेकर कल्क कर इस कल्क को तेल से चौथाई भाग लेवे । सब को एकत्र कर के तैलपाक कर लेवे। इस तेल की बच्चे के शरीर पर मालिश करे ॥ १ ॥

घृतम्—रोहिणीनिम्बखदिरपलाशककुभत्वचः ।
निष्काथ्य तस्मिन्निष्काथे सक्षीरे विपचेद् घृतम् ॥ २ ॥

कुटकी, नीम की छाल, खैर की छाल, ढाक की छाल, अर्जुन की छाल । इन सब को समभाग लेकर १६ गुना जल डालकर क्वाथ करे । इसे चौथाई भाग शेष रख । यह क्वाथ ४ सेर, गौ का दूध ४ सेर, घी १ सेर । विधिपूर्वक पाक करे । इस घी को बच्चे को पिलावे ॥ २ ॥

धूपनम्—गृध्रोलूकपुरीषाणि बस्तगन्धामहित्वचम् ।
निम्बपत्राणि च तथा धूपनार्थं समाहरेत् ॥ ३ ॥

गीध, तथा उल्लू की बीठ, अजमोदा, सांप की केंचुली, नीम के पत्ते इन सब की धूप दे । इस से बच्चे की शीतपूतनाग्रह की शान्ति होती है ॥ ३ ॥

धारणम्—धारयेद्वापि गुञ्जां च बलां काकादनीं तथा ।

लालरत्तियां, खिरेंटी, श्वेतरत्तियां इन को बालक के शरीर पर धारण करावे॥

तर्पणम्—नद्यां मुद्गौदनश्चापि तर्पयेच्छीतपूतनाम् ॥ ४ ॥

मूंग की दाल तथा भात से नदी के किनारे जाकर शीतपूतना को तर्पण करे॥४

स्नानमुपहारश्च—जलाशयान्ते बालस्य स्नपनं चोपदिश्यते ।
देव्यै देयश्चोपहारो वारुणी रुधिरं तथा ॥ ५ ॥

जलाशय या किसी जलकुण्ड की जगह बच्चे को स्नान करावे । तथा शीतपूतना देवी को वारुणी मद्य तथा रक्त की भेंट या उपहार देवे ॥ ५ ॥

पाठः—मुद्गौदनाशिनी देवी सुराशोणितपायिनी ।
जलाशयरता नित्यं पातु त्वां शीतपूतना ॥ ६ ॥

"मुद्गौदनाशिनी देवी सुराशोणितपायिनी । जलाशयरता नित्यं पातु त्वां शीतपूतना" इस का पाठ करें, अर्थात् मूंग की दाल तथा चावल खानेवाली, सुरा अर्थात् मद्य तथा रक्त को पीनेवाली, जलाशयों से प्रेम करनेवाली अर्थात् वहीं निवास करनेवाली दिव्य शरीरधारिणी शीतपूतना इस बालक की रक्षा करे॥६

अथ मुखमण्डनिकाग्रहजुष्टस्य चिकित्सामाह । परिषेचनम्—

कपित्थबिल्वतर्कारीवासागन्धर्वहस्तकाः ।
कुबेराक्षी च योज्यास्तु बालानां परिषेचने ॥ १ ॥

कैथ की छाल, बिल की छाल, अरणी की छाल, बांसा की जड़ वा पत्ते,

एरण्ड की जड़ वा पत्ते, पाटला या पाढ की छाल इन सब को जल में पकाकर बच्चों को उस जल से सिंचन करना चाहिये ॥ १ ॥

तैलम्—**स्वरसैर्भृङ्गवृक्षाणां तथैव हयगन्धया।**

तैलं वचां स संयोज्य पचेदभ्यञ्जने शिशोः ॥ २ ॥

भांगरा का स्वरस तथा अश्वगंधा का स्वरस चार २ सेर लेवे अथवा दोनों को दो २ सेर लेकर मिलित चार सेर लेवे। तिल का तेल एक सेर लेवे, बच का कल्क एक पाव लेवे। सब को मिलाकर तैल पाक करे। इस तेल को बच्चे के शरीर पर मले तो मुखमण्डनिकाग्रह शान्त होता है ॥ २ ॥

वचादिधूपनम्—**वचा सर्जरसं कुष्ठं सर्पिश्चोद्धूपने हितम्।**

बच, राल, कूठ, घी इन सब को एकत्र करके धूप देने से बच्चे को लाभ होता है॥

उपहारः—**वर्णकं चूर्णकं माल्यमञ्जनं पारदं तथा ॥ ३ ॥**

मनःशिलां चोपहरेद्गोष्ठमध्ये बलिं ततः।

पायसं सपुरोडाशं तद्बल्यर्थमुपाहरेत्।

हड़ताल, चूना, माला, सौवीर अंजन, पारा॥३॥ मनसिल इन सबको उपहार में देवे। तथा गोशाला के मध्य में खीर तथा घी इनकी बलि देवे ॥

स्नानम्—**मन्त्रपूताभिरद्भिश्च तत्रैव स्नपनं हितम् ॥ ४ ॥**

मन्त्रों से पवित्र हुए २ जल से बच्चे को गोशाला में ही स्नान करावे ॥४॥

जलाभिमन्त्रणमन्त्रमाह—**अलंकृता कामवती सुभगा कामरूपिणी।**

गोष्ठमध्यालयरता पातु त्वां मुखमण्डिका ॥१॥

अलंकारों से युक्त, कामना वाली, सौभाग्यवती, सुन्दर तथा यथेच्छ रूप वाली गोशाला के मध्य के मकानों में रहने वाली मुखमण्डिका इस बालक की रक्षा करे। ऐसे अर्थ वाले "अलंकृता कामवती सुभगा कामरूपिणी। गोष्ठमध्यालयरता पातुं त्वां मुखमण्डिका ॥" इस श्लोक से जल को अभिमन्त्रित करके बच्चे को स्नान करावे ॥ १ ॥

अथ नैगमेयग्रहजुष्टस्य चिकित्सामाह–परिषेचनम्—

बिल्वाग्निमन्थपूतीकैः कार्यं स्यात्परिषेचनम्।

बिल की छाल, अरणी की छाल, पूतिकरंज की छाल इन सबको समभाग लेकर जल में पकाकर बच्चे को इस जल से सिंचन करे॥

प्रियंग्वादितैलम्—**प्रियंगुसरलानन्ताशतपुष्पाकुटंनटैः ॥ १ ॥**

पचेत्तैलं सगोमूत्रं दधिमस्त्वम्लकाञ्जिकैः।

प्रियंगु, सरलकाष्ठ, अनन्तमूल, सौंफ, नागरमोथा ॥ १ ॥ इन में से प्रत्येक द्रव्य को समभाग लेकर कल्क करे। इस कल्क से चौगुना तिल का तेल लें। और गोमूत्र, दही का जल, तथा खट्टी कांजी इन में से प्रत्येक द्रव्य तेल के बराबर भाग डाल २ कर पकावे। इस तेल की बच्चे को मालिश करे॥

धारणम्—वचां वयस्थां जटिलां गोलोमीं चापि धारयेत् ॥ २ ॥

बच, हरड़, जटामांसी, श्वेतदूर्वा इन में से किसी एक को बच्चे को धारण करावें २

उत्सादनं—उत्सादनं हितं चात्र स्कन्दापस्मारनाशनम् ।

स्कन्दापस्मार में कहा हुआ (उत्सादनं वचाहिंगुयुक्तमत्रप्रकीर्तितम् ।) बच तथा हींग का उबटना बनाकर बच्चे को मलें ।

धूपनम्—कमठोलूकगृध्राणां पुरीषाणि पितृग्रहे ॥ ३ ॥

धूपः सुप्ते जने कार्यो बालस्य हितमिच्छता ।

कछुए की बीठ, उल्लू की बीठ, गीध की बीठ इन सबको एकत्र करके पितृग्रह में॥३॥जब लोग सोये हुए हों तब इनकी धूप देनी चाहिये,इससे बालक का हित होता है॥

निवेदनम्—तिलतण्डुलकं माल्यं भक्ष्यांश्च विविधानपि ॥ ४ ॥

कौमारभृत्यमेषाय प्लक्षमूले निवेदयेत् ।

तिल तण्डुलक अर्थात् तिल चावल,माला तथा विविध प्रकार के भक्ष्य पदार्थ ॥४॥ कुमार के रक्षक रूपी मेंढे के लिये पिलखन वृक्ष की जड़ में निवेदन करे ॥

स्नानम्—अधस्तात्क्षीरवृक्षस्य स्नपनं चोपदिश्यते ॥ ५ ॥

क्षीरवृक्ष अर्थात् पिलखनादि क्षीरी वृक्ष के नीचे बच्चे को स्नान करावे ॥५॥

पाठः—अजाननश्चलन्विभ्रूः कामरूपी महायशाः ।

बालं पालयतादेवो नैगमेयोऽभिरक्षतु ॥ ६ ॥

" अजाननश्चलन्विभ्रूः कामरूपी महायशाः । बालं पालयिता देवो नैगमेयोऽभिरक्षतु॥" अर्थात् बकरी के समान मुंहवाला,भवें चलानेवाला,मनमाने रूपवाला, महा यशवाला, नैगमेयग्रह इस बालक की रक्षा करे ॥ ६ ॥ इति ग्रहग्रस्तबालरोगाणां चिकित्सा ॥

अथ ग्रन्थान्तरे उत्फुल्लिकालक्षणमाह—

आध्मानवातसंफुल्लो दक्षकुक्षौ शिशोर्भवेत् ।

उत्फुल्लिका सा विख्याता श्वासश्वयथुसंकुला ॥ १ ॥

बच्चे के पेट में आध्मान होकर वायु से दांयी कुक्षि अर्थात् पसलियों के नीचे का भाग फूल जाता है । इस से बच्चे को श्वासरोग होजाता है तथा शोथ अर्थात् छाती में तथा श्वासनाली में सूजन होजाता है । (इसे ही लोक में बच्चों का पसली चलना वा डब्बारोग कहते हैं) इस रोग को उत्फुल्लिकारोग कहते हैं॥१॥

अथैतस्य चिकित्सामाह—निःसारयेज्जलौकाभी रक्तं च जठरात्तदा ।

इस समय बच्चे के पेट में से जौंक लगवाकर रक्त निकलवावे ॥

कर्कोटादिचूर्णम्—कर्कोटनागरामेघकङ्कोलातिविषाभवम् ॥ १ ॥

ककोड़ा, सोंठ, मोथा, कंकोल, अतीस । इन सबको समभाग लेकर चूर्ण करके ॥

चूर्णं दुग्धेन संमिश्रं पाययेन्मातरं भिषक् ।

धात्रीं वा पाययेत्सद्यः क्षीरदोषनिवारणम् ॥ २ ॥

दूध से मिलाकर बच्चे की माता को पिला देवे। अथवा धाय को पिला देवे। इस से तुरन्त ही दूध के दोष निवृत्त होजाते हैं ॥ २ ॥

अग्निस्वेदादि—**अग्निना स्वेदयेद्वाऽपि दाहयेच्च शलाकया।**
जठरे बिन्दुकाकारं पृष्ठभागे यथा ध्रुवम् ॥ ३ ॥

बच्चे के पेट तथा छाती को अग्नि से स्वेद देवे, अथवा लोहे की शलाका को गर्म कर के पेट पर बिन्दु के आकार में जला देवे। तथा पीठ के भाग पर भी बिन्दु के समान जला देवे ॥ ३ ॥

विल्वमूलकादि—**बिल्वमूलकं नीरदो वृकी त्रैफलं तथा सिंहिकाद्वयम्।**
गौडमिश्रितं क्वथितं समं पाययेच्छिशुं फुल्लिकापहम् ४

बिल की जड़, मोथा, पाठा, हरड़, बहेड़ा, आंवला, छोटी कटेली, बड़ी कटेली इन सब का क्वाथ कर के गौड़ अर्थात् गुड की शराब के साथ समभाग मिलाकर बच्चे को पिलावे तो फुल्लिका का नाश होता है ॥ ४ ॥

पिप्पल्यादि चूर्णम्—**पिप्पली ग्रन्थिकं विश्वा त्रायमाणा च दार्विका।**
पथ्येभपिप्पली भार्गी लवङ्गं टङ्कणस्तथा ॥ ५ ॥

पिप्पली, पिप्पलामूल, सोंठ, त्रायमाण, दारुहल्दी, हरड़, गजपीपल, भार्गी लौंग, सुहागा ॥ ५ ॥

कुमारीबालपथ्ये च सैन्धवस्त्वाजवारिणा।
घर्षितं पाययेत्प्रातर्द्विटङ्कं फुल्लिकापहम् ॥ ६ ॥

घी कुमारी का गूदा, छोटी हरड़, सेंधानमक इन सब का चूर्ण कर के बकरी के मूत्र से मिलाकर दो छटांक भर मात्रा बच्चे को प्रातःकाल पिला देवे तो फुल्लिका का नाश होता है ॥ ६ ॥ इति वैद्यविलासात् ॥

अथ पथ्यापथ्यम्—**यत्पथ्यं यदपथ्यं च नृणामुक्तं ज्वरादिषु।**
तत्तद्विधेयमौचित्याद्बालानां तेषु जानता ॥ १ ॥

जो पथ्य वा अपथ्य ज्वरादि रोगों में मनुष्यों के लिये कहे गये हैं, उन्हीं पथ्यापथ्यों को ज्ञानी वैद्य सोच समझकर बच्चों को भी देवे ॥ १ ॥

पूर्वं पथ्यमपथ्यं च मन्दाग्नौ यत्प्रकीर्तितम्।
औचित्याद्योजयेज्जाते बालानां पारिगर्भिके ॥ २ ॥

जो पहले मन्दाग्निरोग में पथ्यापथ्य देना लिखा है उसी पथ्य अपथ्य को बच्चों के पारिगर्भिकरोग में विचार कर देना चाहिये ॥ २ ॥

आगन्तून्मादवातानां पथ्यापथ्यं यदीरितम्।
औचित्याद्योजयेत्तत्र बालेषु ग्रहरोगिषु ॥ ३ ॥

आगन्तुक उन्माद, वातरोग इन दोनों में जो पथ्यापथ्य कहा गया है, वही

पथ्यापथ्य ग्रहग्रस्त बच्चों को भी देना चाहिये ॥ ३ ॥ इति पथ्यापथ्य विधिः ॥ इति बालरोगाधिकारः ॥

इति हरिद्वारीयगुरुकुलविश्वविद्यालयस्नातकेन श्रीविद्याधरविद्यालंकारेण लवपुरीय श्रीमद्दयानन्दायुर्वेदमहाविद्यालयीय वैद्यकविराजोपाधिधारिणा राजयक्ष्माचिकित्सकेन जलचिकित्साविशेषज्ञेन रसेन्द्रसारसंग्रहटीकाकर्त्रा कृतायां योगरत्नाकरस्य रत्नगर्भानाम्निटीकायां बालरोगचिकित्साप्रकरणं समाप्तम् ।

अथ विषाधिकारः ।

तत्र विषस्य द्वैविध्यमाह—**स्थावरं जङ्गमं चैव द्विविधं विषमुच्यते ।**
दशाधिष्ठानमाद्यं तु द्वितीयं षोडशाश्रयम् ॥१॥

स्थावर तथा जंगम दो प्रकार के विष होते हैं । स्थावर विष दश आश्रयों वा स्थानों में पाया जाता है तथा जंगम विष सोलह स्थानों में रहता है ॥ १ ॥

अथ स्थावरविषस्य दशाश्रयानाह—

मूलं पत्रं फलं पुष्पं त्वक्क्षीरं सार एव च ।
निर्यासो धातवः कन्दः स्थावरस्याश्रया दश ॥ १ ॥

मूल अर्थात् जड़ में, पत्तों में, फल में, फूल में, त्वचा में, दूध मे, सार में, गोंद में धातु तथा कन्द में इन दस स्थानों में स्थावरविष आश्रय करके रहता है अर्थात् इन दश स्थानों में से स्थाविर विष निकलता है ॥ १ ॥

तद्यथा—**मूलविषं करवीरादि । पत्रविषं विषपत्रिकादि ।**
फलविषं कर्कोटादि । पुष्पविषं वेत्रादि ।
त्वक्सारनिर्यासविषाणि करम्भादीनि । क्षीरविषं स्नुह्यादि ।
धातुविषं हरतालादि । कन्दविषं वत्सनाभसक्तुकादि ॥

मूलविष कनेर आदि में अर्थात् कनेर की जड़ में विष होता है । पत्रविष विषपत्रिका आदि में अर्थात् विषपत्रिका (" तत्तु जैपालादि बीजमध्यस्थपत्रम् ।" सुश्रुत. कल्प. २ अध्याय अर्थात् जमालगोटे के बीज के मध्यभाग में पत्ता होता है वह पत्रविष कहाता है) । फलविष ककोड़ा आदि अर्थात् ककोड़े के फल में विष होता है । पुष्पविषं वेत्रादि में होता है, अर्थात् बेत के फूलों में विष होता है त्वक्विष, सारविष, निर्यास विष करम्भादि में अर्थात् करम्भ आदि पेड़ों के त्वचा में, सार में तथा गोंद में विष निकलता है । क्षीर विष थोहर आदि में अर्थात् थोहर आदि के दूध में विष होता है । धातुविष हरताल आदि में होता है । कन्द विष वत्सनाभ सक्तुकादि में अर्थात् वत्सनाभ विष में तथा सक्तुक विष के केवल कन्द में ही विष होता है ॥

अथ जङ्गमविषस्य षोडशाऽऽश्रयानाह—

दृष्टिनिःश्वासदंष्ट्राश्च नखमूत्रमलानि च ।

शुक्रं लाला मुखस्पर्शो संदंशश्च विशर्धितम् ॥
गुदास्थिपित्तशूकादि दश षड् जङ्गमाश्रयाः ॥ १ ॥

दृष्टि में, निःश्वास अर्थात् सांस छोड़ने में, दाढ़ों में, नखों में, मूत्र में, मल में, वीर्य में, लारों में अर्थात् मुंह से टपकनेवाली लारों में, स्पर्श अर्थात् छूने में या त्वचा में, मुख से पकड़ने या काटने में, पाद मारने में, गुदा में, हड्डियों में, पित्त में, शूकादि में ये १६ (गिनें तो १५ हुए) जंगम विष कहाते हैं ॥ (सुश्रुत ने तो "स्पर्श" की जगह "आर्त्तव" तथा 'शव' या लाश में भी विष माना है, इस प्रकार १६ विष होजाते हैं। 'स्पर्श' में तथा 'आर्तव' में दोनों में विष मानें तो भी १६ विष होजाते हैं। हमारी सम्मति में "शुक्रंलालार्त्तवस्पर्शो संदंशश्च विशर्धितम्"। ऐसा पाठ कर देना चाहिये। इस से श्लोक भी ठीक छन्दानुसार होजाता है, १६ विष भी पूरे होजाते हैं, परन्तु वर्त्तमान योगरत्नाकर के दो पुस्तकों में १६ विष तो पूरे होते ही नहीं, १५ ही पूरे होते हैं साथ ही श्लोक भी टूटता है। निर्णयसागर की १६१६ सन् में छपी द्वितीयावृत्ति में, "शुक्रं लालास्पर्शो मुखसंदंशश्च विशर्धितम्" यह पाठ छपा है। इस में छन्दोभंग है तथा अपूर्ण है। निर्णयसागर की १६२६ सन् में इसी तृतीयावृत्ति में "शुक्रं लाला मुखस्पर्शो संदंशश्च विशर्धितम्" ॥ यह छन्द में तो ठीक है, परन्तु अभिप्राय की दृष्टि से सुसंगत नहीं। "मुखस्पर्श" के स्थान में "आर्त्तव-स्पर्श" होने से तथा शेष भाग वैसे ही रहने से श्लोक तथा अभिप्राय ठीक होता है जो कि सुश्रुतसम्मत है। इस कारण जो पाठ हम ने श्लोकबद्ध किया है वह समीचीन रहेगा ॥) ॥ १ ॥ तथा हि—

दृष्टिनिःश्वासविषा दिव्याः सर्पास्तक्षकादयः। दंष्ट्राविषा भौमाः सर्पाः।
नखविषा मार्जारमकरव्याघ्रादयः, ते दंष्ट्राविषा अपि।
मूत्रपुरीषविषा गृहगोधिकादयः। शुक्रविषा सर्पलालनादयो मूषिकाः।
लालाविषा वरट्युच्चाटिङ्गादयः। स्पर्शविषा लूतादयः।
मुखसंदंशविषा मक्षिकादयः। विशर्धितगुदवातविषाश्चित्रशीर्षादयः।
विशर्धितं नाम पायुकृतकुत्सितशब्दः। अस्थिविषाः सर्पादयः।
पित्तविषा नकुलमत्स्यादयः। शूकविषा वृश्चिकभ्रमरादयः।
एतेषां च सुश्रुते कल्पस्थाने विस्तारो द्रष्टव्यः।

दृष्टि तथा निःश्वास में जिन की विष होता है वे दिव्य सांप तथा तक्षकादि सांप होते हैं ॥ दंष्ट्रा विष अर्थात् जिन की दाढ़ों में विष होता है वे भूमिस्थ सर्प आदि होते हैं। नख विष अर्थात् जिन के नखों में विष होता है वे बिल्ली, मगरमच्छ और व्याघ्र आदि होते हैं, साथ ही इन की दाढ़ों में भी विष होता है ॥ मूत्र तथा मल में जिन के विष होता है वे गृहगोधिका अर्थात् छिपकली

विषखपरा आदि होते हैं। जिन के वीर्य में विष होता है वे सांप तथा लालन नामक चूहा आदि होते हैं। लाला या लारों में जिन की विष होता है वे भिंड़ और उच्चिटिंग (बंगाली नाम उच्चिंडे यह वातप्रकृति का कीट होता है) नामक विषकीट आदि होते हैं। स्पर्श में जिन की विष होता है वे मकड़ी आदि प्राणि होते हैं (आर्त्तव में जिन की विष होता है वे भी लूता या मकड़ी आदि प्राणी होते हैं।) ॥ मुखसंदंश विष अर्थात् मुख से काटने पर जिन का विष चढ़ता है वे मक्खी आदि होते हैं। विशर्धित अर्थात् गुदा की वायु या पाद मारने में जिन प्राणियों के विष निकलता है वे चित्रशीर्ष आदि वायव्य कीट विशेषों में होता है ॥ जिन की हड्डियों में विष होता है वे सांप आदि होते हैं। जिन की पित्त में विष होता है वे न्योला तथा मछली आदि होते हैं। शूकविष अर्थात् जिन के कांटों या डंक में विष होता है वे बिच्छु, भंवरा आदि होते हैं। इन के विषय में विस्तार देखना हो तो सुश्रुत के कल्पस्थान में देखना चाहिये ॥

अथ स्थावरजङ्गमविषाणां सामान्यलक्षणमाह—

स्थावरं तु ज्वरं हिक्कां दन्तहर्षं गलग्रहम्।
फेनच्छर्द्यरुचिश्वासं मूर्च्छां च कुरुते विषम् ॥ १ ॥

स्थावर विष के सेवन करने से ज्वर, हिचकी, दन्तहर्ष, गलग्रह, मुंह से झाग निकलना, वमन होना, अरुचि तथा श्वास होना तथा मूर्च्छा होनी ये लक्षण होते हैं ॥ १ ॥

जंगमविषलक्षणानि—**निद्रां तन्द्रां क्लमं दाहं सकम्पं रोमहर्षणम्।**
शोफं चैवातिसारं च कुरुते जङ्गमं विषम् ॥ २ ॥

जंगम विष के प्रभाव से मनुष्य को निद्रा आती है, तन्द्रा आती है, क्लांति अर्थात् शरीर में मुर्झाहट होती है, दाह होता है, कम्प होता है तथा रोमहर्ष होता है, शोथ होजाता है तथा अतिसार हो जाते हैं ॥ २ ॥

अथावनिपतेरन्यस्य वाऽन्नादौ निभृताः परिकर्मिणो विषमवचारयन्ति तेषां विषदातॄणां लक्षणान्याह—

इङ्गितज्ञो मनुष्याणां वाक्चेष्टामुखवैकृतैः।
जानीयाद्विषदातारमेतैर्लिङ्गैश्च बुद्धिमान् ॥ १ ॥

राजा वा अन्य लोगों के विश्वासपात्र नौकर भी अन्नादि में विष मिला देते हैं अब उन नौकरों के लक्षण लिखते हैं। इंगितज्ञ अर्थात् इशारों का जानने वाला चतुर मनुष्य या वैद्य लोगों की वाणी चेष्टा तथा मुख के विकारों से विष देने वालों की पहचान करे। उनके चिन्ह आगे लिखते हैं ॥ १ ॥

न ददात्युत्तरं पृष्टो विवक्षुर्मोहमेति च।
अपार्थं बहु संकीर्णं भाषते मूढवत्तदा ॥ २ ॥

जो विष देने वाला मनुष्य होता है उससे कुछ पूछा जाय तो वह उत्तर नहीं देता। बोलना चाहे तो मोह को अर्थात् मूढ़ता को प्राप्त हो जाता है। तथा अभिप्राय रहित बहुत सी बातें संक्षिप्त रूप से बोलता जाता है जैसे कोई मूढ हो॥

अङ्गुलीः स्फोटयेदुर्वीं विलिखेत्प्रहसेदपि।
वेपथुश्चास्य भवति त्रस्तश्चान्योन्यमीक्षते॥ ३॥

सामने खड़ा २ अंगुलियों को फोड़ेगा, भूमि को कुरेदेगा और हंसेगा। इसका शरीर कांपेगा, डरा हुआ एक दूसरे को देखेगा॥ ३॥

विवर्णवक्त्रो ध्यामस्तु नखैः किंचिच्छिनत्त्यपि।
वर्तते विपरीतं च विषदाता विचेतनः॥ ४॥

उस के मुंह का रंग विवरण हो जायेगा, ध्यानमग्न रहेगा, नखों से कुछ पदार्थ काटता हुआ सा प्रतीत होगा। तथा विपरीत रहेगा अर्थात् सामने नहीं आयेगा इधर उधर पीछे हटता रहेगा तथा विष खानेवाले के विरुद्ध भी रहेगा तथा कभी चेतनारहित भी होजायेगा॥ ४॥

आलभेतासकृद्दीनः करेण च शिरोरुहान्।
निर्यियासुरपद्वारैर्वीक्षते च पुनः पुनः॥ ५॥

दीन हुआ २ कई बार सिर के बालों को हाथों से छुवेगा। और छोटे २ गौण मार्गों से उस मकान में से निकल भागना चाहेगा, और बार २ उन द्वारों में से देखता रहेगा॥ ५॥

अथ स्थावरविषस्य दशाश्रयाणां प्रत्येकं लक्षणान्याह—

उद्वेष्टनं मूलविषैः प्रलापो मोह एव च।
जृम्भणं वेपनं श्वासो ज्ञेयं पत्रविषेण च॥ १॥

मूलविषों से पिंडलियों आदि में ऐंठन उठती है, प्रलाप होता है तथा मोह होता है॥ पत्रविषों से जंभाइयां आती हैं, शरीर कांपता है तथा श्वास होता है॥१॥

मुष्कशोथः फलविषैर्दाहोऽन्नद्वेष एव च।
भवेत्पुष्पविषैश्छर्दिराध्मानं श्वास एव च॥ २॥

फलविषों से अण्डकोषों मे शोथ होजाता है, दाह होता है तथा अन्न से द्वेष होता है॥ पुष्पविषों से वमन होता है, आध्मान होता है तथा श्वास होता है॥२॥

त्वक्सारनिर्यासविषैरुपयुक्तैर्भवन्ति हि।
आस्यदौर्गन्ध्यपारुष्यशिरोरुक्कफसंस्रवाः॥ ३॥

त्वचाविष, सारविष तथा निर्यासविषों के उपयोग करने से मुख की दुर्गन्ध कठोरता, शिरःशूल तथा कफ थूकना ये सभी बातें होती हैं॥ ३॥

फेनागमः क्षीरविषैर्विड्भेदो गुरुजिह्वता।
हृत्पीडनं धातुविषैर्मूर्च्छा दाहश्च तालुनि।

प्रायेण कालघातीनि विषाण्येतानि निर्दिशेत् ॥ ४ ॥

क्षीरविषों से फेन अर्थात् झाग मुंह से निकलती है, मल टूट २ कर आता है, जीभ भारी होजाती है। धातुविषों से हृदय में पीड़ा होती है, मूर्च्छा होती है तथा तालु में दाह होता है। प्रायः कर के इन सब विषों को कालघाती समझें अर्थात् समय पाकर यह विष मनुष्यों का नाश कर देता है ॥ ४ ॥

अथ कन्दविषस्य कार्यमाह—**कन्दजान्युग्रवीर्याणि यान्युक्तानि त्रयोदश ।**
सर्वाण्येतानि कुशलैर्ज्ञेयानि दशभिर्गुणैः ॥१॥

कन्दज पूर्वोक्त १३ प्रकार के विष उग्रवीर्य होते हैं। ये सभी विष दशगुणों से युक्त होते हैं॥

स्थावरं जङ्गमं वापि कृत्रिमं चापि यद्विषम् ।
सद्यो निहन्ति तत्सर्वं गुणैश्च दशभिर्युतम् ॥ २ ॥

स्थावर जंगम तथा कृत्रिमविष प्राणियों को शीघ्र नष्ट कर देते हैं। उन सब में दशगुण होते हैं ऐसा जाने ॥ २ ॥

अथ तान्दशगुणानाह—**रूक्षमुष्णं तथा तीक्ष्णं सूक्ष्ममाशु व्यवायि च ।**
विकाशि विशदं चापि लघ्वपाकि च ते दश ॥१॥

वे दशगुण आगे लिखे जाते हैं। रूक्ष, उष्ण, तीक्ष्ण, सूक्ष्म, आशु, व्यवायी, विकाशी, विशद, लघु तथा अपाकि ॥ १ ॥

अथ तैर्गुणैर्विषस्य कार्यमाह—

तद्रौक्ष्यात्कोपयेद्वायुमौष्ण्यात्पित्तं सशोणितम् ।
तैक्ष्ण्यान्मतिं मोहयति मर्मबन्धांश्छिनत्ति हि ॥ २ ॥

विष रौक्ष्य या रूक्षगुण से युक्त होने के कारण वायु को कुपित कर देता है। उष्ण गुणयुक्त होने से पित्त को तथा रक्त को कुपित कर देता है। तीक्ष्ण होने के कारण बुद्धि को मोह लेता है तथा मर्मस्थानों के बन्धनों को काट डालता है॥२॥

शरीरावयवान्सौक्ष्म्यात्प्रविशेद्विकरोति च ।
आशुत्वादाशु तद्धन्ति व्यवायात्प्रकृतिं हरेत् ॥ ३ ॥

सूक्ष्म होने के कारण शरीर के अवयवों में प्रवेश कर जाता है तथा उनके अन्दर विकार कर देता है ॥ आशु होने के कारण शीघ्र ही प्राणनाश करनेवाला होता है। व्यवायी होने के कारण प्रकृति को अर्थात् स्वभाव को बदल डालता है॥

विकाशित्वात्क्षपयति दोषान्धातूमलानपि ।
अतिरिच्येत वैशद्याद्दुश्चिकित्स्यं च लाघवात् ।
दुर्जरं चाविपाकित्वात्तस्मात्क्लेशयते चिरम् ॥ ४ ॥

विकाशी होने के कारण दोषों धातुओं तथा मलों को नष्ट कर देता है। विशद होने के कारण सब भागों को पृथक् २ कर देता है। लघु होने के कारण यह दुश्चिकित्स्य होता है अर्थात् इस की चिकित्सा करनी कठिन होजाती है। अपाकि होने के कारण दुःख से पचता है इसी कारण चिरकाल तक शरीर

को दुःखित करता रहता है ।४॥ इति भावप्रकाशात् ॥

अथ विषलिप्तशस्त्रहतस्य लक्षणमाह—

सद्यः पाकं याति यस्य क्षतं तत्स्रवेद्रक्तं पच्यते चाप्यभीक्ष्णम्।
कृष्णीभूतं क्लिन्नमत्यर्थपूति क्षतान्मांसं शीर्यते यस्य चापि ॥ १ ॥

जिस मनुष्य का क्षत शीघ्र ही पक जाता हो, उस में से रक्त निकलता रहता हो, तथा बार २ पकता हो। जिस क्षत में काला, क्लिन्न अर्थात् भीगा हुआ तथा अत्यन्त सड़ा हुआ मांस फटकर गिर रहा हो ॥ १ ॥

तृष्णा मूर्च्छा ज्वरदाहौ च यस्य दिग्धाविद्धं तं मनुष्यं व्यवस्येत्।
लिङ्गान्येतान्येव कुर्य्यादमित्रैर्दत्तः क्ष्वेडो वा व्रणे यस्य चापि ॥२॥

जिस रोगी को इसी कारण प्यास लगती हो, मूर्च्छा आती हो, ज्वर हो तथा दाह हो, उस मनुष्य को विष से लिपे हुए शस्त्र से विद्ध समझना चाहिये ॥ ये ही सब लक्षण व्रण में शत्रुओं से दिये हुए विष के कारण होते हैं ॥ २॥ इति स्थावरादिविषम् ॥

अथ जङ्गमविषाणां कार्य्याण्याह—तत्र जङ्गमेषु तीक्ष्णतरत्वेन सर्पानाह—

वातपित्तकफात्मानो भोगिमण्डलिराजिलाः।
यथाक्रमं समाख्याता द्व्यन्तरा द्वन्द्वरूपिणः ॥ १ ॥

वात पित्त तथा कफ के अर्थात् इन तीन प्रकार के सांप होते हैं।भोगी, मण्डली तथा राजिल। भोगी वात के होते हैं, मण्डली पित्त के होते हैं तथा राजिल कफ के होते हैं। भोगी तथा मण्डली के मध्य की जाति के सांप वातपित्तज कहाते हैं, मण्डली तथा राजिल के मध्य की जातियों के सांप पित्तकफज कहाते हैं। तथा भोगी और राजिल जातियों के मध्य की जातियोंके सांप वातकफज कहाते हैं॥१॥

अथ भोगिप्रभृतिभिः कृतदंशेषु वातादीनां लिङ्गमाह—

दंशो भोगिकृतः कृष्णः सर्ववातविकारकृत्।
पीतो मण्डलिजः शोथो मृदुः पित्तविकारवान् ॥ १ ॥

भोगी सांप से काटा हुआ स्थान काला होता है तथा सब वात के विकारों को करता है। मण्डली सांप से काटा हुआ स्थान पीले रंग का होता है, मन्द २ सूजन से युक्त होता है तथा पित्त के विकारों से युक्त होता है ॥ १ ॥

राजिलोत्थो भवेद्दंशः स्थिरशोथश्च पिच्छिलः।
पाण्डुः स्निग्धोऽतिसान्द्रासृक्सर्वश्लेष्मविकारकृत् ॥ २ ॥

राजिल सांप से काटा हुआ स्थान स्थिर सूजन से युक्त होता है, पिच्छिल होता है, श्वेत रंग का होता है, स्निग्ध होता है अति गाढ़ा खूनवाला होता है तथा सभी कफ के विकारों से युक्त होता है ॥ २ ॥

अथ देशविशेषे कालविशेषे च दष्टस्यासाध्यत्वमाह—

अश्वत्थदेवायतनश्मशानवल्मीकसन्ध्यासु चतुष्पथेषु।

याम्ये च पित्र्ये परिवर्जनीया ऋक्षे नरा मर्मसु ये च दष्टाः ॥ १ ॥

पीपल के पेड़ के नीचे, देवालय में, श्मशान में, बांबी पर, संध्या काल में, चौरास्ते पर, रात में, पितृपक्ष में तथा मर्मस्थान में यदि इन स्थानों में सांपों ने काटा हो तो वे प्राणी नहीं बचते हैं ॥ १ ॥

दर्वीकरविषस्यासाध्यत्वम्—

दर्वीकराणां विषमाशु हन्ति सर्वाणि चोष्णे द्विगुणी भवन्ति ॥२॥

दर्वीकर सांपों का विष शीघ्र ही प्राणियों को नष्ट कर देता है। और सभी सांपों का विष उष्णकाल में दुगना हो जाता है ॥ २ ॥

दर्वीकरलक्षणमाह—**रथाङ्गलाङ्गलच्छत्रस्वस्तिकांकुशधारिणः।**

ज्ञेया दर्वीकराः सर्पाः फणिनः शीघ्रगामिनः ॥ २ ॥

रथाङ्ग अर्थात् चकवापक्षी या चक्र, हल, छत्र, स्वस्तिकयंत्र, अंकुश इन चिन्हों को फन पर धारण करने वाले, फणयुक्त शीघ्र चाल वाले सर्प दर्वीकर अर्थात् फणियर कहाते हैं ॥२॥ तथाऽपरेषु विषमाशु मारकं भवति तानाह—

अजीर्णपित्तातपपीडितेषु बालेषु वृद्धेषु बुभुक्षितेषु।

क्षीणे क्षते मेहिनि कुष्ठजुष्टे रूक्षेऽबले गर्भवतीषु चापि ॥१॥

अजीर्ण से पीड़ित रोगी को, पित्त से पीड़ित रोगी को, धूप से पीड़ित रोगी को, बालक को, वृद्ध को, भूखे को, क्षीण को, क्षतयुक्त को, मेहरोगी को, कुष्ठी को, रूखे शरीर वाले को, निर्बल को तथा गर्भवती स्त्री को ॥ १ ॥

शस्त्रक्षते यस्य न रक्तमस्ति राज्यो लताभिश्च न सम्भवन्ति।

शीताभिरद्भिश्च न रोमहर्षो विषाभिभूतं परिवर्जयेत्तम् ॥ २ ॥

यदि सांप काटा हो तो, (तथा) शस्त्र से काटने पर जिन के शरीर में से रक्त न निकलता हो, जिनके शरीर में लताओं से लकीरें सी नहीं पड़तीं अर्थात् रोमों की लकीरें सी नहीं पड़तीं अथवा रोमहर्ष नहीं होता। तथा शीतल जल डालने से रोमहर्ष नहीं होता है, ऐसे विषयुक्त प्राणी को वैद्य त्याग देवे ॥ २ ॥

जिह्मं मुखं यस्य च केशशातो नासावसादश्च सकण्ठभङ्गः।

कृष्णश्च रक्तः श्वयथुश्च दंशे हन्वोः स्थिरत्वं च स वर्जनीयः ॥३॥

जिस मनुष्य का सांप काटने से मुंह टेढा हो जाये, जिसके केशपात हों अर्थात् केश गिर गये हों, नाक का अवसाद हो जाये कण्ठ भंग हो जाय। काटे हुए स्थान काला तथा लाल हो और सूजन होजावे तथा ऊपर नीचे के जबड़े स्थिर जुड़ जावें खुलें नहीं। ऐसा सांप से काटा हुआ रोगी त्याग देने योग्य है उसकी चिकित्सा न करे।

अपरं च—**वर्तिर्घना यस्य निरेति वक्त्राद्रक्तं स्रवेदूर्ध्वमधश्च यस्य।**

दंष्ट्रानिपातांश्चतुरश्च पश्येद्यस्यापि वैद्यः परिवर्जयेत्तम् ॥४॥

जिस मनुष्य के मुंह से लार आदि की घनी बत्ती निकल रही हो, जिसके ऊपर के मार्ग से तथा नीचे के मार्ग से रक्त निकलता रहता हो। जिसकी दाढें

गिर गई हों, ऐसे रोगी को वैद्य त्याग देवे ॥ ४ ॥

उन्मत्तमत्यर्थमुपद्रुतं वा हीनस्वरं वाऽप्यथवा विवर्णम्।
सारिष्टमत्यर्थमवेगिनं च त्यजेन्नरं तत्र न कर्म कुर्यात् ॥ ५ ॥

जो अत्यन्त पागल हो गया हो, जो उपद्रवों से युक्त हो गया हो, जिसका स्वर हीन हो गया हो अथवा जो विवर्ण हो गया हो अर्थात् जिसका रंग उड़ गया हो। जिसके सारे लक्षण अत्यन्त अरिष्टके हो रहे हों, जिसमें वेग न रहा हो, ऐसे रोगी की चिकित्सा न करे ॥ ५ ॥ इति सर्पादिविषम्।

अथ स्थावरजङ्गमविषमेव जीर्णत्वादिभिः कारणैर्दूषीविषसंज्ञां लभते तदाह—

जीर्णं विषघ्नौषधिभिर्हतं वा दावाग्निवातातपशोषितं वा।
स्वभावतो वा गुणविप्रहीनं विषं हि दूषीविषतामुपैति ॥ १ ॥

खाया हुआ विष जीर्ण हो जाने के बाद, अथवा खाया हुआ विष विषनाशक औषधियों से नष्ट कर देने के बाद, अथवा दावाग्नि अर्थात् जंगल की लगी हुई अग्नि से, वायु से तथा धूप से विष के सूख जाने के बाद। अथवा स्वभाव से ही विष हीनगुण हो तो इन सभी प्रकार की अवस्थाओं में शरीर में गया हुआ विष दूषी विष बन जाता है ॥ १ ॥

अथ दूषीविषस्य कार्यमाह—

वीर्याल्पभावान्न निपातयेत्तत्कफान्वितं वर्षगणानुबन्धि।
तेनार्दितो भिन्नपुरीषवर्णो विगन्धवैरस्ययुतः पिपासी ॥ १ ॥

वीर्य अर्थात् सामर्थ्य की कमी के कारण वह दूषी विष कफ से युक्त हुआ २ बाहर नहीं निकलता तथा वर्षों तक शरीर में रहता है। उससे रोगी दुःखी रहता है। और मल टूट २ कर निकलता है तथा वर्ण या रंग भी ठीक पहले जैसा नहीं रहता है अर्थात् स्वाभाविक त्वचा का रंग उड़ जाता है। मुख या शरीर में से विशेष गन्ध आती है तथा मुंह का स्वाद विरस होता है, तथा प्यास अधिक लगती है॥

मूर्च्छन् भ्रमन् गद्गदवाग्वमिश्च विचेष्टमानो रतिमाप्नुयाद्वा ॥ २ ॥

मूर्च्छा होती है, भ्रम होता है, वाणी गद्गद् होती है, वमन होती है, विविध चेष्टा करता हुआ या हाथ पैर पटकता हुआ मनुष्य मोह को प्राप्त होता है ॥ २ ॥

अथ स्थानविशेषस्थिते दूषीविषे लिङ्गविशेषमाह—

आमाशयस्थे कफवातरोगी पक्वाशयस्थेऽनिलपित्तरोगी।
भवेत्समुद्ध्वस्तशिरोरुहाङ्गो विलूनपक्षस्तु यथा विहङ्गः ॥ १ ॥

जब दूषी विष आमाशय में होता है तो कफवात प्रकृतिवाले रोगी के सिर के बाल गिर जाते हैं तथा अंग भी उद्ध्वस्त अर्थात् शक्तिहीन हो जाते हैं, जब दूषी पक्वाशय में पहुंच जाता है तब वातपित्तरोगी के सिर के बाल गिर जाते हैं तथा अंगभंग होजाते हैं। ये बाल गिरना तथा अंगजर्जरता ठीक उसी प्रकार होती है जैसे पक्षी के पंखोंवाले दोनों बाजुओं को तोड़मरोड़ दिया जाये ॥ १ ॥

अथ तस्य रसादिधातुगतस्य लिङ्गमाह—

स्थितं रसादिष्वथ तद्यथोक्तान्करोति धातुप्रभवान्विकारान्।
कोपं च शीतानिलदुर्दिनेषु यात्याशु पूर्वं शृणु तस्य रूपम् ॥ १ ॥

रसादि धातुओं में स्थित हुआ २ वही दूषी विष उन २ रसादि धातुओं के होनेवाले विकारों को उत्पन्न करता है । अर्थात् रसधातु में पहुंचा हुआ दूषी-विष रसधातु के अजीर्णादिरोगों को करता है, रक्तधातु में पहुंचा हुआ विष रक्त के रोगों को करता है इसी प्रकार सातों धातुओं में पहुंचा हुआ विष सातों धातुओं के विकारों को करता है । शीत के दिन, वायु के दिन तथा बादलों वाले दिन (मेघाच्छन्नं हि दुर्दिनम्) वह दूषी विष कोप को प्राप्त होता है । उस के पूर्वरूप आगे लिखते हैं ॥ १ ॥

अथ पूर्वरूपमाह—

निद्रा गुरुत्वं च विजृम्भणं च विश्लेषहर्षावथ वाऽङ्गमर्दः।
ततः करोत्यन्नमदाविपाकावरोचकं मण्डलकोठजन्म।
मांसक्षयं पाणिपदाक्षिशोथं मूर्च्छां तथा छर्दिमथातिसारम् ॥ १ ॥

दूषी विष के धातुओं में जाने से आगे लिखे हुए पूर्वरूप होते हैं—निद्रा आती है, शरीर भारी रहता है, जंभाईयां आती हैं, शरीर की संधिबंधन शिथिल पड़ जाते हैं, रोमहर्ष होता है अथवा अंगड़ाईयां आती हैं । फिर अन्न के मद को करता है तथा अन्न को पचने नहीं देता, अरुचि होती है, मण्डल तथा कोठ अर्थात् चकत्ते २ शरीर पर पड़ जाते हैं । मांस क्षीण होने लगता है, हाथ पैर तथा आंखों में सूजन होजाती है, मूर्च्छा होती है, वमन तथा अतिसार होते हैं ॥ १ ॥

दूषीविषं श्वासतृषाज्वरांश्च कुर्यात्प्रवृद्धिं जठरस्य चापि ॥ २ ॥

इस दूषी विष से श्वास, तृष्णा तथा ज्वर भी उत्पन्न हो जाता है, तथा पेट भी बढ़ जाता है ॥ १ ॥

अथ दूषीभेदेन विकारभेदमाह—

उन्मादमन्यज्जनयेत्तथाऽन्यदानाहमन्यत्क्षपयेच्च शुक्रम्।
गाद्गद्यमन्यज्जनयेच्च कुष्ठं तांस्तान्विकारांश्च बहुप्रकारान् ॥

किसी प्रकार के दूषी विष से उन्मादरोग हो जाता है, किसी प्रकार के दूषी विष से आनाहरोग होजाता है । अन्य प्रकार के दूषी विष से वीर्य बाहर निकलना आरंभ होजाता है । एक प्रकार के दूषी विष से वाणी गद्गद होकर मनुष्य अस्पष्ट बोलने लगता है । अन्य प्रकार के दूषी विष से कुष्ठ होजाता है तथा अन्य अनेक प्रकार के विकार होजाते हैं ॥ १ ॥

अथ दूषीविषस्य निरुक्तिमाह—**दूषितं देशकालान्नदिवास्वापैरभीक्ष्णशः।**
यस्मात्संदूषयेद्धातूंस्तस्माद्दूषीविषं स्मृतम् ॥ १ ॥

शरीर में गया हुआ विष देश, काल, अन्न तथा दिन में सोने से बार २

दूषित हुआ २ क्योंकि धातुओं को दूषित कर देता है इस लिये उसे दूषी विष कहते है॥

अथ दूषीविषस्य साध्यत्वादिकमाह—

साध्यमात्मवतः सद्यो याप्यं संवत्सरोषितम्।
दूषीविषमसाध्यं स्यात्क्षीणस्याहितसेविनः॥ १॥

आत्मवान अर्थात् सदाचार सम्पन्न युक्ताहार विहारवाले रोगी को तुरन्त का हुआ २ दूषी विष साध्य होता है। और एक वर्ष के बाद याप्य होता है। परन्तु अहित सेवन करने वाले क्षीण रोगी का दूषी विष असाध्य होता है॥ १॥

अथ कृत्रिमं विषं द्विविधम्—**एकं सविषं दूषीविषसंज्ञम्।**
अपरमविषं तदेव गरसंज्ञम्॥

कृत्रिमया बनावटी विष दो प्रकार का होता है। एक विष से युक्त होता है जिसे दूषीविष कहते हैं। दूसरा विषरहित होता है जिसे गर कहते हैं॥ १॥

तथा च काश्यपसंहितायाम्—**संयोगजं च द्विविधं द्वितीयं विषमुच्यते।**
दूषीविषं तु सविषमविषं गर उच्यते॥१॥

दूसरा संयोगज विष दो प्रकार का होता है। एक दूषीविष जो विष से युक्त होता है, दूसरा गर जो विष से रहित होता है॥ १॥

तत्र दूषीविषमभिधाय गरं दर्शयितुमाह—

सौभाग्यार्थाः स्त्रियः स्वेदरजोनानाङ्गजान्मलान्।
शत्रुप्रयुक्तांश्च गरान्प्रयच्छन्त्यन्नमिश्रितान्॥ १॥

अपने सौभाग्य के लिये अर्थात् पति आदि को वश में करने के लिये स्त्रियें पसीना, रज तथा नाना अंगों के नाना प्रकार के मलों को तथा शत्रुओं से प्रयुक्त गरों अर्थात् कृत्रिम विषों को अन्न में आदि मिश्रित कर के पति आदि को खिला देती हैं॥१॥

अथ गरकार्यमाह—**तैः स्यात्पाण्डुः कृशोऽल्पाग्निर्गरश्चास्योपजायते।**
मर्मप्रधमनाध्मानं हस्तयोः शोथसम्भवः॥ १॥

इन दिये हुए मल आदि से मनुष्यों के अन्दर पाण्डुरोग उत्पन्न होजाता है, रोगी कृश होजाता है, मन्दाग्नि से युक्त होजाता है तथा इस के अन्दर गर उत्पन्न होजाता है। मर्म स्थानों में प्रधमन होता है अर्थात् धमधमाहट होती है, पेट में आध्मान होता है। हाथों में शोथ होजाता है॥ १॥

जठरं ग्रहणीरोगो यक्ष्मा गुल्मः क्षयो ज्वरः।
एवंविधस्य चान्यस्य व्याधेर्लिङ्गं च जायते॥ १॥

उदररोग होजाते हैं, ग्रहणीरोग होता है; यक्ष्मा, गुल्म क्षयरोग तथा ज्वर होजाता है। इसी प्रकार के अन्य व्याधियों के चिन्ह भी होजाते हैं॥ १॥ इति दूषीविषादिनिदानम्॥

अथ लूतानां जन्तुविशेषाणामुत्पत्तिनिरुक्तिसंख्यादि चाऽऽह—

यस्माल्लूनं तृणं प्राप्ता मुनेः प्रस्वेदबिन्दवः।

तेभ्यो जातास्ततो लूता इति ख्यातास्तु षोडश ॥ १ ॥

क्योंकि कटे हुए तृण पर मुनि के पसीने की बूंदें गिरी थीं इस कारण उस में से लूता अर्थात् मकड़ियां उत्पन्न होगई थीं। ये मकड़ियां सोलह प्रकार की होती हैं ॥

अत्र सुश्रुतः—विश्वामित्रो नृपवरः कदाचिदृषिसत्तमः ।
वसिष्ठं कोपयामास गत्वाऽऽश्रमपदं किल ॥ २ ॥

कभी राजर्षि विश्वामित्र ने वशिष्ठजी के आश्रम पर जाकर उन्हें कुपित कर दिया ॥

कुपितस्य मुनेस्तस्य ललाटात्स्वेदबिन्दवः ।
अपतन्दर्शनादेव ह्यधस्तात्तीव्रवर्चसः ॥ ३ ॥

तब उस तेजस्वी मुनि वसिष्ठ के ललाट से विश्वामित्र को देखते ही पसीने की बूंदें नीचे की ओर गिर गयीं ॥ ३ ॥

लूने तृणे महर्षेस्तु धेन्वर्थे संभृतेऽपि च ।
ततो जातास्त्विमा घोरा नानारूपा महाविषाः ॥ ४ ॥

महर्षि वसिष्ठ ने कामधेनु गौ के लिये जो तृण काटे थे उन्हीं पर वे पसीने की बूंदें गिरीं । उन बूंदों ही से ये नानारूप की भयंकर महाविषवाली मकड़ियें उत्पन्न हुई हैं ॥ ४ ॥

तासामष्टौ कष्टसाध्या वर्ज्यास्तावत्य एव हि ॥ ५ ॥

उन में से आठ मकड़ियों का विष तो कष्टसाध्य होता है । शेष आठ मकड़ियों का विष असाध्य होता है ॥ ५ ॥

तत्र त्रिमण्डलाप्रभृतयः कष्टसाध्याः।सौवर्णिकाप्रभृतयोऽष्टावसाध्याः ॥

उन में से त्रिमण्डला आदि आठ मकड़ियों का विष कष्टसाध्य होता है। सौवर्णिका आदि आठ मकड़ियों का विष असाध्य होता है ॥

अथ तासां सामान्यानां दंशलक्षणमाह—

ताभिर्दष्टे दंशकोथः प्रवृत्तिः क्षतजस्य च ।
ज्वरो दाहोऽतिसारश्च गदाः स्युश्च त्रिदोषजाः ॥ १ ॥

इन मकड़ियों के दंशस्थान पर कोथ होता है अर्थात् सड़ांद होती है, रक्त निकलता है॥ ज्वर होता है, दाह होता है, अतिसार होता है, त्रिदोषजरोग होते हैं॥

पिटिका विविधाकारा मण्डलानि महान्ति च ।
शोथा महान्तो मृदवो रक्ताः श्यावाश्चलास्तथा ।
सामान्यं सर्वलूतानामेतद्दंशस्य लक्षणम् ॥ २ ॥

विविध आकार वाली पिड़िकायें होती हैं, महान मण्डल अर्थात् चकत्ते पड़ जाते हैं। महान २ शोथ होजाता है, जो मृदु या मुलायम होता है, यह शोथ लाल रंग का होता है सांवले रंग का होता है तथा चंचल होता है। ये सभी प्रकार की मकड़ियों के काटने के सामान्य लक्षण होते हैं ॥ २ ॥

अथ त्रिमण्डलादयोऽष्टौ दूषीविषास्तासां लक्षणमाह—

दंशमध्ये तु यत्कृष्णं श्यावं वा जालकावृतम्।
दग्धाकृति भृशं पाकक्लेदशोथज्वरान्वितम्।
दूषीविषाभिर्लूताभिस्तद्दष्टमिति निर्दिशेत्॥ १॥

जिस मकड़ी के काटे स्थान के मध्य में काला रंग हो या सांवला रंग हो या वह स्थान जालों से युक्त हो। जले हुए के समान आकार वाला हो, अधिक पाक वाला, क्लेदयुक्त, शोथ युक्त तथा ज्वर से युक्त हो, ऐसे दष्ट स्थान को देखकर समझना चाहिये कि दूषी विष वाली त्रिमण्डलादि मकड़ियों से वह स्थान काटा गया है १

अथ सौवर्णिकादयोऽष्टावसाध्याः प्राणहरास्तासां लक्षणमाह—

शोथाः श्वेताः सिता रक्ताः पीता वा पिटिकाज्वरः।
प्राणान्तिको भवेद्दाहः श्वासो हिक्का शिरोग्रहः॥ १॥

सौवर्णिका आदि आठ प्राणनाशक मकड़ियों के दष्ट स्थान के आगे लिखे लक्षण होते हैं, शोथ हो जाता है, श्वेत रंग की, श्वेत लाल रंग की, वा पीले रंग की पिड़िकायें हो जाती हैं, ज्वर हो जाता है। प्राणान्त करने वाला दाह होता है, श्वास होता है, हिचकी होती है तथा शिरोग्रह हो जाता है॥ १॥

अथाऽऽखुदूषीविषलक्षणमाह—

आ दंशाच्छोणितं पाण्डु मण्डलानि ज्वरोऽरुचिः।
रोमहर्षश्च दाहश्चाप्याखुदूषीविषार्दिते॥ १॥

चूहे के काटने आदि से हुआ २ दूषी विष हो तो काटते ही दंशस्थान लाल वा श्वेत रंग का हो जाता है, मण्डल हो जाते हैं अर्थात् शरीर पर चकत्ते पड़ जाते हैं, ज्वर हो जाता है, अरुचि हो जाती है। रोमहर्ष हो जाता है तथा दाह भी होता है॥ १॥

अथ प्राणहरमूषकविषकार्यमाह—मूर्च्छाङ्गशोथवैवर्ण्यक्लेदशब्दाश्रुतिज्वराः।
शिरोगुरुत्वं लालाऽसृक्छर्दिश्चासाध्यमूषकात्॥१॥

चूहे का विष असाध्य होता है उसके काटने आदि से प्राणी को मूर्च्छा होती है, अङ्गों में शोथ होता है, विवर्णता होती है, क्लेद होता है, शब्द सुनाई नहीं देते, ज्वर होता है। सिर भारी होता है, लारें बहती हैं, खून की वमन होती है १

अथ कृकलासदष्टस्य लक्षणमाह—

कार्ष्ण्यं श्यावत्वमथवा नानावर्णत्वमेव च।
मोहोऽथ वर्चसो भेदो दष्टस्य कृकलासकैः॥ १॥

जब गिरगट काट चुकी हो तो प्राणी का रंग काला, सांवला अथवा नाना रंगों का हो जाता है। मोह होता है तथा टट्टी पतली हो २ कर आती है॥१॥

अथ वृश्चिकविषस्य लक्षणमाह—दहत्यग्निरिवाऽऽदौ तु भिनत्तीवोर्ध्वमाशु च।

वृश्चिकस्य विषं याति पश्चाद्दंशेऽवतिष्ठते ॥ १ ॥

बिच्छु काटने पर आरम्भ में उसका विष अग्नि के समान दाह करता है, और शीघ्र ही ऊपर के शरीर स्थान को तोड़ता हुआ सा चलता मालूम होता है, और अन्त में केवल काटी हुई जगह में ही रहता है ॥ १ ॥

असाध्यवृश्चिकदष्टस्य लक्षणमाह–दष्टोऽसाध्यस्तु हृद्घ्राणरसनोपहतो नरः।
मांसैः पतद्भिरत्यर्थं वेदनार्तो जहात्यसून् ॥ १ ॥

असाध्य विष वाले बिच्छु के काटने से हृदय, नाक, जिह्वा इनका कार्य बन्द हो जाता है। तथा मांस शरीर में से टूट २ कर गिरने लगता है और घोर पीड़ा से युक्त होकर प्राणी प्राणों को त्याग देता है ॥ १ ॥

अथ कणभदष्टस्य लक्षणमाह—विसर्पः श्वयथुः शूलं ज्वरश्छर्दिरथापि वा।
लक्षणं कणभैर्दष्टे दंशश्चैवावशीर्यते ॥ १ ॥

कणभ नामक अग्निप्रकृतिक कीड़े के काटने से शरीर में विसर्प होजाता है, सूजन होजाती है, शूल होता है, ज्वर तथा वमन होती है तथा दंशस्थान फट जाता है ॥ १ ॥

अथोच्चिटिङ्गदष्टस्य लक्षणमाह—

हृष्टलोमोच्चिटिङ्गेन स्तब्धलिङ्गो भृशार्तिमान्।
दष्टः शीतोदकेनेव सिक्तान्यङ्गानि मन्यते ॥ १ ॥

उचिंडे नामक वातप्रकृतिक कीट (A sort of cricket) के काटने से लोमहर्ष होजाता है। मूत्र इन्द्रिय खड़ी होजाती है, तथा अत्यन्त पीड़ा होती है। तथा मनुष्य सारे अंगों को शीतल जल से भींगे हुए अनुभव करता है ॥१॥

अथ सविषमण्डूकदष्टस्य लक्षणमाह—

एकदंष्ट्रार्दितः शूनः सरुजः पीतकः सतृट्।
सनिद्रश्छर्दिमान्दष्टो मण्डूकैः सविषैर्भवेत् ॥ १ ॥

विषवाले मेंडक से काटा हुआ मनुष्य एक दाढ़ से पीड़ित होजाता है, शरीर सूज जाता है, पीड़ा होती है, शरीर का रंग पीला होजाता है तथा रोगी प्यास युक्त होता है। नींद आती रहती है, वमन आती है ॥ १ ॥

अथ मत्स्यविषस्य कार्यमाह—

मत्स्यास्तु सविषाः कुर्युर्दाहं शोथं ज्वरं तथा ॥ १ ॥

विषवाली मछलियों के काटने से मनुष्य को दाह होता है, शोथ होता है तथा ज्वर होता है ॥ १ ॥

अथ जलौकाविषकार्यमाह–कण्डूं शोथं ज्वरं कुर्युः सविषास्तु जलौकसः १

विषवाली जौंकों के शरीर में लग जाने से तथा उन का विष शरीर में चढ जाने से शरीर में खुजली होती है, सूजन होती है, तथा ज्वर होजाता है। (यह सब जोंकों के लगने से उपद्रव नहीं होते केवल विषयुक्त जोंकों के लग

जाने से ही ये उपद्रव होते हैं) ॥ १ ॥

अथ गृहगोधिकाविषकार्यमाह—**विदाहं श्वयथुं तोदं स्वेदं च गृहगोधिका॥१॥**

छिपकली के विष से विदाह होता है, सूजन होती है, तोद अर्थात् सूई चुभोने के समान पीड़ा होती है तथा पसीना आता है ॥ १ ॥

अथ शतपदीविषलक्षणमाह—**दंशे स्वेदं रुजां दाहं कुर्याच्छतपदीविषम् १॥**

कानखजूर के काटने से दष्टस्थान में स्वेद आता है, पीड़ा होती है तथा दाह होता है ॥ १ ॥

अथ मशकविषलक्षणमाह—**कण्डूमान्मशकैरीषच्छोथः स्यान्मन्दवेदनः १॥**

मच्छरों के काटने से थोड़ी २ सूजन होजाती है जिस में खुजली होती है तथा मन्द २ पीड़ा होती है ॥ १ ॥

असाध्यमशकक्षतलक्षणमाह—**असाध्यकीटसदृशमसाध्यमशकक्षतम्॥१॥**

असाध्य मच्छर के क्षत के लक्षण असाध्य कीड़े के क्षत के समान होते हैं १

अथ मक्षिकादोषलक्षणमाह—

सद्यः प्रस्राविणी श्यावा दाहमूर्च्छाज्वरान्विता।
पिटिका मक्षिकादंशे तासां तु स्थगिका सुहृत्॥ १ ॥

मक्खियों के दंश स्थान पर शीघ्र ही बहने वाली सांवले रंग की, दाह, मूर्च्छा तथा ज्वर से युक्त पिड़िका उत्पन्न हो जाती है। उन पिड़िकाओं का मित्र स्थगिका है अर्थात् स्थगिका से वे फुंसियां नष्ट हो जाती हैं। (स्थगिका—ताम्बूलकरङ्काकारबन्धनविशेषे, अंगुष्ठांगुलिमेढाग्रेषु व्रणबन्धनभेदे ॥ सु. सू. १८ अ। लक्षण—"स्थगिकास्थगिकाकारां मेढ्रांगुष्ठांगुलार्पिताम् । यथास्वमौषधैः पूर्णां कल्पयेत् सुसमाहितः।" सुश्रुत चिकित्सा १९ अध्याय डल्हण) ॥ १ ॥

अथ व्याघ्रादिप्रमुखाणां विषकार्यमाह—

चतुष्पाद्भिर्द्विपाद्भिर्वा नखदन्तक्षतं च यत्।
शूयते पच्यते वाऽपि स्रवति ज्वरयत्यपि ॥ १ ॥

चौपायों या मनुष्यादि दो पैर वालों के नख दांत आदि से जो क्षत हो जाते हैं। वे सूज जाते हैं। पक जाते हैं, बहते हैं वा ज्वर करते हैं ॥ १ ॥

अथ श्वानदष्टविषलक्षणमाह—

प्रभ्रान्तस्तापयुक्तः श्वसनकसनवान्पीतदृक्पीतमूत्रः
सोन्मादो बुक्कमानो दशति च मनुजं योऽतिकालक्रमेण।
वर्षाकाले विषार्तः प्रभवति विकलोऽसाध्यतामाप्नुयाच्च
प्रायो वातप्रधानोऽखिलमलकलितः सारमेयेण दष्टः ॥ १ ॥

कुत्ते से काटा हुआ मनुष्य प्रभ्रान्त अर्थात् भ्रमयुक्त रहता है, तापयुक्त होता है, श्वास तथा कास युक्त होता है, पीली दृष्टि तथा पीले मूत्र वाला होता है। अतिकाल के बाद उन्माद युक्त होता है, भौंकते हुए ही मनुष्य को काटता है।

वर्षाकाल में विष से युक्त हो जाता है, तथा व्याकुल हो जाता है तथा असाध्य हो जाता है । प्रायः इस रोग में वात की प्रधानता होती है तथा अन्य सभी दोष भी कुपित हुए २ होते हैं ।। १ ।।

अथ विषोज्झितः कीदृशो भवतीति दर्शयितुमाह—

प्रसन्नदोषं प्रकृतिस्थधातुमन्नाभिकामं सममूत्रविट्कम् ।
प्रसन्नवर्णेन्द्रियचित्तचेष्टं वैद्योऽधिगच्छेदविषं मनुष्यम् ॥ १ ॥

जिस मनुष्य के वातादि दोष प्रसन्न हो जायें, जिसकी धातुयें अपनी २ प्रकृति में हो, जो अन्न खाने की इच्छा करे, जिसको मूत्र तथा मल समान ही निकले । जिसका रंग, इन्द्रियें चित्त तथा चेष्टा प्रसन्न हों अर्थात् स्पष्ट विशुद्ध हों, ऐसे मनुष्य को वैद्य विष रहित हुआ २ समझ लेवे ।। १ ।। इति जङ्गमविषाणि ।

अथ विषाणां चिकित्सा ।

तत्राऽऽदौ स्थावरविषस्य चिकित्सा—

स्थावरेण विषेणाऽऽर्तं नरं यत्नेन वामयेत् ।
वमनेन समं नास्ति यतस्तस्य चिकित्सितम् ॥ १ ॥

वैद्य स्थावर विष वाले रोगी को यत्नपूर्वक वमन करा देवे । क्योंकि वमन के समान इसकी और कोई चिकित्सा नहीं है ।। १ ।।

अथ वमनम्—**तिक्तकोशातकीक्वाथं पिबेन्मध्वाज्यसंयुतम् ।**
कटुकालाबुमूलं वा तत्पत्रं वा पिबेज्जलैः ॥ १ ॥
तत्क्षणाद्वमनाद्धन्ति विषं योगाद्विमुच्यते ।

कड़वी तोरी की जड़ का क्वाथ शहद तथा घी मिलाकर पिलावें । अथवा कड़वी तुम्बी की जड़वा कड़वी तुम्बी के पत्तों को जल से पीसकर पिलावें ।। १ ।। तो तत्क्षण ही वमन होकर विष नाश हो जाता है तथा इस योग से रोगी विष रहित हो जाता है ।।

अथ विषेशीतलः प्रषेकः—**विषमत्यर्थमुष्णं च कथितं मुनिभिर्यतः ॥ २ ॥**

विष अत्यन्त गरम होता है ।। २ ।।

अतः सर्वविषे प्रोक्तः परिषेकस्तु शीतलः ।
औष्ण्यात्तैक्ष्ण्याद्विशेषेण विषं पित्तं प्रकोपयेत् ॥ ३ ॥

इस लिये सभी विषों में शीतल प्रषेक अर्थात सिंचन करना चाहिये । विष क्योंकि उष्ण तथा तीक्ष्ण होता है इस कारण विशेष करके पित्त को कुपित कर देता है ३

वमितं सेचयेत्तस्माच्छीतलेन जलेन च ।
पाययेन्मधुसर्पिर्भ्यां विषघ्नं भेषजं द्रुतम् ॥ ४ ॥

इस लिये वमन कराकर रोगी को शीतल जल से सिंचन करे । और फिर शहद तथा घी मिलाकर विषघ्न औषध को शीघ्र ही पिलावे ॥ ४ ॥

अथ विषेऽम्लरसप्रयोगः—भोक्तुमम्लरसं दद्याच्चर्वयेन्मरिचानि च।

विष खाये हुए मनुष्य को अम्लरस अर्थात् खट्टारस देना चाहिये। तथा काली मिरचें चबाने के लिये देनी चाहियें॥

अथ विषस्य लिङ्गविपरीतचिकित्सामाह—

यस्य यस्य च दोषस्य पश्येल्लिङ्गानि भूरिशः॥
तस्य तस्यौषधैः कुर्याद्विपरीतगुणैः क्रियाम्॥ ५॥

जिस २ वातादि दोषों के लक्षण विष खाये हुए रोगी में अधिक देखे। उसी उसी दोष के विपरीत गुण वाली औषध का प्रयोग करके तथा क्रिया करके उस दोष की शान्ति कर देवे॥ ५॥

अथ लेपः—मूलत्वक्पत्रपुष्पाणि बीजं चेति शिरीषतः।
गवां मूत्रेण संपिष्टं लेपाद्विषहरं परम्॥ १॥

सिरस की जड़, सिरस की छाल, सिरस के पत्ते, सिरस के फूल, सिरस के बीज इन सब को समभाग लेकर गौ के मूत्र से पीसकर लेप करें तो विष के नाश करने में यह योग श्रेष्ठ है॥ १॥ इति स्थावरविषचिकित्सा।

अथ जङ्गमविषचिकित्सा—तत्राऽऽदौ सर्पविषचिकित्सामाह—

कार्याः सद्यः सर्पदष्टे मणिमन्त्रौषधक्रियाः।
अचिन्त्यो हि प्रभावोऽस्ति मणिमन्त्रौषधस्य यत्॥ १॥

सांप के काटने पर तुरन्त ही मणिधारण, मंत्रजप तथा औषध क्रिया करनी चाहिये, क्योंकि मणियों का मंत्रों का तथा औषधों का प्रभाव अचिन्त्य होता है॥ १॥

तण्डुलीयकमूलयोगः—तण्डुलीयकमूलं तु पीतं तण्डुलवारिणा।
तक्षकेणापि दष्टं हि निर्विषं कुरुते नरम्॥ २॥

चौलाई की जड़ को पीसकर चावलों के धोवन के साथ पिलाने से यदि तक्षक सांप ने भी काटा हो तो भी रोगी क्षण में निर्विष होजाता है॥ २॥

घृतादिसप्तकोऽगदः—घृतमधुनवनीतं पिप्पलीशृङ्गबेरं
मरिचमपि च दद्यात्सप्तमं सैन्धवं च।
यदि भवति सरोषं तक्षकेणापि दष्टो-
ऽगदमिह खलु पीत्वा निर्विषस्तत्क्षणेन॥ ३॥

घी, शहद, मक्खन, पीपल, सोंठ, मिरच तथा सातवां सेंधानमक ये सातों द्रव्य समान भाग लेकर मिलाकर पिलावें तो भयंकर क्रोधी तक्षक सांप से काटे हुए रोगी को भी यह अगद (विषनाशक औषधों को अगद नाम से पुकारा जाता है जिसे आजकल यूनानी में तिर्याक कहा जाता है) तत्क्षण ही निर्विष कर देता है॥ ३॥

प्रत्यङ्गिरामूलयोगः—मूलं तण्डुलवारिणा पिबति यः प्रत्यङ्गिरासंभवं
निष्पिष्टं शुचिभद्रयोगदिवसे तस्याहिभीतिः कुतः।

दर्पादेव फणी यदा दशति तं मोहान्वितो मूलतः
स्थाने तत्र तदैव याति नियतं वक्त्रं यमस्याचिरात् ॥४॥

(प्रत्यङ्गिरा-कण्टकशिरीषे, श्वेत पुनर्नवायाम्) कण्टकसिरस की जड़ या श्वेत पुनर्नवा की जड़ को चावलों के धोवन से पीसकर (शुचि-आषाढमासे, ज्येष्ठमासे) (भद्रयोगदिवसे पुष्यानक्षत्रदिवसे) ज्येष्ठ वा आषाढ मास के पुष्य-नक्षत्र के दिन जो मनुष्य पीता है, उसे सांप काटने का भय नहीं रहता। यदि अहंकार वश सांप उस मनुष्य को काट ही लेवे तो वह सांप मोहयुक्त हुआ २ उसी स्थान पर शीघ्र ही मर जायेगा ॥ ४ ॥

शिरीषभावितमरिचयोगः—शिरीषपुष्पस्वरसे सप्ताहं मरिचं सितम्।
भावितं सर्पदष्टानां पाने नस्याञ्जने हितम् ॥५॥

सिरस के फूलों के स्वरस में श्वेतमिरचों को एक सप्ताह तक भावित करें फिर सांप के काटे हुए रोगियों को उसे पिलावें, नस्य दें अथवा अंजन दें तो यह हित करती है ॥ ५ ॥

बन्धनम्—दंशोपरि निबध्नीयात्तत्क्षणाच्चतुरङ्गुलम्।
क्षौमादिभिर्वेणिकया सिद्धैर्मन्त्रैश्च मन्त्रयेत् ॥ ६ ॥
अम्बुवत्सेतुबन्धेन स्तभ्यते विषमं विषम्।

सर्प काटे हुए स्थान से चार उंगल ऊपर की ओर तत्क्षण रेशमादि वस्त्रों की या धागों की कसकर पट्टी बांध देवे। और सिद्ध मन्त्रों से उस स्थान को मन्त्रित करे ॥ ६ ॥ तो जैसे बंध बांध देने से जल रुक जाता है इसी प्रकार से विष आगे चढ़ना रुक जाता है ॥

नक्तमालाद्यञ्जनम्—नक्तमालफलव्योषबिल्वमूलनिशाद्वयम् ॥ ७ ॥
सौरसं पुष्पमाजं वा मूत्रं बोधनमञ्जनम्।

बड़ाकरंज के फल, सोंठ, मिरच, पीपल, बिल की जड़, हल्दी, दारुहल्दी ॥७॥ इन सब द्रव्यों को समभाग लेकर चूर्ण करके (सौरसपुष्पं—देवशिरीषपुष्पे तुलसी) सिरस के फूलों के स्वरस में घोटकर अंजन करे अथवा बकरी के मूत्र में पीसकर अंजन करे तो इस अंजन से संज्ञाबोधन होता है ॥

बन्ध्या कर्कोटकीनस्यम्—वन्ध्याकर्कोटकीमूलं छागमूत्रेण भावितम् ॥८॥
नस्यं काञ्जिकसंपिष्टं विषोपहतचेतसः।

बांझ ककोड़े की जड़ को बकरी के मूत्र में भावित करके, कांजी से पीसकर नस्य दें तो विष से मूर्च्छित हुए २ मनुष्य भी जाग उठते हैं ॥

श्वेतादिः—श्वेतामूलं शमीमूलमीश्वरीमूलमेव च ॥ ९ ॥
आदालिका तथा पाठा पृथग्दष्टकबान्धवाः।

(श्वेता—लताशिरीष, कांटाशिरीष, श्वेतवच, श्वेतापराजिता, अतिविषा आदि

श्वेत बच की जड वा शिरीष की जड़, जंड़ी की जड़, बांझ ककोड़े की जड़ ॥ ९ ॥ (आदालिका, दाली = देवदाली, यदि पाठ आदानिका हो तो आदानी = हस्ति लोणा नुनवा बेल को कहते हैं।) देवदाली या बन्दालडोडे की जड़, तथा पाठा की जड़ इन में से किसी भी द्रव्य की पृथक् २ नस्यादि लें तो सर्पदष्ट के रोगियों का हित होता है ॥

कुलीकमूलयोगः—कुलीकमूलनस्येन कालदष्टोऽपि जीवति ॥ १० ॥

(कुलिकः—कण्टकपाली वृक्षे, कांटागुडकांटली, लताशाले) कण्टकपाली वृक्ष की नस्य दें तो मृत्यु रूपी सांप ने भी काटा हो तो भी मनुष्य जी जाता है ॥ १० ॥ इति वृन्दात्।

लांगलीनस्यम्—जलेन लाङ्गलीकन्दं नस्यं सर्पविषापहम्।

लांगली या कलिहारी की जड़ को जल से पसिकर नस्य देवें तो सर्प विष का नाश होता है ॥

टंकणार्कमूल योगः—वारिणा टङ्कणं पीतमथवाऽर्कस्य मूलकम्।

सुहागे को जल से पिलावें तो सांप का विष नष्ट होता है। अथवा आक की जड़ को जल से पीसकर पिलावें तो भी सांप का विष नष्ट होता है ॥ ११ ॥

अथ धूपः-कपोतविग्मर्त्यशिरोरुहाणि सगोविषाणं शिखिपिच्छकाग्रम्
यवस्य धान्यस्य तुषाश्च बीजं कार्पासजं वाऽप्युषिताश्च मालाः॥१॥

कबूतर की बीठ, आदमी के सिर के बाल, गौ का सींग, मोर के पंख का चांद, जो और धान के तुष अर्थात् छिलके, कपास के बीज, रात की बासी पड़ी हुई फूलों की मालायें ॥ १ ॥

इत्यौषधीभिः परिकल्पितोत्तमो धूपोऽगदः स्याद्भुजगैरमुक्ते।
गृहे विधेयः कुशलैरनेन नश्यन्ति सर्पाश्च तथाऽऽखवश्च ॥ २ ॥

इन सब औषधियों से बनाई हुई अगद धूप से उस मकान को धूप दें जिस में सांप बसते हों। तो इस धूप के देने से सांप तथा चूहे उस मकान को छोड़ जाते हैं ॥ २ ॥ इति धूपः ॥

सातलाफेनांजनम्—सातलाफलफेनेनाञ्जनं कृत्वा सर्पविषं नश्यति।

सातला—अर्थात् पीले दूधवाली थोहर के फल की झाग से आंखों में अंजन करें तो सर्पविष का नाश होता है ॥

अथ मन्त्रः—ॐ प्लः सर्पकुलाय स्वाहा, अनेन मन्त्रेण सप्तवारमभि-मन्त्रितां मृत्तिकां गृहमध्ये क्षिपेत्सर्पाः पलायन्ते ॥ १ ॥

"ॐ प्लः सर्पकुलाय स्वाहाः"। इस मंत्र से सात बार अभिमंत्रित की हुई मिट्टी को घर के मध्य में फेंक देवे तो सभी सांप दौड़ जाते हैं अर्थात् उस मकान को छोड़ देते हैं ॥ १ ॥

अथ कालवज्राशनिरसः—पारदं गन्धकं तुत्थं टङ्कणं रजनी समम्।

देवदाल्या द्रवैर्मर्द्य दिनं शुष्कं तु भक्षयेत् ।
कालवज्राशनिर्नाम रसः सर्वविषापहः ।
नरमूत्रं पिबेच्चानु कालदष्टोऽपि जीवति ॥२॥

शुद्ध पारा शुद्धगन्धक, नीला थोथा शोधित, सुहागा, हल्दी प्रत्येक द्रव्य समान भाग लेकर देवदाली के स्वरस से एक दिन मर्दन करके सुखाकर खिलावें। यह कालवज्राशनिनामक रस सभी विषों का नाश करता है। और इसके ऊपर से पुरुष का मूत्र अनुपान के लिये पिया जाय तो साक्षात् मृत्यु ने भी काटा हो तो भी मनुष्य जी जाता है, सांप काटा हुआ तो अवश्य ही जी जाता है ॥ २ ॥ इति सर्पविषचिकित्सा ।

अथ दूषीविषचिकित्सा—दूषीविषार्तं सुस्निग्धमूर्ध्वं चाऽधश्च शोधितम् ।
पाययेदगदं मुख्यमिदं दूषीविषापहम् ॥ १ ॥

दूषी विष से पीड़ित रोगी को अच्छी प्रकार स्निग्ध करके, ऊपर से वमन द्वारा तथा नीचे विरेचन द्वारा शुद्ध करके आगे लिखे हुए दूषी विषनाशक मुख्य अगद को पिला देवें ॥

पिप्पल्यादिगणः—पिप्पली धान्यकं मांसी लोध्रमेला सुवर्चिका ।
मरिचं वालकं चैला तथा कनकगैरिकम् ।
क्षौद्रयुक्तः कषायोऽयं दूषीविषमपोहति ॥ २ ॥

पिप्पली, धनियाँ, जटामांसी, लोध, इलायची, सज्जी, मिरच, सुगंधबाला, इलायची, सुनहरी गेरू इन सब को समभाग लेकर क्वाथ कर के शहद मिलाकर पिलाने से दूषीविष का नाश होता है ॥ २ ॥ इति भावप्रकाशात् ॥

अथ कृत्रिमविषचिकित्सा—कृत्रिमं तु विषं ख्यातं पक्षान्मासाद्विबाधते ।
आलस्यं कुरुते जाड्यं कासश्वासौ बलक्षयम् १
रक्तस्रावो ज्वरः शोफः पीतचक्षुश्च लक्षयेत् ।

कृत्रिम विष खा लेने से एक पक्ष या एक मास में उसका प्रभाव होकर पीड़ा होती है ॥ शरीर में आलस्य होता है, जड़ता होती है, कास श्वास तथा बल का क्षय होजाता है ॥ १ ॥ खून निकलने लगता है, ज्वर होता है, आंखें पीली होजाती हैं ॥

शर्करासुवर्णादिलेहः—शर्कराचूर्णसंयुक्तं चूर्णं ताप्यसुवर्णयोः ॥ २ ॥
लेहः प्रशमयत्युग्रं नानायोगकृतं विषम् ।

खांड से सोनामाखी का चूर्ण और सुवर्ण भस्म पीसकर मिलाकर रोगी को खिलावें ॥ ३ ॥ तो नाना योगों से बनाये हुए उग्र कृत्रिम विष के प्रभाव भी प्रशान्त होजाते हैं ॥

पुत्रजीवमज्जयोगः—पुत्रजीवस्य मज्जां च निष्कमात्रां गवां पयैः ॥ ३ ॥
पिष्ट्वा चोग्रं गरं हन्यान्नानायोगकृतं विषम् ।

पुत्रजीवक या जीयापोता के फल की मज्जा को एक निष्क भर लेकर गौ के दूध के साथ पीसकर ॥ ३ ॥ पिलाया जाये तो नाना प्रकार के योगों से बनाए हुए कृत्रिमविष का नाश होता है ।।

गृहधूमादिघृतम्—गृहधूमं जलैः पिष्ट्वा तण्डुलीमूलतुल्यकम् ॥ ४ ॥

रसोई घर का धुंआं, जल से पीस ले इसे एक पल ले, चौलाई की जड़ भी एक पल ले ॥ ४ ॥

कल्काच्चतुर्गुणं चाऽऽज्यं घृतात्क्षीरं चतुर्गुणम् ।
घृतशेषं पचेत्सर्वं पिबेत्सर्वगरापहम् ॥ ५ ॥

दोनों का कल्क करे, इस कल्क से चौगुना अर्थात् ८ पल गौ का घी लेवे । और घी से चौगुना अर्थात् ३२ पल गौ का दूध लेवे । सबको एकत्र करके घी पका लेवे । इस घी को पिलायें तो सब प्रकार के गर अर्थात् कृत्रिमविषों का नाश होता है

पारावतादिहिमम्—पारावतामिषसटीपुष्कराह्वश्रृतं हिमम् ।
गरतृष्णारुजाकासश्वासहिध्माज्वरापहम् ॥ ६ ॥

कबूतर का मांस, कचूर, पोहकरमूल इन सबको समभाग लेकर क्वाथ करके शीतल करलें, उसे पिलावें तो कृत्रिमविष, तृष्णा, पीड़ा, कास, श्वास, हिक्का तथा ज्वर का नाश होता है ।। ६ ।। इति वृन्दात् ।

अथ गरनाशनरसः—शुद्धसूतं मृतं स्वर्णं संशुद्धं हेममाक्षिकम् ।
त्रयाणां गन्धकं तुल्यं मर्द्यात्कन्याद्रवैर्दिनम् ॥१॥

शुद्ध पारा, शुद्ध स्वर्णभस्म, शुद्ध स्वर्ण माक्षिकभस्म इन में से प्रत्येक द्रव्य एक २ भाग लेकर सबको एकत्र कर लेवे, इसमें सबके बराबर शुद्ध गन्धक डाले। सबको एकत्र मर्दन करके घाकुमारी के रस से एक दिन मर्दन करे ॥ १ ॥

तच्छुष्कं ससितक्षौद्रं माषैकं लेहयेत्सदा ।
वह्निमूलं श्रृतं क्षीरैरनु स्याद्गरनाशनम् ॥ २ ॥

जब सूख जावे तो इसे एक माषा भर लेकर खांड तथा शहद मिलाकर नित्य भक्षण करावे । और चीते की जड़ को दूध में पकाकर उस दूध को अनुपान में पिलावें तो गर अर्थात् कृत्रिम विष का नाश हाता है ।।२०।। इति कृत्रिमविषचिकित्सा।।

अथ नखदन्तविषचिकित्सा—

पिचुमन्दशमीवटकल्कयुतं क्वथित जलमाशु विलोडनतः ।
नखदन्तविषाणि निहन्ति नृणां विषमाण्यखिलान्यपि सत्यमिदम् १॥

पिचुमन्द अर्थात् नीम की छाल, शमी अर्थात् जंड की छाल, बड़ की छाल इन सबके कल्क से जल को पका लें अर्थात् इनका क्वाथ करलें । इस क्वाथ को काटे हुए स्थान पर डालने से शीघ्र ही नख तथा दांत के विष चाहे किसी प्रकार के भी भयंकर हों सब नष्ट हो जाते हैं । यह वचन सत्य है ॥ १ ॥

अथाऽऽखुविषचिकित्सा—आगारधूममञ्जिष्ठारजनीलवणोत्तमैः।
लेपोजयत्याखुविषं कोशातक्यथ वा सिता ॥१॥

रसोई घर का धुंआं, मंजीठ, हल्दी, सेंधालवण इनको पीसकर लेप करें तो चूहे का विष नष्ट हो जाता है। अथवा तोरी का वा खांड का लेप भी चूहे के विष को नष्ट करता है ॥ १ ॥

सर्पनिर्मोकधूमः—उगरेण विनिर्मुक्तनिर्मोकधूमसेवनात्।
पथ्याशी त्रिदिनं धूमो भवेदाखुविषापहः ॥ २ ॥

सांप की केंचुली के धुएं को सेवन कराके पथ्य भोजन देवे तो तीन दिन में चूहे का विष नाश हो जाता है ॥ २ ॥ इतिसारसंग्रहात्।

कुष्ठादिचूर्णम्—

कुष्ठं वचामदनकोशवतीफलेन संयोजितं तदिति चूर्णमिदं चतुर्णाम्।
गोमूत्रपीतमखिलाखुविषं निहन्ति कोशातकीक्कथनमापिबतोऽथ वापि

कूठ, बच, मैनफल, देवदाली के फल इन चारों का समभाग चूर्ण करके गोमूत्र के साथ पिलावें तो सभी प्रकार के चूहों के विषों का नाश होता है। अथवा केवल कड़वी तुम्बी का क्काथ पिलावें तो भी सब प्रकार के चूहों के विषों का नाश होता है ॥ ३ ॥

तुलसीरसप्रयोगः—

तुलसीरसेन गोदन्तशिलाभ्यां क्षुरेण प्रच्छिद्य लेपः कार्यो विषं नश्यति४॥

तुलसी के रस में गौ के दांत तथा मनसिल पीसकर चूहे के काटे हुए स्थान को छुरे से छील कर वहां इनका लेप कर देवे तो विष का नाश हो जाता है ॥४॥

चित्रकतैलम्—अथवा चित्रकमूलचूर्णं तैले विपाच्य मस्तके क्षुरेण
प्रच्छिद्य शिरसि ब्रह्मरन्ध्रे मर्दनं कृत्वाऽऽखुविषं नश्यति ॥५॥

चीते की जड़ का चूर्ण तेल में पका लें। फिर मस्तक को छुरे से छीलकर उस स्थान पर तथा सिर में ब्रह्मरन्ध्र पर इस तेल की मालिश करे इससे चूहे का विष नष्ट हो जाता है ॥ ५ ॥

चिञ्चाफलादियोगः—चिञ्चाफलसमायुक्तं गृहधूमं पलार्धकम्।
पुराणाज्येन सप्ताहं लिहेदाखुविषं हरेत् ॥ १ ॥

इमली का फल तथा घर का धुंआं दोनों को समभाग लेकर मिलित आधा पल ले, पुराने घी से मिलाकर एक सप्ताह तक चाटे तो चूहे के विष का नाश होता है १

अथ रसः—रसं गन्धं विषं चैव त्र्यूषणं टङ्करोहिणी।
पुनर्नवारसैर्मर्द्यं गोमूत्रे च द्विगुञ्जकम् ॥ १ ॥

शुद्धपारा, शुद्धगंधक, शुद्धविष, सोंठ, मिरच, पीपल, सुहागा, कुटकी॥ इन सब को समभाग लेकर विधिपूर्वक मर्दन कर के पुनर्नवा के रस में खरल करे। फिर गोमूत्र से मिलाकर इस रस की दो रत्ति मात्रा खावे ॥ १ ॥

पिबेदाखुविषीर्तानां सर्वं हरति तद्विषम्।
विषदंष्ट्रोद्भवानन्यान्हन्दादाखुविषान्तकः॥ २॥

तो चूहे के विष से ग्रस्त रोगियों के सब प्रकार के विष को यह योग हरता है। तथा विष दंश से उत्पन्न हुए २ अन्य रोगों को भी यह आखु विषान्तक रस नष्ट करता है॥ २॥

अपरो योगः—रसगन्धनिशाबन्धुगृहधूमशिरीषजम्।
बीजं दिनकरक्षीरैर्मर्दयित्वा विलेपयेत्॥
विशेषान्मूषकविषं हन्यादन्यान्विषोद्भवान्॥ ३॥

शुद्धपारा, शुद्धगंधक, हल्दी, पीतशाल, रसोईघर का धुआं, सिरस के बीज इन को विधिपूर्वक खरल कर के, आक के दूध में मर्दन कर के काटे हुए स्थान पर लेप फर दे। तो यह योग विशेष कर के चूहे के विष को तथा विषजनित अन्य उपद्रवों को नाश करता है॥३॥ इत्याखुविषचिकित्सा॥

अथ वृश्चिकविषचिकित्सा।

जीरकादिलेपः—जीरकस्य कृतः कल्को घृतसैन्धवसंयुतः।
सुखोष्णो मधुना लेपो वृश्चिकस्य विषं हरेत्॥ १॥

श्वेत जीरे का कल्क कर के घी तथा सेंधानमक मिलाकर शहद डालकर कोसा २ लेप करे तो बिच्छु का विष नष्ट होजाता है॥ १॥

सूर्यावर्त्तपत्रगन्धः—गन्धमाघ्राय मृदितं सूर्यावर्तदलस्य तु।
वृश्चिकेन नरो विद्धः क्षणाद्भवति निर्विषः॥ २॥

सूर्यमुखी के पत्तों को मलकर सूंघने से बिच्छु के काटे हुए रोगी क्षणभर में निर्विष होजाते हैं॥ २॥ इति भावप्रकाशात्॥

कासमर्दपत्रप्रयोगः—यः कासमर्दपत्रं वदने निक्षिप्य कर्णफूत्कारम्।
मनुजो ददाति शीघ्रं जयति विषमाशु वृश्चिकानां सः॥१॥

जो मनुष्य कसौंदी के पत्तों को मुंह में चबाकर उस की फूंक को रोगी के कान में मारता है तो वह मनुष्य बिच्छु के विष को इस योग से शीघ्र ही दूर कर देगा॥ १॥ इति वृन्दात्॥

अजाक्षीरादि—अजाक्षीरेण संपिष्टा शिरीषफलमिश्रिता।
उपकुल्या विषं हन्ति वृश्चिकस्य प्रलेपतः॥ १॥

बकरी के दूध से पीपली को पीसले साथ में शिरीष के फल अर्थात् बीजों को पीसले। दोनों को मिलाकर लेप करदे तो बिच्छू का विष नष्ट होता है॥ १॥

कार्पासपत्रादि—कार्पासपत्रैः संपिष्टैराज्यलेपो विषापहः।
वृश्चिकस्याथ वा वत्सनागलेपः प्रशस्यते॥ २॥

कपास के पत्तों को घी से मिलाकर पीसकर लेप कर दे तो बिच्छू का विष नष्ट होता है। अथवा वत्सनाभविष को जल से पीसकर लेप करे तो भी बिच्छु

का विष नष्ट होजाता है ॥ २ ॥

मनःशिलादिगुटिका—मनःशिलाकुष्ठकरञ्जबीजाशिरीषकाश्मीरभवैःसमांशैः
विनिर्मिताऽऽस्ये विधृता च लिप्तः संहारिणी वृश्चिकवैकृतस्य ॥ ३॥

शुद्ध मनसिल, कूठ, करंज के बीज, सिरस के बीज, गंभारी के फल सब को समभाग लेकर पीसकर गोली बनाकर मुंह में रखें और विषस्थान पर लेप कर दें तो यह विच्छु के विष का नाश करती है ॥ ३ ॥

मातुलुङ्गमूलप्रयोगः—मातुलुङ्गस्य मूलं तु रविवारे समुद्धरेत्।
उत्तराभिमुखेनैव ह्रीमन्त्रोच्चारणात्स्पृशेत् ॥ ४ ॥

बिजौरे नीबू की जड़ को रविवार के दिन उखाड़कर उत्तर की ओर मुंह कर के वैद्य खड़ा होवे। फिर "ॐ ह्रीं" इस मंत्र को उच्चारण करता हुआ ॥४॥

वामाङ्गे दक्षिणे दष्टे वामदष्टे च दक्षिणे।
सप्तधा मार्जनेनैव विषं वृश्चिकजं हरेत् ॥ ५ ॥

रोगी के यदि दांये भाग में बिच्छु ने काटा हो तो उस जड़ को बांयें भाग में स्पर्श करे और यदि बांयें भाग में बिच्छु ने काटा हो तो दांयें अंग में इस जड़ को स्पर्श करे। इस प्रकार सात बार मार्जन करने से ही बिच्छु का विष नष्ट होजाता है ॥ ५ ॥

श्वेतपुनर्नवायोगः—श्वेतं पुनर्नवामूलं रविवारे समुद्धरेत्।
कार्पासमूलं चर्वित्वा विषं वृश्चिकजं हरेत् ॥ ६ ॥

रविवार के दिन कपास की जड़ को चबाकर यदि पुनर्नवा की जड़ को रोगी उखाड़ ले तो बिच्छु का विष नष्ट होजाता है ॥ ६ ॥

हंसपदीमूलयोगः—ग्राह्यं हंसपदीमूलं प्रातरादित्यवासरे।
मुखैस्तन्निष्कृतिः कर्णे विषे वृश्चिकजं हरेत् ॥ ७ ॥

रविवार के दिन प्रातःकाल ही हंसपदी अर्थात् हंसराज की जड़ को मुख से चबाकर उस के रस को रोगी के कान में डालें तो बिच्छु के विष का नाश होता है॥

अथ मन्त्रविधिः—ॐ ह्रः फट्स्वाहा। अनेन मन्त्रेणापो मार्जयेत्।

"ॐ ह्रः फट् स्वाहा"। इस मंत्र से जल के छींटें देवे तो भी बिच्छु का विष नाश होता है॥

अथ मन्त्रः—आदित्यरथवेगेन विष्णुबाणबलेन च।
गरुडपक्षनिपातेन भूम्यां गच्छ महाविष ॥ १ ॥

"आदित्यरथवेगेन विष्णुबाणबलेन च। गरुडपक्षनिपातेन भूम्यां गच्छ महाविष" अर्थात् सूर्य के रथ के समान वेग से, विष्णु के बाण के बल से, गरुड़ के उड़ने की तीव्रता के समान तीव्रता से हे महाविष! तू भूमि में चला जा। इस मंत्र को बोलकर जल के छींटे दें तो भी बिच्छु का विष नष्ट होता है ॥ १ ॥ इति मंत्रः॥

जैपालप्रयोगः—पानीयपिष्टजेपालकल्कलेपेन सर्वथा।
विषं वृश्चिकविद्धस्य भस्मीभवति तत्क्षणात् ॥ २ ॥

जमालगोटे के बीज को पानी में पीसकर कल्क कर के बिच्छु के काटे हुए स्थान पर लगावें तो बिच्छू का विष तत्क्षण भस्म होजाता है ॥ २ ॥

नवसागरादिलेपः—नवसागरहरिताले पिष्टे तोयेन लेपनाद्दंशे।
तत्क्षणमेव हि जयतो वृश्चिकविद्धस्य दुर्धरक्ष्वेडम् ३॥

नौसादर और हड़ताल दोनों को जल से पीसकर दंशनस्थान पर लेप करें तो बिच्छु के काटे हुए स्थान की भयंकर पीड़ा को नष्ट करते हैं ॥ ३ ॥

उल्लीपाषाणलेपः—उल्लीपाषाणमादाय निम्बुनीरेण संयुतम्।
दंशस्थाने लेपनं स्याद्विषं वृश्चिकजं हरेत् ॥ ४ ॥

संखिये को नीबू के स्वरस से पीसकर दंशस्थान पर लेप करने से वृश्चिक के विष का नाश होता है ॥ ४ ॥ इति वृश्चिकविषचिकित्सा ॥

अथ कीटजलौकादिविषचिकित्सा—

कटभ्यर्जुनशैरीषशेलुक्षीरिद्रुमत्वचाम्।
कषायकल्कचूर्णाः स्युः कीटलूताव्रणापहाः ॥ १ ॥

कटभी लताशिरीष या अर्थात् मालकंगनी, अर्जुन, सिरस, लसूढ़ा, पीपल, बड़, पिलखन, गूलर जलबेतसादि क्षीरीवृक्षों के क्वाथ; कल्क और चूर्णों के प्रयोग करने से कीड़े, मकड़ी आदि से हुए २ व्रणों का नाश होता है ॥ १ ॥ वृन्दात् ॥

अथ दशाङ्गागदम्—वचाहिङ्गुविडङ्गानि सैन्धवं गजपिप्पली।
पाठाप्रतिविषाव्योषं कश्यपेन विनिर्मितम् ॥ २ ॥

वच, हींग, वायविडंग, सेंधानमक, गजपीपली, पाठा, अतीस, सोंठ, मिरच, पीपल इन दस पदार्थों को समभाग लेकर पीसकर चूर्ण कर लें ॥ २ ॥

दशाङ्गमगदं पीत्वा सर्वकीटविषं जयेत्।
कीटदष्टक्रियाः सर्वाः समानाः स्युर्जलौकसाम् ॥ ३ ॥

इस कश्यप के बनाये हुए दशाङ्गअगद को पीकर सभी प्रकार के कीड़ों के विष नष्ट होते हैं। कीड़ों के काटने पर जो क्रियायें करनी होती हैं वे ही जोंकों के काटने पर करनी चाहियें ॥ ३ ॥

अथ वरटीविषचिकित्सा—मरीचं नागरोपेतं सिन्धुसौवर्चलान्वितम्।
फणिवल्लीरसैर्लेपाद्धन्ति तद्वरटीविषम् ॥ १ ॥

मिरच, सोंठ, सेंधानमक, सोंचलनमक सबको समभाग लेकर पीसकर पान के स्वरस से पीसकर दंश पर लेप करें तो भिड़ काटने का विष नष्ट होता है॥१॥

अथ लूताविषचिकित्सा—रजनीद्वयमञ्जिष्ठापतङ्गगजकेसरैः।
शीताम्बुपिष्टैरालेपः सद्यो लूताविषापहः ॥१॥

हल्दी, दारुहल्दी, मंजीठ, पत्तङ्ग की लकड़ी, नागकेसर इन सबको पीसकर शीतल जल से मिलाकर लेप करें तो मकड़ी का विष तुरन्त दूर हो जाता है॥१॥

गिरिकर्ण्यादिलेपः—गिरिकर्णीद्वयं शेलुः पाटला द्वे पुनर्नवे।
कपित्थश्च शिरीषश्च लेपो लूताविषापहः॥१॥

श्वेत अपराजिता, काली अपराजिता या कोयल, लसूढ़े, पाटला की छाल, पुनर्नवा लाल, श्वेत पुनर्नबा, कैथ, सिरस की छाल इन सबको एकत्र करके अथवा पृथक् २ भी लेप किया जाये तो मकड़ी का विष नष्ट हो जाता है॥२॥

अथ मण्डूकविषचिकित्सा—

शिरीषबीजैः कुलिशद्रुमस्य क्षीरेण पिष्टैः कृतलेपनानाम्।
विषं विनाशं व्रजति क्षणेन मण्डूकदंशप्रभवं नराणाम्॥१॥

सिरस के बीजों को थोहर के दूध से पीसकर लेप करें तो मेढक के काटने से चढ़ा हुआ विष क्षणभर में नष्ट हो जाता है।१॥

अथ भृङ्गीमत्स्यविषचिकित्सा—कृष्णवेत्रस्य निष्क्काथे कल्को घृतविमिश्रितः।
भृङ्गीमत्स्यविषं हन्ति धूमो वा बर्हिपत्त्रजः॥२॥

कालीबेत के क्काथ और कल्क में घी पिलाया जाय तो भृङ्गी मत्स्य के विष का नाश हो जाता है। अथवा मोर के पंख का धुंआं दें तो भी इस विष का नाश होजाता है

अथ शतपदीविषचिकित्सा—लेपः प्रदीपतैलस्य खर्जूराविषनाशनः।
हारिद्राद्वयलेपो वा सगैरिकमनःशिलः॥१॥

दीपक के तेल का लेप (खर्जूरः—वृश्चिके) बिच्छु तथा कानखजूरे का विष नाश करता है। अथवा हल्दी, दारुहल्दी, गेरु तथा मनसिल इन सब को सम-भाग लेकर लेप करें तो भी कानखजूरे के विष का नाश होता है॥१॥

अथ भ्रमराविषचिकित्सा—नागरं गृहकपोतपुरीषं बीजपूरकरसो हारितालम्।
सैन्धवं च विनिहन्ति विलेपादाशु भृङ्गजनितं विषमेतत्॥१॥

सोंठ, घर के कबूतर की बीठ, बिजौरे नीबू का स्वरस, हड़ताल, सेंधानमक इन सबको मिलाकर लेप करें तो यह भौंरें के काटने से चढ़े हुए विष को शीघ्र ही नाश करता है॥१॥

अथ पिपीलिकादिविषचिकित्सा—पिपीलिकाभिर्दष्टानां मक्षिकामशकैस्तथा।
गोमूत्रेण वरालेपः कृष्णवल्मीकमृत्कृतः॥१॥

कीड़ियें, मक्खियां तथा मच्छरों से काटे हुए स्थानों पर हरड़, बहेड़ा, आंवला काली बांबी की मिट्टी इन सबको समभाग लेकर गोमूत्र स पीसकर लेप करें तो इन सबका विष नष्ट हो जाता है॥१॥

अथ मक्षिकापिटकाविषचिकित्सा—सोमवल्कोऽश्वकर्णश्च गोजिह्वा हंसपद्यपि
रजन्यौ गैरिकं लेपो मक्षिकापिटकापहः॥१॥

सोम की छाल, शाल वा सर्जशाल, गौजबां या गोजिया, हंसराज, हल्दी, दारुहल्दी, गेरू इन सब को समभाग लेकर पीसकर लेप करें तो मक्खी काटने से हुई २ पिटिकायें नष्ट होजाती है ॥ १ ॥

अथ श्वानविषचिकित्सा—काकोदुम्बरिकामूलं धत्तूरफलसंयुतम्।
पीतं तण्डुलतोयेन सारमेयविषापहम् ॥ १ ॥

काकोदुम्बरिका अर्थात् जंगली या पहाड़ी अंजीर की जड़ को धतूरे के फल से मिलाकर चावलों के धोवन से पिया जाये तो कुत्ते के विष का नाश होता है॥१॥

कारस्करफललेपः—कारस्करफलं सेव्यं क्रमवृद्धं दिने दिने।
सारमेयविषं हन्ति मासेन नहि संशयः ॥ २ ॥

कारस्कर का फल अर्थात् कुचला शुद्ध करके क्रमशः प्रतिदिन बढ़ाकर सेवन करने से एक मास में कुत्ते का विष निस्सन्देह नष्ट होजाता है ॥ २ ॥

अपामार्गमूलयोगः—पिष्ट्वाऽपामार्गमूलं तु कर्षैकं मधुना लिहेत्।
श्वदंष्ट्राजं विषं हन्यात्कुमारीदलसैन्धवम् ॥ ३ ॥
दंशस्थाने बन्धयेत्तु त्रिदिनान्ते सुखावहम् ॥ ४ ॥

अपामार्ग की जड़ को पीसकर एक कर्षभर लेकर शहद से चाटे तो कुत्ते की दाढ़ का विष नष्ट होता है। साथ ही घीकुमारी के पत्ते में सेंधानमक भरकर काटे हुए स्थान पर बांध दें तो कुत्ते का विष तीन दिन में ही नष्ट होजाता है ॥४॥

कस्तूर्यादियोगः—

कस्तूरीबब्बूलपत्ररसो गोघृतेन पाने देयः शुनो विषं नश्यति ॥

कस्तूरी, बबूल के पत्तों का स्वरस गौ के घी के साथ पिलावें तो कुत्ते का विष नष्ट होजाता है ॥

शतावर्यादिरसः—

अथ वा शतावरीमूलरसो गोदुग्धेन सह पाने देयः शुनो विषं नश्यति

शतावर की जड़ का स्वरस गौ के दूध से मिलाकर पिलावें तो भी कुत्ते का विष नष्ट होजाता है ॥

कुक्कुटविष्ठादिलेपः—श्वानदंष्ट्राविषं हन्ति लेपात्कुक्कुटविष्ठया।

कुक्कुट की बीठ का लेप कर दें तो भी कुत्ते का विष नाश होता है ॥

गुडतैलादियोगः—गुडतैलार्कदुग्धं वा लेपाच्छ्वानविषं हरेत् ॥ ५ ॥

गुड, तेल तथा आक का दूध इन तीनों को मिलाकर लेप करें तो भी कुत्ते का विष नष्ट होता है ॥ ५ ॥

अथ रोगोन्मादश्वानविषचिकित्सा—

तैलं तिलानां पललं गुडं च क्षीरं तथाऽऽर्कं सममेव पीतम्।
आलर्कमुग्रं विषमाशु हन्ति सद्योभवं वायुरिवाभ्रवृन्दम् ॥ १ ॥

तिलों का तेल, तिल का कल्क, गुड, तथा आक का दूध सबको एकत्र करके पिलावें तो कुत्ते के उग्र विष को जो तुरन्त हुआ हो यह प्रयोग ऐसे दूर करता है, जैसे वायु बादलों के समूहों को दूर कर देता है ॥ इति श्वानविषचिकित्सा ॥ इति जङ्गमविषचिकित्सा ।

अथ सामान्यविषचिकित्सा ।

अथ स्थावरजंगमविषचिकित्सा । सैन्धव दियोगः—

सैन्धवं मरिचं तुल्यं निम्बबीजं समीकृतम् ।
मधुसर्पिर्युतं हन्ति विषं स्थावरजङ्गमम् ॥ १ ॥

सेंधानमक और मिरच एक १ भाग, नीम के बीज दो भाग, सबको एकत्र पीस-शहद तथा घी से मिलाकर खावें तो स्थावर तथा जंगम विष का नाश होता है १

आगारधूमादिः—आगारधूमो महिषाक्षयुक्तः सवाजिगन्धानततण्डुलीयः ।
गोमूत्रपिष्टोऽप्यगदो निहन्ति विषाणि च स्थावरजङ्गमानि ॥२॥

रसोई घर का धुंआं भैंसा गूगल, असगन्ध, तगर, चौलाई इन सबको सम-भाग लेकर गोमूत्र से पीसकर खिलावें तो इस अगद से स्थावर तथा जंगम विष का नाश होता है ॥ २ ॥

मयूरपिच्छादि—

मयूरपिच्छेन च तण्डुलीयकं काकाण्डयुक्तं प्रपिबेदनल्पम् ।
विषाणि च स्थावरजङ्गमानि सोपद्रवाण्यप्यचिरेण हन्ति ॥ ३ ॥

मोर के पंख, चौलाई, महानीम या बकायन के फल, इन सबको एकत्र पीसकर उचित मात्रा में पीवे तो स्थावर तथा जंगम विष जो उपद्रवों से युक्त भी हों तो भी शीघ्र नष्ट हो जाती हैं ॥ ३ ॥

अथ प्राचेतसं चूर्णम्—

सप्तपर्णात्कुटजात्सनिम्बादब्दामयोशीरनतानि ताप्यम् ।
रोध्रं विदध्यान्नवमं नवाङ्गं प्राचेतसं चूर्णमुदाहरन्ति ॥ १ ॥

सतौने की छाल, कुड़े की छाल, नीम की छाल, नागरमोथा, कूठ, खस, तगर सुवर्णमाक्षिक की भस्म, लोध इन नौ पदार्थों को समभाग लेकर एकत्र करे इस नवांग चूर्ण को प्राचेतस चूर्ण कहते हैं ॥ १ ॥

लोहेऽथ हैमे त्वथ राजते वा स्थितं सदा सद्मनि भूपतीनाम् ।
क्षौद्रेण लीढं सचराचराणि विषाणि हन्यादभुवि मानवानाम् ॥२॥

इसी चूर्ण को लोहपात्र में, सोने के पात्र में अथवा चांदी के पात्र में, राजा लोग अपने महलों में सदा रखते हैं । इस चूर्ण को शहद से चाटें तो संसार के समस्त प्रकार के स्थावर तथा जंगम विष इससे नष्ट हो जाते हैं ॥ २ ॥

श्लेष्मातकाद्यगदः—श्लेष्मातकत्वक्कदवकं गुडूची नृपद्रुमत्वग्बृहतीद्वयं च ।
एषोऽगदः सर्वविषाणि हन्यादास्तीकनाम्ना मुनिना प्रदिष्टः ॥३॥

लसूड़े की छाल, (त्ववकः-छिक्किनी, राजसर्षपे, शिग्रुवृक्षे, श्वेतापामार्गे च) नकछिकनी या श्वेत अपामार्ग की जड़, गिलोय, बड़े अम्लतास के पेड़ की छाल, छोटी कटेली, बड़ी कटेली इन सब को समभाग लेकर पीसकर चूर्ण बना ले। इस अगद के सेवन करने से सब प्रकार के स्थावर तथा जंगम विषों का नाश होता है॥ यह अगद आस्तीक मुनि ने पहले २ आविष्कार किया था ॥ ३ ॥

कृकलासपदबन्धनम्—कृकलासपदं यस्तु सितवस्त्रेण वेष्टयेत्।
बाहौ बद्ध्वा विषं हन्ति विषं भुक्त्वा न बाधते४॥

गिरगट की टांग या पैर को श्वेत वस्त्र में लपेट कर भुजा पर बांधने वाला मनुष्य सब प्रकार के विषों को नाश करता है, विष खाया हुआ हो तो वह विष भी बाधा नहीं पहुंचाता है ॥ ४ ॥

वृश्चिकाद्यपसारणम्—यः पिबति पुष्यदिवसे जलपिष्टं सितपुनर्नवामूलम्।
तत्संनिधौ न वर्षं वृश्चिकभुजगाः प्रसर्पन्ति ॥ ५ ॥

पुष्य नक्षत्र के दिन जो मनुष्य श्वेत पुनर्नवा की जड़ को जल में पीसकर पी लेता है। उसके पास एक वर्ष तक बिच्छु तथा सांप नहीं आते। अर्थात् उससे परे भागते हैं ॥ ५ ॥

मसूरादियोगः—मसूरं निम्बपत्राभ्यां पिबेन्मेषगते रवौ।
अब्दमेकं न भीतिः स्याद्विषार्तस्य न संशयः ॥ ६ ॥

मसूर को दो नीम के पत्तों के साथ पीसकर सूर्य के मेष राशि में होने पर यदि पी लिया जाये तो विष युक्त रोगी को एक वर्ष तक का भय नहीं रहता है इस में संशय नहीं ॥ ६ ॥

अथ गरुडाञ्जनम्—

सूतं चूर्णमगारधूममलं प्रत्येकगद्याणकं
धत्तूरस्य रसेन मर्दितमलं पश्चाच्छतं भासुरम्।
जेपालं मरिचं चतुःशतयुतं वातारिबीजं लस-
द्युक्तं षष्टि सुखल्विदं दृढतरैर्जम्बीरनीरैर्वरैः ॥ १ ॥

शुद्ध पारा, चूना, रसोई घर का धुंआ, (अमलं—अभ्रकम्, समुद्रफेने, कर्पूरे रौप्यमाक्षिके, कतकवृक्षे) कपूर प्रत्येक एक २ गद्याण अर्थात् छः २ माषा लेवे। सबको एकत्र करके धतूरे के पत्तों के स्वरस में खरल करें, फिर कूठ एक सौ गद्याण लेवे। जमालगोटे के शुद्ध बीज तथा मिरच के ४०० दाने लेवें, एरण्ड के बीज ६० लेवें। इन सबको पीसकर जम्बीरी नीबू के रस से खरल करें ॥ १ ॥

कुर्यान्माषवदाकृतिं च वटिकां छायासु शुष्कीकृतां
शत्र्यन्धं ग्रहसर्पसंधिसकलं शीतज्वरं दुर्धरम्।
सन्नेत्राञ्जनमात्रकं च भुवने चाजीर्णदोषापहं

नश्यन्ति प्रबलं महागुणयुतं श्रीपूज्यपादोदितम् ॥ २ ॥

फिर माष या उड़द के दाने के समान आकार वाली गोलियां बनाकर छाया में सुखाकर रख लेवें । इस गोली को आंखों में अंजन करें तो अन्धराता, ग्रहरोग, सर्प के काटने से हुए सब प्रकार के विष, सन्धिरोग, भयंकर शीतज्वर, इन सब प्रकार के रोगों का नाश करता है, तथा नेत्र में अंजन करने मात्र से ही अजीर्ण दोष का नाश होता है यह अंजन बड़ा प्रबल है, महागुणयुक्त है तथा श्री पूज्यपाद गुरु महाराज का कहा हुआ है ॥ २ ॥ इति गरुड़ाञ्जनम् ।

अथ मृत्युच्छेदिघृतम्—अभयां रोचनां कुष्ठमर्कपुष्पं तथोत्पलम् ।
नलवेतसमूलानि सरलं सुरसां तथा ॥ १ ॥

हरड़, वंशरोचन, कूठ, आक के फूल, नीलाकमल, नड़े की जड़, बेत की जड़, सरलकाष्ठ, तुलसी ॥ १ ॥

सकलिङ्गां समञ्जिष्ठामनन्तां च शतावरीम् ।
शृङ्गाटकं समङ्गां च पद्मकेसरमित्यपि ॥ २ ॥

इन्द्रजौ, मंजीठ, अनन्तमूल, शतावर, सिंघाड़ा, (समङ्गा—मंजीठ, लज्जालुका, बालक, वराहक्रान्ता) मंजीठ, पद्मकेसर ॥ २ ॥

कल्कीकृत्य पचेत्सर्पिः पयो दद्याच्चतुर्गुणम् ।
सम्यक्पकेऽवतीर्णे च शीते तस्मिन्विनिक्षिपेत् ॥ ३ ॥

इन में से प्रत्येक द्रव्य समभाग लेकर कल्क करले । इस कल्क से चौगुना गौ का घी और घी से चौगुना दूध डाले । इसको पकावे । ठीक प्रकार से पक जाने पर उतार लेवे और इसे छानकर लेवे ॥ ३ ॥

सर्पिस्तुल्यं भिषक्क्षौद्रं कृतरक्षं निधापयेत् ।
विषाणि हन्ति दुर्गाणि गरदोषकृतानि च ॥ ४ ॥

शीतल हो जाने पर इसमें घी के समान ही शहद मिला देवे और इसे अति रक्षा पूर्वक रखे । इस घी के प्रयोग से भयंकर विष नष्ट हो जाते हैं, गरदोष से हुए २ विष भी नष्ट हो जाते हैं ॥ ४ ॥

स्पर्शाद्धन्ति विषं सर्वं गरैरुपहतत्वचम् ।
संयोगजं तमः कण्डूं मांससादं विसंज्ञताम् ॥ ५ ॥

इस घी को शरीर पर मलें तो भी गर विष से नष्ट हुई २ त्वचा को फिर ठीक करके कार्य योग्य कर देता है । संयोगज विष को नाश करता है । तम अथवा अन्धकार आना, कण्डू, मांस का सन्न हो जाना तथा विसंज्ञता अर्थात् संज्ञारहित बेहोश हो जाना ॥ ५ ॥

नाशयेदञ्जनाभ्यङ्गपानबस्तिषु योजितम् ।
सर्पकीटाखुलूतादिदष्टानां विषहृत्परम् ॥ १ ॥

इन सबही उपद्रवों को यह घी अंजन करने से, मालिश करने से, पीने से

तथा बस्ति में प्रयुक्त करने से नष्ट करता है। तथा सांप, कीट, मकड़ी आदि विषैले प्राणियों से काटे हुए रोगियों का विष नाश करने में परमोत्तम है ॥ ६ ॥

अथ पथ्यापथ्यम्— **शालयः षष्टिकाश्चैव कोरदूष्यप्रियंगवः।**
मुद्गा हरेणवस्तैलं सर्पिश्चापि नवं क्वचित् ॥ १ ॥

शाली धान्य, साठी के चावल, कोदों, प्रियंगु, मूंग, बड़े चने, नया तिल का तेल तथा कहीं नया घी भी लाभ करता है ॥ १ ॥

वार्ताकं कुलकं धात्री जीवन्ती तण्डुलीयकम्।
भोजनार्थे विषार्तानां हितं पटुषु सैन्धवम् ॥ २ ॥

बेंगन, परवल, आंवला, जीवन्तीशाक, चौलाई ये सब पदार्थ भोजन के लिये विषग्रस्त प्राणियों को दें तो हित करते हैं तथा सब लवणों में से सेंधानमक लाभ करता है

विरुद्धाध्यशनक्रोधक्षुद्व्यायाममैथुनम्।
वर्जयेद्विषमुक्तोऽपि दिवा स्वप्नं विशेषतः ॥ ३ ॥

विष से छूट जाने पर भी विरुद्ध भोजन करना, अध्यशन अर्थात् पहला अन्न न पचा हो, ऊपर से और खा लिया जाये, क्रोध करना, भूखा रहना, परिश्रम करना, मैथुन करना ये बातें रोगी न करे, विशेष करके दिन में न सोना चाहिये ॥ ३ ॥

इति हरद्वारीय गुरुकलविश्वविद्यालयस्नातकेन श्रीविद्यधि विद्यालंकारेण लवपुरीय श्रीमद्दयानन्दायुर्वेदमहाविद्यालयीय वैद्यकविराजोपाधिधारिणायुर्वेदशास्त्रिणा राजयक्ष्मचिकित्सकेन जलचिकित्साविशेषज्ञेन रसेन्द्रसारसंग्रहटीकाकर्त्रा कृतायां योगरत्नाकरस्य रत्नगर्भानाम्निटीकायां विषप्रकरणं समाप्तम् ॥

इति पूर्वखण्डः समाप्तः।

अथोत्तरखण्डः।

तत्र वाजीकरणद्रव्यस्य लक्षणमाह—

यद्द्रव्यं पुरुषं कुर्याद्वाजीवत्सुरतक्षमम्।
तद्वाजीकरणमाख्यातं मुनिभिर्भिषजां वरैः ॥ १ ॥

जो पदार्थ मनुष्य को वाजी अर्थात् घोड़े के समान मैथुन करनें में समर्थ बनाते हों उन्हें श्रेष्ठ विचारशील मुनियों तथा चिकित्सकों ने वाजीकरण नाम से पुकारा है ॥ १ ॥

अत्र प्रसङ्गात्क्लैब्यलक्षणं संख्यां निदानं चाऽऽह—

क्लीबः स्यात्सुरताशक्तस्तद्भावः क्लैब्यमुच्यते।
तच्च सप्तविधं प्रोक्तं निदानं तस्य कथ्यते ॥ १ ॥

जो पुरुष मैथुन करने में अशक्त हो उसे क्लीब या नपुंसक कहते हैं, उस क्लीब के भाव को या क्लीबपन को क्लैब्य या नपुंसकता कहते हैं। वह नपुंसकता सात प्रकार की होती है उस के निदान को आगे लिखते हैं ॥ १ ॥

क्लैब्यस्यनिदानं—तैस्तैर्भावैरहृद्यैस्तु रिरंसोर्मनसि क्षते।
ध्वजः पतत्यतो नृणां क्लैब्यं समुपजायते ॥ २ ॥

स्त्री से रमण करने की इच्छावाले पुरुष को अनेक प्रकार के मन के विरुद्ध भावों के मिलने से मन को चोट लगती है और ध्वज अर्थात् इन्द्रिय शिथिल होकर नीचे झुक जाती है इसी से मनुष्यों को क्लीवता या नपुंसकता उत्पन्न होती है ॥ २ ॥

द्वेष्यस्त्रीसंप्रयोगाच्च क्लैब्यं तन्मानसं स्मृतम्।
कटुकाम्लैः सलवणैरतिमात्रोपसेवितैः ॥ ३ ॥

अथवा जिस स्त्री से मन से द्वेष हो उस के साथ मैथुन करना पड़े तो भी नपुंसकता होजाती है परन्तु वह मानसिक नपुंसकता होती है। कटु अर्थात् तीक्ष्ण पदार्थ तथा अम्ल या खट्टे पदार्थों के अतिमात्र सेवन करने से ॥ ३ ॥

पित्ताच्छुक्रक्षयो दृष्टः क्लैब्यं तस्मात्प्रजायते।
अतिव्यवायशीलो यो न च वाजीक्रियारतः ॥ ४ ॥
ध्वजभङ्गमवाप्नोति स शुक्रक्षयहेतुकः।
महता मेढ्ररोगेण चतुर्थी क्लीबता भवेत् ॥ ५ ॥

पित्त बढ़ जाता है। और पित्त के बढ़ जाने से वीर्य का क्षय होजाता है उस से क्लीवता या नपुंसकता होजाती है ॥ जो मनुष्य अत्यन्त मैथुन करता हो तथा वाजीकरण करने की औषधें न खावें, न ही वाजीकरण करनेवाली क्रियायें करे तो उस का भी ध्वजभंग होजाता है, वह वीर्य के क्षय के कारण ही नपुंसक हुआ होता है। चौथी प्रकार की क्लीबता या नपुंसकता लिंग के महारोग से ग्रस्त होजाने से होजाती है ॥ ५ ॥

वीर्यवाहिशिराच्छेदान्मेहनानुन्नतिर्भवेत्।
बलिनः क्षुब्धमनसो निरोधाद्ब्रह्मचर्यतः ॥ ६ ॥
षष्ठं क्लैब्यं स्मृतं तत्तु शुक्रस्तम्भनिमित्तकम्।
जन्मप्रभृति यत्क्लैब्यं सहजं तद्धि सप्तमम् ॥ ७ ॥

पांचवीं क्लीवता या नपुंसकता वीर्यवाहिनी शिरा के कट जाने से होजाती है इस से लिंगेन्द्रिय उठती नहीं ॥ छटी क्लीबता या नपुंसकता तब हो जाती है जब बलवान मनुष्य हो और उस का मन किसी कामिनी आदि को देखकर क्षुब्ध होगया हो परन्तु ब्रह्मचर्य भंग होजाने के डर से वह ब्रह्मचारी पुरुष वीर्य को बाहर न निकलने दे और अन्दर ही रोक लेवे। ऐसी नपुंसकता वीर्य रोक लेने के कारण होजाती है ॥ और सातवीं क्लीबता या नपुंसकता जन्म से ही स्वाभाविक होती है जिस में लिंग आदि चिन्ह पूरे विकाश नहीं पाते वे जन्म-नपुंसक या हींजड़े वा खुसरे कहाते हैं। इसे सहज क्लैब्य कहते हैं ॥ ७ ॥

अथासाध्यं क्लैब्यमाह—असाध्यं सहजं क्लैब्यं मर्मच्छेदाच्च यद्भवेत्।

साध्यानामवशिष्टानां कार्यो वाजीकरो विधिः ॥ १ ॥

सहज अर्थात् जन्म से हुआ २ क्लैब्य या नपुंसकता, तथा ध्वज की वीर्यबाही शिरा आदि मर्मस्थानों के छिन्न हो जाने से हुई २ नपुंसकता तो असाध्य है। शेष पांचों प्रकार की नपुंसकता वाले पुरुषों को वाजीकरण कराके पुरुषार्थ उत्पन्न कराना चाहिये ॥ १ ॥

अथ क्लैब्यस्य चिकित्सा—**क्लैब्यानामिह साध्यानां कार्यो हेतुविपर्ययः।**
मुख्यं चिकित्सितं यस्मान्निदानपरिवर्जनम् ॥१॥

साध्य नपुंसकों को जिन कारणों से नपुंसकता उत्पन्न हुई २ हो उन २ कारणों को दूर कर देना चाहिये। क्योंकि इसकी मुख्य चिकित्सा यही है कि नपुंसक करने वाले कारणों को हटा दिया जाये, तो आप ही पुरुषार्थ हो जाता है ॥१॥

अथ क्लैब्यस्य चिकित्सायां वाजीकरं विधिमाह—

नरो वाजीकरान्योगान्सम्यक्शुद्धो निरामयः।
सप्तत्यन्तं प्रकुर्वीत वर्षादूर्ध्वं तु षोडशात् ॥ १ ॥

क्लीब मनुष्य अच्छी प्रकार से वमन विरेचन आदि लेकर शरीर को शुद्ध तथा रोगरहित करके वाजीकरण योगों को खावे। मनुष्य १६ वर्ष की आयु से लेकर ७० वर्ष की आयु तक वाजीकरण करता रहे और इसी आयु में ही मैथुन भी करे सकता है ॥१॥

न चैव षोडशादर्वाक्सप्तत्याः परतो न च।
आयुष्कामो नरः स्त्रीभिः संयोगं कर्तुमर्हति ॥ २ ॥

परन्तु १६ साल से कम आयु में और ७० वर्ष से बाद की आयु में कोई पुरुष स्त्रियों से संयोग न करे यदि आयु वृद्धि चाहता हो ॥ २ ॥

बाल्यवार्द्धक्ययोः स्त्रीसेवने हानिः—

क्षयवृद्ध्युपदंशाद्या रोगाश्चातीव दुर्जयाः।
अकालमरणं च स्याद्भजतस्त्रियमन्यथा ॥ ३ ॥
स्त्रीभजनविधिर्विस्तरतो रात्रिचर्यायां लिखितोऽस्ति तत्र द्रष्टव्यः ॥

क्षय, वृद्धिरोग, उपदंशादि भयंकररोग तथा अकाल मरण ये सभी रोग उस मनुष्य को हो जाते हैं जो १६ वर्ष से कम आयु का हो और स्त्री से मैथुन करता हो वा ७० वर्ष की आयु के बाद भी स्त्री से मैथुन करता हो ॥ ३ ॥ स्त्री के साथ मैथुन करने की विधि विस्तार से रात्रिचर्य्या में लिख ही चुके हैं वहां से ही पढ़ लेनी चाहिये।

वाजीकरोविधिःकेभ्यःहितः—**विलासिनामर्थवतां रूपयौवनशालिनाम्।**
नराणां बहुभार्याणां विधिर्वाजीकरो हितः॥४

जो पुरुष विलासी हो अर्थात् ऐयाश हों, धनवान हों, रूप यौवन से शोभित हो रहे हों, तथा जिनके अनेक स्त्रियां हों ऐसे पुरुषों के लिये वाजीकरण विधि

हितकारक है ॥ ४ ॥

स्थविराणां रिरंसूनां स्त्रीणां वाल्लभ्यमिच्छताम्।
योषित्प्रसङ्गात्क्षीणानां क्लीबानामल्परेतसाम् ॥ ५ ॥

अथवा जो बूढ़े हो रहे हों परन्तु मैथुन करने की इच्छा हो, स्त्रियों के प्यारे बनना चाहते हों उनके लिये वाजीकरणविधि हितकर है। अथवा जो स्त्रियों के साथ विषय भोग भोगने से क्षीण हो गये हों, अथवा जिनमें थोड़ा वीर्य हो ऐसे नपुंसक हों उनको भी वाजीकरण से लाभ होता है ॥ ५ ॥

हिता वाजीकरा योगाः प्रीत्यपत्यबलप्रदाः।
एतेऽपि पुष्टदेहानां सेव्याः कालाद्यपेक्षया ॥ ६ ॥

इन सब को वाजीकरण के योगों से लाभ होता है, स्त्रियों से प्रीति बढ़ती है, सन्तान प्राप्त होती है तथा बल बढ़ता है ॥ ये सभी वाजीकरण योग केवल ऊपर लिखे हुए पुरुषों को ही नहीं सेवन करने चाहियें परन्तु पुष्ट देहवाले अन्य पुरुषों को भी कालादि के अनुसार सेवन करने चाहियें ॥ ६ ॥

अथ वाजीकराण्याह—भोजनानि विचित्राणि पानानि विविधानि च।
वाचः श्रोत्राभिरामाश्च त्वचः स्पर्शसुखास्तथा ॥१॥

विचित्र प्रकार के भोजन, विविध प्रकार के पीने के द्रव्य कानों को प्यारी लगनेवाली बातें तथा स्पर्श का सुख देनेवाली त्वचा वाली सुन्दरियें ॥ १ ॥

यामिनी सेन्दुतिलका कामिनी नवयौवना।
गीतं श्रोत्रमनोहारि ताम्बूलं मदिरा स्रजः ॥ २ ॥

चांदनी रात, नवयौवना कामिनी, कान तथा मन को हरनेवाले गीत, ताम्बूल अर्थात् पान खाना, शराब पीनी, पुष्पमालायें पहनना ॥ २ ॥

गन्धा मनोज्ञा रूपाणि चित्राण्युपवनानि च।
मनसश्चाप्रतीघातो वाजीकुर्वन्ति मानवम् ॥ ३ ॥

उत्तम गन्ध इतरादि सूंघना, चित्रविचित्र रूप, तथा बाटिकायों में फिरना। मन को किसी बात से दुखी न करना अर्थात् मन की प्रसन्नता ये सभी बातें मनुष्य को वाजीकरण करनेवाली कही हैं अर्थात् घोड़े के समान मैथुन करने में शक्त करती हैं॥

अथ पायसम्—गवां विरूढवत्सानां सिद्धं पयसि पायसम्।
तथा गोधूमचूर्णं च सितामधुघृतान्वितम्।
भुक्त्वा हृष्यति जीर्णोऽपि दशदारान्व्रजत्यपि ॥ १ ॥

जिन के बच्चे बड़े हो गये हैं ऐसी गौओं के दूध में सिद्ध की हुई खीर तथा गेहूं के आटे को दूध में पकाकर खांड, शहद तथा घी मिलाकर खिलाया जावे तो जीर्ण पुरुष को भी हर्ष प्राप्त होता है अर्थात् उत्तेजना होती है और वह दस स्त्रियों को प्रसन्न कर सकता है ॥ १ ॥

अथ रसाला—दध्नोऽर्धाढकमीषदम्लमधुरं खण्डस्य चन्द्रद्युतेः
प्रस्थं क्षौद्रपलं पलं च हविषः शुण्ठ्याश्चतुर्माषकान्।
तद्वन्माषचतुष्टयं मरिचतः कर्षं लवङ्गं तथा
धृत्वा शुक्लपटे शनैः करतलेनोन्मथ्य विस्रावयेत् ॥ १ ॥

आधा आढक दही लें जो थोड़ा २ खट्टा हो और प्रायः मीठा हो, श्वेत बूरा या खांड एक प्रस्थ लें। शहद एक पल ले, घी एक पल ले, सोंठ का चूर्ण चार माशे लेवें। मिरच का चूर्ण चार माशे लेवें। लौंग का चूर्ण एक कर्ष, सब को एकत्र कर के श्वेत वस्त्र में डालकर हाथ से मथकर कपड़े में से छानलें ॥ १ ॥

मृद्भाण्डे मृगनाभिचन्दनरसस्पृष्टेऽगुरूद्धूपिते
कर्पूरेण सुगन्धितं तदखिलं संलोड्य संस्थापयेत्।
स्वस्यार्थे मथुरेश्वरेण रचिता ह्येषा रसाला स्वयं
भोक्तुं मन्मथदीपनी सुखकरी कान्तेव नित्यं प्रिया ॥२॥

मिट्टी के बरतन में कस्तूरी तथा चन्दन का रस घिसकर मल देवे, फिर उस पात्र को अगर से धूपित करदे। फिर उसमें वही दही डाल दे और थोड़ा कपूर मिलाकर सारे दही को सुगन्धित करदे। फिर सारे दही को अच्छी प्रकार से मथ लेवे। इस दही को रसाला कहते हैं। इसे स्वयं मथुरा के राजा ने अपने खाने के लिये बनाया था। यह रसाला नित्य ही सेवन की जाये तो कामोद्दीपन करती है, सुख देती है तथा स्त्री के समान नित्य ही प्रिय लगती है या पसन्द आती है ॥ २ ॥

अथ शतावर्यादिचूर्णम्—

शतावरीनागबलाविदारीत्रिकण्टकैरामलकीफलान्वितैः।
विचूर्णितैः पञ्चभिरेकशः पृथक्प्रकल्पितैर्वा घृतमाक्षिकप्लुतैः ॥१॥

शतावर, नागबला, विदारीकन्द, गोखरु, आंवला इन पांचों को एकत्र चूर्ण कर लें, अथवा इन में से प्रत्येक पदार्थ का चूर्ण पृथक् २ करके घी तथा शहद मिलाकर १

इति प्रयोगाः षडिमे भिषग्वरैरुदीरिताः शर्करया समन्विताः।
नृणां मदान्धप्रमदोपसर्पिणां प्रधानधातोरतिरेककारणम् ॥ २ ॥

और खांड मिलाकर प्रयोग किये जावें तो ये छह प्रयोग मदोन्मत्त स्त्रियों की भोगने की इच्छा वाले पुरुषों के वीर्य्य को बढ़ाते हैं ॥ २ ॥

अथ मुसल्यादिचूर्णम्—

मुसलिकोकिलगोक्षुरचूर्णकं शशिविलोचनरामामितं पचेत्।
पयसि प्रातरिदं यदि कोष्णके सितया टङ्कषट्कया तु तत् ॥१॥

श्वेत मूसली, एक भाग, तालमखाना दो भाग, गोखरू तीन भाग इन सब का चूर्ण कर के प्रातःकाल ही दूध में डालकर पकाया जाये, और छह टंक खांड भी डालदी जाये ॥ १ ॥

त्रिगुणसप्तदिनं परिभक्षयन्शतवया अपि काङ्क्षति कामिनीम्।
किमिह चित्रमुदित्वरयौवनः शशिमुखीं शयनान्न जिहासति ॥२॥

तो इसे २१ दिन खाने से १०० वर्ष का बूढ़ा भी कामिनी की कामना करता है। तो नवयौवनवाला पुरुष तो यदि शयन पर से चन्द्रमुखी रमणी को न छोड़े तो आश्चर्य ही क्या है ॥ २ ॥

अथ वानरीगुटिका—बीजानि हि कपिकच्छोः कुडवमितानि स्वेदयेच्छनकैः।
प्रस्थे गोभवदुग्धे दुग्धं यावद्भवेद्गाढम् ॥ १ ॥

कौंच के बीज एक कुड़व लेकर एक प्रस्थ गौ के दूध में डालकर धीरे २ आंच देकर स्वेदन करे ॥ १ ॥

त्वग्रहितानि च कृत्वा सूक्ष्मं संपेषयेत्तानि।
पिष्टिकायाः सुवटिकाः कृत्वा गव्ये पचेदाज्ये ॥ २ ॥

जब दूध गाढ़ा होजाये तो बीजों को निकाल कर छिलका दूर कर के उन्हें सूक्ष्म कर के पीस लेवें। फिर उस पीठी की टिकियां या बड़ियां या गोलियां सी बनाकर घी में तल लेवें ॥ २ ॥

द्विगुणितशर्करया ता वटिकाः संपकया लेप्याः।
वटिका माक्षिकमध्ये मज्जनयोग्येऽखिलाः स्थाप्याः ॥ ३ ॥

फिर उन बटिकाओं से दुगनी अर्थात् दो कुड़व खांड की चाशनी कर के उन पर चढा देवे। फिर शुद्ध शहद में वे सब खांड चढी हुई बटिकायें डालदें। शहद इतना डालें जिस में वे डूब जायें ॥ ३ ॥

पञ्चटङ्कमितास्तास्तु प्रातः सायं च भक्षयेत्।
अनेन शीघ्रद्रावी यो यश्च स्यात्पतितध्वजः ॥ ४ ॥

फिर उन को पांच टंकभर लेकर प्रातःकाल तथा सायंकाल खावें। इन के खाने से जिस मनुष्य का वीर्य शीघ्र ही द्रवित हो जाता हो अथवा जिस की इन्द्रिय उठती न हो ॥ ४ ॥

सोऽपि प्राप्नोति सुरते सामर्थ्यमति वाजिवत्।
नानेन सदृशं किंचिद्द्रव्यं वाजीकरं परम् ॥ ५ ॥

वह मनुष्य भी घोड़े के समान मैथुन करने में अत्यन्त सामर्थ्य को पाता है इस से बढकर वाजीकरण द्रव्य और कोई नहीं है ॥ ५ ॥ इति वानरीगुटिका भावप्रकाशात् ॥

बस्ताण्डादिप्रयोगः—बस्ताण्डसिद्धे पयसि भावितानसकृत्तिलान्।
यः खादेत्समुपागच्छेत्स्त्रीणां शतमपूर्ववत् ॥ १ ॥

बकरे के अण्डकोषों से पकाए हुए दूध में तिलों को अनेक बार भावित करे। उन तिलों को खाने से सौ स्त्रियों के भोगने की सामर्थ्य हो जाती है। और हर बार भोग में नवीनता प्रतीत होती है ॥ १ ॥

पिप्पल्यादियोगौ—पिप्पलीलवणोपेते वस्ताण्डे घृतसाधिते ।
कच्छपस्याथ वा खादेत्तत्तु वाजीकरं भृशम् ॥ २ ॥

बकरे के अण्डकोषों को घी में तलकर पिप्पली का चूर्ण तथा नमक मिलाकर खाया जाये । अथवा कछुए के अण्डकोषों को वा कछुए के मांस को घी में तलकर पीपल तथा लवण मिलाकर खाया जाये तो ये प्रयोग अत्यन्त बाजीकर हैं ॥२॥

शतावर्यादियोगः—शतावरीगोक्षुरकाश्वगन्धापुनर्नवानागबला मुसल्या ।
घृतेन खण्डेन तु भक्षणीयाः क्षीणा नरा नागबला भवन्ति ॥ ३ ॥

शतावर, गोखरु, असगन्ध, पुनर्नवा, नागबला, मूसली इन सबका चूर्ण घी तथा खांड से मिलाकर खायें तो क्षीण मनुष्य भी हाथी के समान बलवान होजाते हैं

विदारीचूर्णम्—विदारीकन्दचूर्णं तु घृतेन पयसा नरः ।
उदुम्बरसमं खादन्वृद्धोऽपि तरुणायते ॥ ४ ॥

विदारीकन्द के चूर्ण को एक कर्ष या दो तोले भर लेकर घी मिलाकर दूध से खावे तो बूढा आदमी भी जवानों के समान आचरण करता है ॥ ४ ॥

सितापलाण्डुरसः—सितामधुघृतं क्षीरं पलाण्डुरससंयुतम् ।
पिबेन्नरो भवेत्कामी वृद्धोऽपि तरुणायते ॥ ५ ॥

खांड, शहद, घी तथा प्याज का स्वरस मिला हुआ दूध पिलाने से मनुष्य कामातुर होजाता है तथा बूढ़ा मनुष्य भी जवानों के समान बनकर विषय करता है।

अथ गोक्षुरचूर्णम्—शमयति गोक्षुरचूर्णं छागक्षीरेण साधितं समधु ।
भुक्तं क्षपयति षाण्ढ्यं यज्जनितं कुप्रयोगेण ॥ १ ॥

गोखरू का चूर्ण बकरी के दूध में डालकर पकायें । उस दूध को शीतल कर मधु मिलाकर पिलायें तो इस के सेवन से खोट प्रयोगों से हुई २ नपुंसकता नष्ट होजाती है ॥ १ ॥

अथामृतभल्लातकः—

भल्लातकानां पवनोत्थितानां तरुच्युतानां च यदाढकं स्यात् ।
घृष्ट्वेष्टिकाचूर्णकणैर्जलैश्च प्रक्षाल्य संशोष्य च मारुतेन ॥ १ ॥

हवा के चलने से जो पेड़ पर से गिर गये हों ऐसे भिलावे एक आढक लेवे । उन को ईंट के चूर्णों के कणों से खूब घिसे, फिर जल से धो लेवे । फिर वायु में रखकर सुखा लेवे ॥ १ ॥

शुष्काणि तानि द्विदलीकृतानि विपाचयेदप्सु चतुर्गुणासु ।
तत्पादशेषं पुनरेव शीतं क्षीरेण तुल्येन विपाचयेत्तत् ॥ २ ॥

सूखने पर दो २ टुकड़े कर लें और फिर भिलावों से चौगने जल में डालकर पकावें । जब चौथाई जल बच जावे तो उसे उतार कर छान लेवे । उस जल के समान दूध डालकर फिर पकावे ॥ २ ॥

तदर्धया शर्करया विमिश्र्य पश्चात्खजेनोन्मथनं विधाय।
सत्र्यूषणं त्रैफलचन्द्रमांसी त्रिवृच्च वांशीखदिरामृतं च ॥३॥

उस जल से आधा भाग खांड डालें। और लकड़ी की कड़छी से खूब मिला लेवे। फिर सोंठ, मिरच, पीपल, हरड़, बहेड़ा, आंवला, कपूर, जटामांसी, त्रिवी, वंशलोचन, खैर (अमृत-विष, घी, दूध, जल, बनमूंग, वराहीकंद या स्वर्ण) का कत्था, वराहीकंद या स्वर्णभस्म ॥ ३ ॥

सचन्दनाकल्लकणाकबाबं सदेवपुष्पं मुसलीद्वयं च।
कङ्कोलमोचाह्वयदीप्ययुग्मं नतं समातङ्गकणा विदारी ॥ ४ ॥

चन्दन, अकरकरा, पिप्पली, कबाबचीनी, लौंग, श्वेतमूसली, कालीमूसली, कङ्कोल, मोचरस, अजवायन, अजमोदा, तगर, गजपीपल, विदारीकन्द ॥ ४ ॥

जातीफलं मुस्तकजातिपत्री कुबेरजीरागरुसाब्धिशोषम्।
मेदाद्वयं लोहरसेन्द्रवङ्गमभ्रं तथा कुङ्कुमकं च कर्षम् ॥ ५ ॥

जायफल, मोथा, जावित्री, तुन की छाल, जीरा श्वेत, अगर, समुद्रसोख, मेदा, महामेदा, लोहभस्म, रस सिन्दूर, बंगभस्म, अभ्रकभस्म, कश्मीरी केसर प्रत्येक पदार्थ का चूर्ण एक २ कर्ष लेकर उसी में अच्छी प्रकार से मिला देवे ॥५॥

तत्सप्तरात्रादतिजातवीर्यं सुधारसादप्यधिकं वदन्ति।
प्रातः प्रबुद्धः कृतदेवकार्यो मात्रां भजेत्सात्म्यशरीरयोग्याम् ॥ ६ ॥

उसे सात दिन रात पड़ा रहने देवे। सात दिन के अन्दर उस में अत्यधिक शक्ति हो जाती है और अमृत रस से भी अधिक गुणदायक समझा जाता है। प्रातःकाल जागकर नित्य कर्म कर के देवकार्य अर्थात सन्ध्या अग्निहोत्रादि कर के अपने शरीर के योग्य इसकी सात्म्य मात्रा को लेकर सेवन करे ॥ ६ ॥

न चानुपाने परिहार्यमस्ति न चाऽऽतपे नाध्वनि मैथुने च।
यथेष्टचेष्टो विचरेत्प्रयोगान्नरो भवेत्काञ्चनराशिगौरः ॥ ७ ॥

इस के पीछे जिस द्रव्य का चाहे अनुपान करे। क्योंकि अनुपान में कोई अनुपान त्याज्य नहीं है, धूप में फिरना, मार्ग चलना, मैथुन करना ये सभी काम मनुष्य कर सकता है किसी बात की रुकावट नहीं है। यथेष्ट चेष्टावाला मनुष्य जो इच्छा हो करे परन्तु इस का सेवन करता जाये। इस से मनुष्य सोने के ढेर के समान गोरे रंग का होजाता है ॥ ७ ॥

अनेन मेधानरसिंहवीर्यो दृढेन्द्रियो व्याधिगतः सुबुद्धिः।
दन्ता विशीर्णाः पुनरेव दिव्याः केशाश्च शुभ्राः पुनरेव कृष्णाः ॥८॥

इस प्रयोग से मेधा बढ़ती है, नरसिंह के समान पराक्रम बढ़ता है, इन्द्रियें दृढ़ होती हैं, व्याधियें छूट जाती है, बुद्धि पवित्र होजाती है। टूटते फूटते विशीर्ण दांत फिर दिव्य अर्थात् नये के समान चमकीले होजाते हैं और श्वेत केश फिर

काले होजाते हैं ॥ ८ ॥

नीलाञ्जनालिप्रतिमा भवन्ति त्वचो विशीर्णाः पुनरेव भव्याः।
विशीर्णकर्णाङ्गुलिनासिकोऽपि कृम्यर्दितो भिन्नगलोऽपि कुष्ठी ॥ ९ ॥

तथा काले अंजन के समान या काले भौंरे के समान काले बाल होजाते हैं, पुरानी विशीर्ण हुई हुई त्वचा फिर भव्य अर्थात् सुन्दर नई होजाती है। कान, अंगुली, नाक जिस कोढ़ी के कटते जारहे हों, जिस के शरीर में कीड़े पड़ चुके हों, जिस का गला फट गया हो ॥ ९ ॥

शुष्कः पुनः स्याद्गतमूलशाखस्तरुर्यथा भाति नवाम्बुसिक्तः।
बृहस्पतेरप्यधिको हि बुद्ध्या ग्रन्थं विशालं च नवं करोति ॥ १० ॥

ऐसा सूखा हुआ रोगी फिर उसी प्रकार से हरा भरा होजाता है जिस प्रकार से जड़ और शाखाओं से सूखा हुआ मृतप्राय वृक्ष नये जल के सींचने से फिर हरा भरा होजाता है। मनुष्य बृहस्पति के समान बुद्धि से युक्त होजाता है। बड़े विशाल ग्रन्थ को भी याद कर लेता है अथवा नया बना सकता है ॥ १० ॥

गृह्णाति सद्यो न च विस्मृतिं च करोति कल्पायुरनल्पवीर्यम्।
कुर्वन्निमं कल्पमनल्पबुद्धिर्जीवन्नरो वर्षशतं सुखी स्यात् ॥ ११ ॥

तथा उस ग्रन्थ को शीघ्र भूलता नहीं है। और उस मनुष्य की कल्प के समान आयु होती है अर्थात् पूर्णायु होती है तथा उसमें अत्यधिक वीर्य उत्पन्न होजाता है। इस कल्प को सेवन करता हुआ बुद्धिमान पुरुष एक सौ वर्ष तक सुखी रहता हुआ जीता है ॥ ११ ॥ इत्यमृतभल्लातकः ॥

अथ केशरपाकः—व्योषं चातुर्जातफलत्रिकं च लवङ्गकृष्णागुरुचन्दनं च।
इक्षूरबीजं करहाटकं च जातीफलं मर्कटिकाफलं च ॥१॥

त्रिकुटा (सोंठ, मिरच, पीपल) चतुर्जात (दारचीनी, तेजपात, इलायची, नागकेसर) त्रिफला (हरड़, बहेड़ा, आंवला) लौंग, पिप्पली, अगर, लालचन्दन, तालमखाने के बीज, (करहाटक—मदनवृक्षे, अकरकरायां महापिण्डीतरौ) मैनफल अथवा अकरकरा, जायफल, कौंच के फल अर्थात् बीज ॥ १ ॥

शाल्मल्यनिर्यासबलाश्वगन्धागोक्षूरबीजं मुसली क्रिमिघ्नम्।
समुद्रशोषं विषपञ्जरं च पुष्पं सुजात्युद्भवकङ्कबीजम् ॥ २ ॥

सेमल का गोंद, खिरेंटी, असगन्ध, गोखरू के बीज, मूसली, वायविडंग, समुद्रसोख, (पञ्जरः—पटोले, कोलकन्दे) (विष—जल, विष, नागकेसर) नागकेसर, चमेली, आम की गुठली की गिरी ॥ २ ॥

सर्वं समं योज्य सुकुङ्कुमं च सुचूर्णितं विंशतिभागयुक्तम्।
कस्तूरिकाषोडशभागचूर्णं खण्डं चतुर्भागयुतं विपक्वम् ॥ ३ ॥

इन पूर्वलिखित द्रव्यों को एक २ भाग लेवें। सबके समानभाग कश्मीरी

केसर का चूर्ण २० भाग लेवें । कस्तूरी का चूर्ण १६ भाग लेवे, खांड की चाशनी चार भाग हो ॥ ३ ॥

वङ्गं रसेन्द्रं गगनं सुलोहं कान्तं हि ताम्रं रविभागयुक्तम् ।
दलानि हेम्नो द्विशतानि दत्त्वा तथैव देयानि च राजतानि ।
एकत्र सर्वं विनिधाय वैद्यो जयाष्टभागं विदधीत लेहम् ॥ ४ ॥

बङ्गभस्म, रससिन्दूर, अभ्रकभस्म, लोहभस्म, कान्तभस्म, ताम्रभस्म, एक २ भाग डालें, सोने के वर्क दो सौ डालें, चांदी के वर्क दो सौ डालें । सबको एकत्र करके खरल करले फिर धुली हुई शुद्ध भांग का चूर्ण आठ भाग डाले । और सब को एकत्र करके अवलेह बना लेवे ॥ ४ ॥

जातीफलप्रमाणेन भक्षयेत्प्रातरुत्थितः ।
वीर्यवृद्धिं करोत्येष सर्वव्याधिविनाशनः ॥ ५ ॥

इस अवलेह को प्रातःकाल उठकर जायफल के बराबर मात्रा में खावे (मात्रा बलानुसार खानी उचित है, आरम्भ में चार रत्ति खा सकते हैं) । इससे वीर्य की वृद्धि होती है और सभी रोगों का नाश होता है ॥ ५ ॥

शतं च रमते स्त्रीणां कामतुल्यो भवेन्नरः ।
सर्वान्वातामयान्हन्ति प्रवृद्धं वातशोणितम् ॥ ६ ॥

इसके सेवन से मनुष्य सौ स्त्रियों को भोग सकता है मनुष्य कामदेव के समान हो जाता है। सभी प्रकार के वातरोग इससें नष्ट हो जाते हैं। अत्यन्त बढ़ा हुआ वातरक्त इस से नष्ट हो जाता है ॥ ६ ॥

अस्थिरोगं शिरोरोगं संधिरोगं च नाशयेत् ।
अस्य सेवनमात्रेण वृद्धोऽपि तरुणायते ॥ ७ ॥

अस्थि अर्थात् हड्डियों के अन्दर के रोग, शिरोरोग, सन्धिगतरोग ये सभी रोग इससे नष्ट होते हैं । इसके सेवन मात्र से ही बूढा मनुष्य जवानों के समान आचरण करता है ॥ ७ ॥

धन्यं यशस्करं सम्यगायुरारोग्यवर्धनम् ।
काश्मीरकावलेहोऽयं बलकान्तिविवर्धनः ॥ ८ ॥

यह धन देने वाला है वा धन्य है, यश देनें वाला है, आयु तथा आरोग्य बढ़ाने वाला है।यह काश्मीरकावलेह या केशरपाक बल तथा कान्ति को बढाने वाला है ॥ ८ ॥ इति केशरपाकः ॥

अथ रतिवृद्धिकरो मोदकः—**गोक्षुरेक्षुरबीजानि वाजिगन्धा शतावरी ।**
मुशली वानरीबीजं यष्टी नागबला बला ॥१॥

गोखरु, तालमखाने के बीज, असगन्ध, शतावर, श्वेतमूसली, कौंच के बीज, मुलठ्ठी, नागबला, बला ॥ १ ॥

एषां चूर्णं दुग्धसिद्धं गव्येनाऽऽज्येन भर्जितम् ।

सितया मोदकं कृत्वा भक्ष्यं वाजीकरं परम् ॥ २ ॥

इन में से प्रत्येक द्रव्य का चूर्ण समान भाग लेकर सारे चूर्ण से आठ गुणा दूध लेकर उसमें डाले और पकाकर खोया बना ले। फिर उस खोये को चूर्ण के समान भाग घी डालकर भून लेवें। फिर सारे खोये से दुगनी खांड डालकर लड्डू बना लेवें। इसे खावें तो ये अत्यन्त वाजीकरण करते हैं ॥ २ ॥

चूर्णादष्टगुणं क्षीरं घृतं चूर्णसमं स्मृतम्।
सर्वतो द्विगुणं खण्डं खादेदग्निबलं यथा ॥ ३ ॥

इस में चूर्ण से आठ गुना दूध डालना चाहिये, और चूर्ण के बराबर घी डालना चाहिये। और पाक से दुगनी खांड डालनी चाहिये। और इसे अग्निबल के अनुसार खाना चाहिये ॥ ३ ॥

वाजीकराणि भूरीणि संगृह्य रचितो यतः।
तस्माद्बहुषु योगेषु योगोऽयं प्रवरो मतः ॥ ४ ॥

क्योंकि बहुत से वाजी करनेवाले द्रव्यों को एकत्र कर के इसे बनाया गया है इसलिये यह योग अन्य योगों से अधिक प्रबल है ॥ ४ ॥

अथ रतिवल्लभाख्यपूगपाकः—

पूगं दक्षिणदेशजं दशपलोन्मानं भृशं कर्तये-
त्तत्स्विन्नं जलयोगतो मृदुतरं संकुट्य चूर्णीकृतम्।
तच्चूर्णं पटशोधितं वसुगुणे गोशुद्धदुग्धे पचे-
द्गव्याज्यान्जलिसंयुतेऽतिनिबिडे दद्यात्तुलार्धां सिताम् ॥ १ ॥

१० पल दक्षिणी सुपारी लेकर उन को काट लेवे फिर जल डालकर अग्नि पर कुछ उबाल कर मुलायम करले फिर सूखाकर कूटकर बारीक चूर्ण करले। उस चूर्ण को कपड़े में से छान लेवे। और आठ गुणा अर्थात् ८० पल गौ का दूध उस में मिलाकर आग पर पकावे। और गौ का घी एक कुड़व डालकर पकने दे। जब पककर खूब गाढ़ा होजाये तो उस में ५० पल खांड डाले ॥ १ ॥

पक्वं तज्ज्वलनात्क्षितिं प्रति नयेत्तस्मिन्पुनः प्रक्षिपे-
द्दद्यात्तदुदीरयामि बहुला दृष्ट्वाऽऽदरात्संहिताः।
एला नागबला बला सचपला जातीफलं लिङ्गिता
जातीपत्रकपत्रपत्रकयुगं तच्च त्वचा संयुतम् ॥ २ ॥

इन सब को ठीक तरह से अग्नि पर पक जाने पर उतार लेवे। और फिर अनेक संहिता ग्रन्थों से आदर पूर्वक एकत्र किये हुए अनेक द्रव्यों का चूर्ण इस में डाल देवे अब उन द्रव्यों को लिखते हैं—इलायची, नागबला, बला या खिरेंटी पिप्पली, जायफल, शिवलिङ्गी, जावित्री, तेजपत्र, तालीसपत्र, दारचीनी ॥ २ ॥

विश्वावीरणवारिवारिदवरा वांशी वरी वानरी

द्राक्षा सेक्षुरगोक्षुराऽथ महती खर्जूरिका क्षीरिका ।
धान्याकं सकसेरुकं समधुकं शृङ्गाटकं जीरकं
पृथ्वीकाऽथ यवानिका वरटिका मांसी मिसी मेथिका ॥३॥

सोंठ, खस, सुगंधबाला, मोथा, त्रिफला, वंसलोचन, शतावर, कौंच के बीज वा जड़, दाख, तालमखाना, गोखरू, बड़ी कटेली, खजूर, खिरनी, धनियां, कसेरू, मुलठ्ठी, सिंघाड़ा, जीरा, बड़ी इलायची या कालाजीरा, अजवायन, कुसुम्भे के बीज, जटामांसी, सौंफ, मेथी ॥ ३ ॥

कन्देष्वत्र विदारिकाऽथ मुशली गन्धर्वगन्धा तथा ।
कर्चूरं करिकेसरं समरिचं चारस्य बीजं नवम् ।
बीजं शाल्मलिसम्भवं करिकणाबीजं च राजीवजं
श्वेतं चन्दनमत्र रक्तमपि च श्रीसंज्ञपुष्पैः समम् ॥ ४ ॥

विदारीकन्द, मुशली, असगंध, कचूर, नागकेसर, कालीमिरच, पियाल के नये बीज या चिरौंजी । सीमल के बीज, गजपीपल, कमल के बीज, सफेद चंदन, लाल चन्दन, लौंग ॥ ४ ॥

सर्वं चेति पृथक्पृथक्पलमितं संचूर्ण्य तत्र क्षिपे-
त्सूतं वङ्गभुजंगलोहगगनं सन्मारितं स्वेच्छया ।
कस्तूरीघनसारचूर्णमपि च प्राप्तं तथा प्रक्षिपे-
त्पश्चादस्य तु मोदकान्विरचयेद् बिल्वप्रमाणानथ ॥ ५ ॥

इन में से प्रत्येक द्रव्य का चूर्ण एक २ पल डाले । इस के साथ ही इस में रससिन्दूर, बंगभस्म, नागभस्म, लोहभस्म, अभ्रकभस्म उत्तम लेकर स्वेच्छापूर्वक डाले अथवा एक २ पल ही डाले, कस्तूरी तथा कपूर का चूर्ण भी यथेष्ट डालें । फिर इस के एक २ पल के लड्डू बना लेवे ॥ ५ ॥

तान्भुक्त्वाऽपि सदा यथाऽनलबलं भुञ्जीत नाम्लं रसं
पूर्वस्मिन्नशिते गते परिणतिं प्राग्भोजनाद्भक्षयेत् ।
नित्यं श्रीरतिवल्लभाख्यकमिमं यः पूगपाकं भजे-
त्स स्याद्वीर्यविवृद्धिवृद्धमदनो वाजीव शक्तो रतौ ॥ ६ ॥

इन लड्डुओं को खाकर अग्नि बलानुसार भोजन करे । अम्लरस अर्थात खट्टा रस अधिक न खावे । जब पहले का खाया हुआ भोजन पच चुका हो तब इन लड्डुओं को भोजन से पहले ही खावे । जो मनुष्य इस रतिवल्लभनामक पूगपाक को नित्य खाते हैं वे वीर्य्य की बढ़ती के कारण कामातुर होकर मैथुन में घोड़े के समान समर्थ होते हैं ॥ ६ ॥

दीप्ताग्निर्बलवान्बली विहरते हृष्टः सुपुष्टः सदा
वृद्धो योऽपि युवेव सोऽपि रुचिरः पूर्णेन्दुवत्सुन्दरः ॥ ७ ॥

इसके सेवन से वृद्ध पुरुष भी दीप्त अग्नि वाला होता है, बलवान होता है

तथा बलियों या झुर्रियों का इससे नाश होकर हृष्ट पुष्ट हुआ २ फिर जवानों के समान हो जाता है, वह मनोहर तथा पूर्ण चन्द्र के समान सुन्दर हो जाता है ॥७॥
इति रतिवल्लभाख्यपूगपाकः ॥

कामेश्वरोमोदकः—एतस्मिन्रतिवल्लभे यदि पुनः सम्यक्खुरासानिका
धत्तूरस्य च बीजमर्ककरभः पाथोधिशोषस्तथा ।
सन्माजूफलकं तथा खसफलं त्वक्चापि निक्षिप्यते ।
चूर्णार्धा विजया तथा स हि भवेत्कामेश्वरो मोदकः ॥ १ ॥

इसी ऊपर लिखे हुए रतिवल्लभपूगपाक में यदि खुरासानी अजवायन, धतूरे के शुद्ध बीज, अकरकरा, समुद्रशोष। माजूफल, खसखस, दारचीनी इन में से प्रत्येक पदार्थ भी एक २ पल डाला जाये। और सारे चूर्ण से आधी शुद्ध भांग डाली जाये तो यह कामेश्वरमोदक कहाता है। इससे भी कामदेव की अत्यन्त वृद्धि होती है ॥ १ ॥ इति कामेश्वरमोदकः।

अथाऽऽम्रपाकः—पक्वाम्रस्य रसद्रोणे सितामाढकसंमिताम् ।
घृतं प्रस्थमितं दद्यान्नागरस्य पलाष्टकम् ॥ १ ॥

पके हुए चूसने वाले आमों का स्वरस एक द्रोण लेवे। खांड एक आढक लेवें। गौ का घी एक प्रस्थ लें, सोंठ का चूर्ण आठ पल लें ॥ १ ॥

मरिचं कुडवोन्मानं पिप्पलीं द्विपलोन्मिताम् ।
सलिलस्याऽऽढकं दत्त्वा सर्वमेकत्र कारयेत् ॥ २ ॥

मिरच का चूर्ण एक कुडव लें। पिप्पली का चूर्ण दो पल लें, जल एक आढक डालें। सबको एकत्र करलें ॥ २ ॥

पचेत्तन्मृन्मये पात्रे दारुदर्व्या प्रचालयेत् ।
चूर्णान्येषां क्षिपेत्तत्र घनीभूतेऽवतारिते ॥ ३ ॥

और मिट्टी के पात्र में इन सब द्रव्यों को डालकर आग पर पकावें। लकड़ी की कड़छी से उसे हिलाता जाये और आगे लिखे पदार्थों के सूक्ष्म चूर्णों को डाल देवे। जब गाढ़ा होजावे तो उतार लेवे ॥ ३ ॥

धान्याकं जीरकं चित्रं पत्रकं मुस्तकं त्वचम् ।
बृहज्जीरकमप्यत्र ग्रन्थिकं नागकेशरम् ॥ ४ ॥

धनियां, श्वेत जीरा, चीता, तेजपात, मोथा, दारचीनी, बड़ा जीरा, पिप्पली-मूल, नागकेसर ॥ ४ ॥

एलां पत्रीं लवङ्गं च पृथग्जातीफलं पलम् ।
सिद्धशीते प्रदद्याच्च मधुनः कुडवद्वयम् ॥ ५ ॥

छोटी इलायची, जावित्री, लौंग, जायफल प्रत्येक एक २ पल लें और उस में डाल दें। इस के शीतल होजाने पर शहद दो कुडव डाल दें ॥ ५ ॥

भक्षयेद्भोजनादर्वाक्पलमात्रमिदं नरः।
अथवा नियता नात्र मात्रा खादेद्यथानलम् ॥ ६ ॥

इस को अच्छी प्रकार से मिलाकर एकत्र कर दें। और भोजन से पूर्व इसे एक पलभर खावे। अथवा इस की मात्रा नियत नहीं है अपना अग्निबल के अनुसार मनुष्य खावे ॥ ६ ॥

मानवः सेवनादस्य वाजिवत्सुरते भवेत्।
समर्थो बलवान्पुष्टो हृष्टो नित्यं निरामयः ॥ ७ ॥

मनुष्य इस के सेवन से घोड़े के समान मैथुन में रत होजाता है। समर्थ, बलवान, पुष्ट, हृष्ट होजाता है तथा नित्य नीरोग रहता है ॥ ७ ॥

ग्रहणीं नाशयेदेष क्षयं श्वासमरोचकम्।
अम्लपित्तं च पित्तं तु कुष्ठं वै पाण्डुतामपि ॥ ८ ॥

इस से ग्रहणी का रोग नष्ट हो जाता है, क्षय, श्वास तथा अरुचि नष्ट हो जाती हैं। अम्लपित्त, पित्त, कुष्ठ तथा पाण्डुरोग भी नष्ट हो जाता है ॥ ८ ॥

इत्याम्रपाकः ॥

अथ कामाग्निसंदीपनो मोदकः—

कर्षो रसो गन्धकमभ्रकं च द्विक्षारचित्रं लवणानि पञ्च।
शटी यवानीद्वयकीटहरी तालीसप(ण्यपरं द्विकर्षम्)त्राणि परं विषं च

शुद्ध पारा एक कर्ष, शुद्ध गन्धक एक कर्ष दोनों की कज्जली करे। अभ्रक एक कर्ष ले। यवक्षार, सज्जीक्षार, चीतामूल, पांचों लवण। कचूर, अजवायन बनअजवायन, विडंग, तालीसपत्र (" पत्राणि परं विषं च " इसकी जगह "पत्रा-ण्यपरं द्विकर्षं" पाठ सर्वत्र है और यही उचित है।) इन में से प्रत्येक पदार्थ का चूर्ण एक २ कर्ष लेवें ॥ १ ॥

जीरं चतुर्जातलवङ्गजातीफलं च कर्षत्रयमेवमन्यत्।
सुवृद्धदारम् कटुकत्रयं च तथा चतुष्कर्षमिदं निबोध ॥ २ ॥

जीरा, नागकेसर, इलायची, दालचीनी, तेजपात, लौंग; जायफल प्रत्येक द्रव्य दो २ कर्ष लेवें। विधारा (" सुवृद्धसर्व " के स्थान में "सुवृद्धदारं" पाठ ठीक है), त्रिकटु, प्रत्येक तीन २ कर्ष लेवें ॥ २ ॥

धान्याकयष्टीमधुकं कसेरु फलं पृथक्पञ्चवरी विदारी।
बलेभकर्णेभबलात्मगुप्ताबीजं तथा गोक्षुरकस्य बीजम् ॥ ३ ॥

धनियां, मुलठ्ठी, कसेरु (पलं के स्थान में " फलं " चाहिये), त्रिफला प्रत्येक चार २ कर्ष लें (किसी के मत में त्रिफला ५ कर्ष लेना चाहिये)। (" पञ्चपलं विदारी " के स्थान में अन्यत्र " पञ्चवरीविदारी" ऐसा पाठ है और समीचीन भी यही है) शतावरी, विदारीकन्द। (" बलेभकर्णेभबला " पाठ " दन्तीकणाचातिबला के स्थान में समीचीन है (खिरेंटी, हस्तिकर्णपलाश, नाग-

बला, कौंच के बीज तथा गोखरु के बीज प्रत्येक पांच २ कर्ष लेवे ॥ ३ ॥

सबीजपूरेन्द्ररजःसमानं समा सिता क्षौद्रघृतं च तुल्यम्।
कर्षैकमिन्दोरथ मोदकं च कामाग्निसंदीपनमेनमाहुः ॥ ४ ॥

("सबीजपूरेन्द्रः रजः समानं" के स्थान में "सबीजपत्रेन्द्ररजः समानं" पाठ ही समीचीन है) बीज सहित भांग का चूर्ण सब के चूर्ण के समान डाले । खांड, शहद, घृत सब चूर्ण के समान ही डाले ("क्षौद्रयुतं च" की जगह "क्षौद्र घृतं च" पाठ सर्वत्र है। यही ठीक है)। कपूर एक कर्ष डाले। सबको एकत्र करके मोदक बना लेवे। इसे कामाग्निसंदीपनमोदक कहते हैं ॥ ४ ॥

वृष्यं तथा वृष्यात्परं वृष्यतरं प्रदिष्टमेतन्निषेव्य मनुजः प्रमदासहस्रम्।
गच्छेन्न लिङ्गशिथिलत्वमुपैति नित्यं नागाधिपं विजयते बलतः प्रमत्तः

("वृष्यं तथा परतरं सततं सदीप्यमानं" के स्थान में "वृष्यात्परं वृष्यतमं प्रदिष्टमेतन्निषेव्य" यही पाठ समीचीन है) इस वृष्यों में से परंवृष्यतम रसायन को सेवन करने से मनुष्य एक हजार स्त्रियों को भोग सकता है, इसके सेवन से लिंग शिथिल नहीं होता है। और बल में हाथीराज के समान बल हो जाता है ॥ ५

वातानशीतिमथ पित्तभवांश्च रोगान्-
श्लेष्मोत्थविंशतिरुजः परमाग्निमन्द्यम्।
दुर्वारकामलभगन्दरपाण्डुरोगान्-
मेहातिसारकृमिहृद्ग्रहणीविकारान् ॥ ६ ॥

८० प्रकार के वात के रोग, पित्त के ४० प्रकार के रोग, तथा कफ के २० प्रकार के रोग नष्ट हो जाते हैं। परम अग्निमन्दता, भयंकर कामला, भगन्दर, पाण्डुरोग, प्रमेह, अतीसार, कृमि, हृदयरोग, ग्रहणीरोग ॥ ६ ॥

कासज्वरश्वसनयक्ष्मकफप्रतिश्यायशूलामवातसहिताश्च रुजः समस्ताः।
हत्वा गदान्बहुविधांस्तदपत्यकारी सर्वत्र पथ्यमत सर्वसुखप्रदायी ॥
बल्यं वलीपलितहारि रसायनं स्यान्मूलं तदेव कथितं परमं पवित्रम् ७

कास, ज्वर, श्वास, यक्ष्मा, कफ, प्रतिश्याय, शूल, आमवात तथा सभी प्रकार की पीड़ायें इन सब प्रकार के रोगों को नष्ट कर देता है। सर्वत्र पथ्य है तथा सर्वत्र सुख देता है। बलदायक है, बलि तथा पलित रोग को दूर करता है, रसायन है। यह परम पवित्र है ॥ ७ ॥ इति कामाग्निसन्दीपनोमोदकः ॥

अथ शतावरीघृतम्—**घृतं शतावरीगर्भं क्षीरे दशगुणे पचेत्।**
शर्करापिप्पलीक्षौद्रयुतं तद्वृष्यमुच्यते ॥ १ ॥

शतावर एक पाव लेकर कल्क कर, गौ का घी एक सेर ले, दूध दस सेर लें, सब को एकत्र मिलाकर विधिपूर्वक पाक करें। खांड, पिप्पली तथा शहद मिलाकर इसे खाया जाये तो यह वृष्य होता है ॥ १ ॥

अथ लघुवाजिगन्धासर्पिः—कल्केन वाजिगन्धाया विपचेद्घृतमुत्तमम्।
चतुर्गुणमजाक्षीरं दत्त्वोद्धृत्याथ शीतले।
सितां समां प्रदायाद्याद्बलपुष्टिविवृद्धये॥ १॥

असगन्ध का कल्क एक पाव, घी एक सेर, बकरी का दूध ४ सेर डालकर सबको मिलाकर घी पका लेवे। इस घी को निकाल कर शीतल होने पर इसमें खांड बराबर की मिलाकर खाया जाये तो बल तथा पुष्टि होती है॥ १॥

अथ चन्दनादितैलम्—द्रव्याणि चन्दनादेस्तु चन्दनं रक्तचन्दनम्।
पतङ्गमथ कालीयागरुकृष्णागुरूणि च॥ १॥

चन्दनादि तैल के द्रव्य, श्वेतचन्दन, लालचन्दन, पतंग की लकड़ी, कालीअगर, काली अगर (दो भाग लें)॥ १॥

देवद्रुमः ससरलः पद्मकं क्रमुकोऽपि च।
कर्पूरो मृगनाभिश्च लताकस्तूरिकाऽपि च॥ २॥

देवदार, सरलकाष्ठ, पद्मकाष्ठ, सुपारी। कपूर, कस्तूरी, लताकस्तूरी॥ २॥

सिह्लकः कुकुमं गव्यं जातीफलकमेव च।
जातीपत्री लवङ्गं च सूक्ष्मैला महती तथा॥ ३॥

सिल्हक या शिलारस, जाफरान, गोलोचन, जायफल, जावित्री, लौंग, छोटी इलायची, बड़ी इलायची॥ ३॥

कङ्कोलफलकं त्वक्च पद्मकं नागकेसरम्।
वालकं च तथोशीरं मांसी दारु सिताऽपि च॥ ४॥

कङ्कोल, दारचीनी, पद्माख, नागकेसर, सुगन्धबाला, खस, मुरामांसी, (दारु सिता—दारचीनी) दारचीनी॥ ४॥

मुरा कर्चूरकश्चापि शैलेयं भद्रमुस्तकम्।
रेणुकाश्च प्रियंगुश्च श्रीवासो गुग्गुलुस्तथा॥ ५॥

मुरामांसी, कचूर, शिलारस, भद्रमोथा, रेणुका, प्रियंगु, श्रीवास, गुग्गुलु ५

लाक्षा नखश्च रालश्च धातकीकुसुमं तथा।
ग्रन्थिपर्णं च मञ्जिष्ठा तगरं सिक्थकं तथा॥ ६॥

लाख, नख द्रव्य, राल, धाय के फूल। ग्रन्थिपर्ण, मंजीठ, तगर, मोम॥६॥

एतानि शाणमानानि कल्कीकृत्य शनैः पचेत्।
तैलं प्रस्थमितं सम्यगेतत्पात्रे शुभे क्षिपेत्॥ ७॥

इन सबको एक २ शाण लेकर कल्क करे। और तेल एक प्रस्थ लेकर उसमें डालकर चतुर्गुण जल डालकर मन्द २ अग्नि से पकावे॥ ७॥

अनेनाभ्यक्तगात्रस्तु वृद्धोऽशीतिसमोऽपि यः।
सुखी भवति शुक्राढ्यः स्त्रीणामत्यन्तवल्लभः॥ ८॥

तेल मात्र शेष रह जाने पर इसे उतार लेवे और छानकर रखे। इस तेल को

मालिश करने से ८० साल का बूढ़ा मनुष्य भी सुखी होता है, वीर्य से भर जाता है तथा स्त्रियों को अत्यन्त प्रिय होता है ॥ ८ ॥

वन्ध्याऽपि भजते गर्भं षण्ढोऽपि तरुणायते ।
अपुत्रः पुत्रमाप्नोति जीवेच्च शरदां शतम् ॥ ९ ॥

इसके सेवन से बन्ध्या स्त्री को भी गर्भ ठहर जाता है, नपुंसक भी जवान पुरुषों की तरह मैथुन कर सकता है । पुत्ररहित पुरुष भी पुत्र को प्राप्त करता है और १०० वर्ष तक की आयु होती है ॥ ९ ॥

चन्दनादि महातैलं रक्तपित्तं क्षयं ज्वरम् ।
दाहं प्रस्वेददौर्गन्ध्यं कुष्ठं कण्डूं विनाशयेत् ॥ १० ॥

यह महाचन्दनादि तैल रक्तपित्त, क्षय, ज्वर । दाह, पसीने की दुर्गन्धि, कुष्ठ, कण्डू इन सबको नाश करता है ॥१०॥ इति महाचन्दनादितैलम् ॥

अथ महासुगन्धितैलम् ।

कर्पूरागुरुचोचपत्रनलिकालाक्षाशटीधातकी-
पुष्पैः समदलैलवालुसरलैः शैलेयमांसीप्लवैः ।
एलाकुंकुमरोचनादमनकैः श्रीवासजातीफलैः,
कङ्कोलक्रमुकोच्चटामदमुराकान्तालवङ्गामयैः ॥ १ ॥

कपूर, अगर, दारचीनी, तेजपात, नाली, लाख, कचूर, धाय के फूल, सतौने की छाल, एलवालक नामक सुगन्धित पदार्थ, सरलकाष्ठ या चीढ़, शिलारस, जटामांसी, मोथा इलायची, केसर कश्मीरी, गोरोचन, दौना, श्रीवास या राल, जायफल, कंकोल, सुपारी, (उच्चटा—लालगुंजा, श्वेतगुंजा, भूधात्री, नागरमोथा) भुई आंवला या नागर मोथा, कस्तूरी, मुरामांसी (कान्ता—प्रियंगु, स्थूलैला, रेनुका, मोथा आदि) बड़ी इलायची, लौंग, कूठ ॥ १ ॥

वालोशीरहरेणुकामलयजस्थौणेयचण्डानखै-
र्जातीकोशकुलीरपद्मकनतैः स्पृक्कान्वितैः पालिकैः ।
लाक्षायोजनवल्लिलोध्रसलिलैस्तैलं विपाच्याऽऽढकं
तैलाभ्यक्ततनुर्जरन्नपि भवेत्स्त्रीणां परं वल्लभः ॥२॥

सुगन्धबाला, खस, रेणुका, श्वेतचन्दन, स्थौणेयक या थुनेरा, चौरा, नख, जावित्री, काकड़ासिंही, पद्माख, तगर, स्पृक्का या पिडिंशाक नामक सुगंधद्रव्य इन में से प्रत्येक द्रव्य एक २ पल लेकर कल्क करे । तिल का तेल एक आढक ले । लाख, मंजीठ तथा लोध इन में से प्रत्येक का क्वाथ तेल से चौगना लेकर, तेल में डालकर कल्कसहित तैलपाक कर ले । इस तेल की मालिश करने से बूढा मनुष्य भी स्त्रियों का प्यारा होजाता है ॥ २ ॥

शुक्राढ्यो द्युतिमाननल्पतनयः षण्ढोऽपि रत्युत्सुको-

वन्ध्या गर्भवती भवेदपि तथा वृद्धाऽपि सूते सुतम्।
कण्डूस्वेदविचर्चिकामलहरं दौर्गन्ध्यकुष्ठापहं-
मश्विभ्यां परिकीर्तितं बहुगुणं तैलं सुगन्धं महत्॥ ३॥

वीर्ययुक्त होजाता है, तेजस्वी होजाता है तथा बहुत पुत्रोंवाला होता है, नपुंसक भी मैथुन को उत्सुक रहता है। इस से बध्या स्त्री भी गर्भवती होती है तथा वृद्ध पुरुष भी पुत्र को उत्पन्न करता है। यह तैल कण्डू अर्थात् खुजली, पसीना, विचर्चिका तथा मैल का भी नाश करता है। दुर्गन्ध तथा कुष्ठ का नाश करता है। यह महासुगन्धित तेल दुर्गन्ध तथा कुष्ठ का नाश करता है तथा अत्यन्त गुण देता है॥ ३॥ इति महासुगंधितैलं वृन्दात्॥

अथ पञ्चबाणरसः—सूताभ्रलोहोरगवङ्गशङ्खकपर्दिकाश्चैव समं विधाय।
सूतार्धभागं कनकस्य दद्याद्वारत्रयं क्षीरविभावितं तत्॥१॥

शुद्धपारदभस्म, अभ्रकभस्म, लोहभस्म, नागभस्म, वंगभस्म, शङ्खभस्म, कौड़ी भस्म इन में से प्रत्येक द्रव्य समान भाग लेकर खरल करें। पारे से आधा भाग सोने की भस्म डालकर खरल करें। फिर दूध की तीन भावना देवें॥ १॥

पोस्तैस्तथा भावितमेकविंशद्वारं तथा यष्टिसुवर्णकानाम्।
लवङ्गकाकल्करविस्वजातीफलत्रिकं कोलकचन्दनाम्॥ २॥
एषां द्रवैर्भावय सप्तवारं पृथक्पृथैकं मृगनाभिकायाः।
रसोऽयमुक्तः परमेश्वरेण श्रीपञ्चबाणो रतिशक्तिदो नृणाम्॥३॥

फिर पोस्त के क्वाथ की २१ बार भावना देवें। फिर मुलठी तथा (सुवर्णक- धतूरा, अम्लतास, हल्दी) धतूरे की २१ भावनायें देवें। फिर लौंग, अकरकरा, सोंठ, चमेली, त्रिफला, कंकाल, चन्दन इन में से प्रत्येक का स्वरस वा क्वाथ से सात २ बार पृथक् भावना देवे। अन्त में एक कस्तूरी की भावना देवें। यह पंचबाणरस जो स्वयं परमेश्वर ने कहा है मनुष्यों की भोगशक्ति को बढ़ाता है॥३॥

एतस्मादधिकं च नास्ति भुवने वीर्याधिकं धीप्रद-
मायुष्कान्तिकरं हितं वसुमतां नृणामुदारात्मनाम्।
आज्ञासिद्धमिदं रसायनवरं बल्यं वयःस्थापनं
मेहप्लीहजलोदराश्मरिरुजापस्मारविध्वंसनम्॥ ४॥

इस से बढ़कर सारे संसार में अधिक वीर्य देनेवाला, बुद्धि देनेवाला, आयु तथा कान्ति बढ़ानेवाला, रईस धनवान उदार राजाओं के लिये अन्य औषध नहीं। यह आज्ञा सिद्ध है अर्थात् वैद्य की आज्ञा के अनुसार पूरा फल देता है, यह रसायन है। बलदायक है, आयुस्थापक है। प्रमेह, प्लीहा, जलोदर, अश्मरीरोग तथा अपस्माररोग का नाश करनेवाला है॥ ४॥ इति पंचबाणरसः।

अथ चन्द्रोदयरसः—पलं मृदु स्वर्णदलं रसेन्द्रपलाष्टकं षोडश गन्धकस्य।
शोणैस्तु कार्पासभवैः प्रसूनैः सर्वं विमर्द्याथ कुमारिकाद्भिः॥१॥

कोमल अर्थात् बारीक सोने के पत्र एक पल ले, शुद्ध पारा आठ पल ले। शुद्ध गंधक १६ पल ले। सब को एकत्र खरल कर के कपास के लाल फूलों से (यह लालकपास महाबलेश्वर की ओर होती है। अभाव में साधारण कपास के फूल लेलें) खरल करें। फिर घीकुमार के रस में सब को खरल करें ॥१॥

तत्काचकुम्भे निहितं सुगाढे मृत्कर्पटैस्तद्दिवसत्रयं च।
पचेत्क्रमाग्नौ सिकताख्ययन्त्रे ततो रसः पल्लवरागरम्यः ॥ २ ॥

फिर एक काच की आतशी शीशी में रखें और गाढ़ी कपड़मिट्टी शीशी पर कर के धूप में सुखा लेवें। फिर बालुकायंत्र में रख तीन दिन रात क्रम से मन्द, मध्यम और तीक्ष्ण अग्नि देकर इसे पका लेवें। तो यह रस नये कोमल पत्तों के समान लाल रंगवाला होगा ॥ २ ॥

सौवर्णमेतत्सकलामयघ्नं सर्वेषु योगेषु च योजनीयम्।
निगृह्य चैतस्य पलं पलानि चत्वारि कर्पूररजस्तथैव ॥ ३ ॥

इस के नीचे जो स्वर्ण होगा वह इसी में पीसकर मिलादें तो यह सौवर्ण मकरध्वजरस सब रोगों को नाश करता है तथा सब ही योगों में इसे देना चाहिये॥ फिर इस रस को एक पल लेवें। कपूर चार पल लेवे ॥ ३ ॥

जातीफलं चोषणमिन्द्रपुष्पं कस्तूरिकाया इह शाण एकः।
चन्द्रोदयोऽयं कथितोऽस्य माषो भुक्तोऽहिवल्लीदलमध्यवर्ती ॥४॥

जायफल का चूर्ण; कालीमिरच का चूर्ण, लौंग, कस्तूरी इन में से प्रत्येक पदार्थ का चूर्ण एक २ शाण ले। सब को एकत्र पीसकर रखें। इस रस का नाम चन्द्रोदय है। इस को एक मासाभर लेकर (१ रत्ति से आरम्भ करें) पान के पत्ते में रखकर खावें तो मद से मस्त हुई २ सैकड़ों प्रमदाओं के महान गर्व को भी यह अवश्य ढीला कर देता है ॥ ४ ॥

मदोद्धतानां प्रमदाशतानां गर्वाधिकत्वं श्लथयत्यवश्यम्।
शृतं घनीभूतमतीव दुग्धं मृदूनि मांसानि समण्डकानि।
माषान्नमिष्टानि रसेऽत्र पथ्यमानन्ददायीन्यपराणि चात्र ॥५॥

पकाकर अत्यन्त गाढ़ा किया हुआ दूध, ताजे कोमल मांस, अण्डे, उड़द की दाल की मिठाइयां इमरती आदि इस रस के सेवन के समय खावें। ये सब पदार्थ इस में पथ्य हैं। अन्य भी आनन्ददायक पदार्थ इस में पथ्य हैं ॥ ५ ॥

वलीपलितनाशनस्तनुभृतां वयःस्तम्भनः
समस्तगदखण्डनः प्रचुररोगपञ्चाननः।
गृहे च रसराडयं भवति यस्य चन्द्रोदयः
स पञ्चशरदर्पितो मृगदृशां भवेद्वल्लभः ॥ ६ ॥

यह रस वलि तथा श्वेत बालों को नष्ट करता है, आयु की स्थिरता करता है समस्त रोगों का नाश करता है सभी रोगों के लिये शेर के समान है। जिस के

घर में यह चन्द्रोदय रसराज रहता है वह मनुष्य सदा कामोन्मत्त होकर मृगनयनी रमणियों का प्यारा बना होता है इस में कपूर एक भाग हीं डालें तो उत्तम लाभ करता है ऐसा ग्रन्थान्तर में लिखा है ।। ६ ।। इति चन्द्रोदयरसः ॥

अथ वृद्धपुष्पधन्वा रसः—कनकहरजकान्तं ताप्यकं वृद्धिभावं
द्विजकुवलययष्टीशाल्मलीनागवल्लयः।
घृतमधुपयखण्डं पुष्पधन्वा द्विवल्लो
रमयति बहुकान्ता दीर्घमायुर्बली स्यात् ॥१॥

स्वर्णभस्म, शुद्धपारदभस्म अर्थात् रससिन्दूर , कान्तभस्म, स्वर्णमाक्षिकभस्म क्रमशः बढ़ाकर १, २, ३, ४ भाग लें। फिर सब को एकत्र खरल कर के तेजबल के फलों के काथ में कुवलय अर्थात् श्वेत कमल के रस में, मुलठ्ठी के काथ, सीमल का स्वरस तथा पान के स्वरस से भावित कर के रखें। इसे घी,शहद, दूध तथा खांड मिलाकर दो वल्ल परिमाण में खावें तो यह पुष्पधन्वारस बहुत सी स्त्रियों को भोगने की सामर्थ्य देता है, इससे दीर्घ आयु होती है तथा मनुष्य बलवान होता है१

अथ लघुपुष्पधन्वा रसः—हरजभुजगलोहान्यभ्रकं च त्रिभागं
कनकविजययष्टीशाल्मलीनागवल्लयः।
सितमधुघृतदुग्धैः सेवितो वीर्यवृद्धिं
रमयति बहुकान्ता पुष्पधन्वा रसः स्यात् ॥१॥

पारदभस्म या रससिन्दूर, नागभस्म, लोहभस्म प्रत्येक एक २ भाग, अभ्रक भस्म तीन भाग लें।सब को एकत्र कर खरल करें।धतूरे के रस,भांगके रस,मुलठ्ठी के रस सीमल के रस तथा पान के पत्ते के रस,इन सब के रसों को लेकर इसे क्रमशः खरल करें। इस रस को खांड, शहद, घी तथा दूध से मिलाकर खाया जाये तो वीर्यवृद्धि करता है तथा बहुतसी स्त्रियों के भोगने की शक्ति देता है। इस का नाम पुष्प धन्वारस है१

अथ मदनकामदेवो रसः—तारं वज्रं सुवर्णं च ताम्रसूतकगन्धकम्।
लोहं क्रमविवृद्धानि कुर्यादेतानि मात्रया ॥१॥
विमर्द्य कन्यकाद्रावैर्न्यसेत्काचमये घटे।
विमुद्र्य पिठरीमध्ये धारयेत्सैन्धवैर्भृते ॥ २ ॥

चांदी की भस्म १ भाग, हीरे की भस्म २ भाग, सोने की भस्म ३ भाग, तांबे की भस्म ४ भाग, शुद्धपारा ५ भाग, शुद्धगन्धक ६ भाग, लोहभस्म ७ भाग ले। इन को विधिपूर्वक मिलाकर घीकुमारी के स्वरस से खूब खरल करे। फिर कांच की शीशी में भरकर मुद्रा कर के एक हांडी में सेंधानमक भरकर उस में उस शीशी को रख देवे ॥ २ ॥

वह्निं शनैः शनैः कुर्याद्दिनैकं तु तदुद्धरेत्।
स्वाङ्गशीतं च संचूर्ण्य भावयेदर्कदुग्धकैः ॥ ३ ॥

फिर धीरे २ एक दिन आग देवे। स्वांग शीतल होने पर उसमें से द्रव्यों को

निकाल कर आक के दूध से भावना देवे ॥ २ ॥

अश्वगन्धा च काकोली वानरी मुसली त्तुरा।
त्रिवारं च रसैर्भाव्यं शतावर्याश्च भावयेत् ॥ ४ ॥

फिर असगन्ध काकोली, कौंच, मूसली, गोखरु, इनमें से प्रत्येक द्रव्य की तीन २ भावना देवे, फिर शतावरी के रस की तीन भावना देवे ॥ ४ ॥

कस्तूरीव्योषकर्पूरं कङ्कोलैलालवङ्गकम्।
पूर्वचूर्णादष्टमांशमेतच्चूर्णं विमिश्रयेत् ॥ ५ ॥

इस सारे चूर्ण से आठवां भाग आगे लिखे हुए द्रव्यों का चूर्ण लेवे—कस्तूरी, त्रिकुटा, कपूर, इलायची, लौंग इन में से प्रत्येक द्रव्य समान २ भाग लेवे। फिर सारे चूर्णों को एकत्र कर मिला लेवें ॥ ५ ॥

सर्वैः समां शर्करां च दत्त्वा शाणोन्मितं पिबेत्।
गोदुग्धाद्विपलेनैव मधुराहारसेवकः ॥ ६ ॥

और सबके बराबर खांड डाले। फिर इसको एक शाण लेकर दोपल गौ के दूध के साथ पी लेवे। और मधुर भोजन करे ॥ ६ ॥

अस्य प्रभावात्सौन्दर्यं बलं तेजो विवर्धते।
तरुणीं रमयेद्वृद्धो न च हानिः प्रजायते ॥ ७ ॥

इसके प्रभाव से सौन्दर्य, बल तथा तेज बढ़ता है। वृद्ध पुरुष भी तरुणी स्त्री को भोग सकता है और उसकी शरीर की हानि नहीं होती है ॥ ७ ॥ इति मदनकामदेवोरसः।

अथ महाराजवटीरसः—

बीजं भल्लातरोर्विधाय बहुधा खण्डं त्रियामोषितं
छागे दुग्धवरेऽथ शुष्कमथ तद्गन्धेन तिथ्यंशिना।
युक्तं काचघटीयुतं हुतभुजो योगेन च त्वान्ततः
सत्त्वं तस्य निगृह्य काचघटिते भाण्डे सुखं स्थापयेत् ॥ १ ॥

ढाक के बीज के बहुत से टुकड़े करके उनको बकरी के दूध में तीन याम या पहर तक भिगो रखे फिर उन्हें निकालकर सुखा लेवे और उनका १५ वां भाग शुद्ध गन्धक लेकर मिलाकर कांच की शीशी में बन्द करके अग्नि देकर उसका सत्त्व या तेल निकाल लेवे और उस सत्त्व रूपी तेल को कांच की शीशी में रखे ॥१॥

तत्तैलं वल्लमात्रं तु ताम्बूलीपत्रगं चरेत्।
क्षिप्त्वा तत्र रसं वल्लमङ्गुल्यग्रेण मर्दयेत् ॥ २ ॥
युक्त्या तां कज्जलीं भुक्त्वा ताम्बूलं शीलयेदनु।
शाकाम्लं माषषट्कादिवर्जितं पथ्यमाचरेत् ॥ ३ ॥
अनेन योगराजेन षण्ढोऽपि पुरुषायते।
अपूर्ववच्छतं गच्छेद्वनितानां मदागणान् ॥ ४ ॥

उस तेल को एक वल्ल भर लेकर पान के पत्ते में लगाकर खावे। उसमें एक वल्ल भर शुद्ध पारद भस्म मिलाकर उंगली के अगले भाग से तेल तथा पारद-भस्म की अच्छी प्रकार से कज्जली करके खा लेवे ऊपर से पान खा लेवे। इसके सेवन के समय पत्तों के सभी साग, खटाई तथा माष या उड़द आदि छह पदार्थ भी खाने छोड़ देवे। शेष उत्तम २ पदार्थों का सेवन करे। इस योगराज से नपुंसक पुरुष भी वृष के अर्थात् सांड के समान समर्थ हो जाता है। तथा मद से युक्त सौ स्त्रियों को भी विनाश्रम के भोग सकता है ॥ ४ ॥

वलीपलितविध्वंसी योगोऽयं क्षयकुष्ठजित्।
वातपित्तकफातङ्कहस्तिपञ्चाननः परम्।
नास्त्यनेन समं लोके किंचिदन्यद्रसायनम् ॥ ५ ॥

इससे बली तथा पलित का नाश होता है,यह योग क्षय तथा कुष्ठ को नष्ट कर देता है। वातपित्त तथा कफ के रोग रूपी हाथी के लिये यह शेर है। इससे बढ़कर संसार में अन्य कोई रसायन नहीं है ॥ ५ ॥ इतिमहाराजवटीरसः सारसंग्रहात्।

अथ पूर्णेन्दुनामा रसः—शाल्मल्युत्थद्रवैर्मर्द्यं पक्षैकं शुद्धसूतकम्।
यामद्वयं पचेच्चापि वस्त्रे बद्ध्वाऽथ मर्दयेत् ॥ १ ॥

शुद्ध पारे को सेमल की छाल के स्वरस से १५ दिन तक खरल करे। फिर उस पारे को वस्त्र में बांधकर सेमल के रस में दो पहर तक पकावे ॥ १ ॥

दिनैकं शाल्मलीद्रावैर्मर्दयित्वा वटीकृतम्।
वेष्टयेन्नागवल्ल्याऽथ निक्षिपेत्काचभाजने ॥ २ ॥

फिर एक दिन सेमल के स्वरस में खरल करके गोली बना लेवे। फिर पान के पत्तों में लपेट कर उस गोली को कांच में डाल देवे ॥ २ ॥

भाजनं शाल्मलीद्रावैः पूर्णं यामद्वयं पचेत्।
वालुकायन्त्रमध्ये तु द्रवे जीर्णे समुद्धरेत् ॥ ३ ॥

फिर उस पात्र में सेमल का स्वरस डालकर प्याले को भर लेवे। और उस प्याले को वालुकायंत्र के मध्य में रखकर दोपहर तक पका लेवे। जब सेमल का स्वरस जल जावे तो उसे उतार कर निकाल लेवे ॥ ३ ॥

द्विगुञ्जं भक्षयेत्प्रातर्नागवल्लीदलान्तरे।
मुसलीं ससितां क्षीरं पलैकं पाययेदनु ॥ ४ ॥

इसको पीसकर रख लेवे। इसे दो रत्ति भर लेकर पान के पत्ते में रखकर प्रातःकाल ही खा लेवे। अनुपान में श्वेत मूसली में खांड मिलाकर एक पल दूध के साथ पिला देवे ॥ ४ ॥

रसः पूर्णेन्दुनामायं सम्यग्वीर्यकरो भवेत्।
कामिनीनां सहस्रैकं नरः कामयते ध्रुवम् ॥ ५ ॥

यह पूर्णेन्दुनामकरस वीर्य करने वाला ठीक ही है। इससे मनुष्य एक हजार

कामिनियों को भी निश्चय से भोग सकता है ॥५॥ इति पूर्णेन्दुनामारसः।

अथ रसभस्मयोगः—खर्परे धारयेद्गन्धं तैलवद्वह्निना क्षणम्।
तत्स्तस्मिन्क्षिपेत्सूतं तत्समानं ततः परम् ॥ १ ॥

एक मिट्टी के खप्पर में शुद्ध आंवलासार गन्धक डाले उसे आग पर रखे। जब वह क्षणभर में पिघलकर तेल के समान हो जावे तब उसमें उसी के समान शुद्ध पारा भी डाल देवे ॥ १ ॥

घर्षयेल्लोहदर्व्याऽथ यावज्ज्वलति वह्निना।
खर्परस्यान्तरं वह्निर्यदा ज्वलति केवलम् ॥ २ ॥

तब खप्पर के अन्दर लोहे की कड़छी से घोटता रहे नीचे आग जलती रहे। जब खप्पर के अन्दर केवल आग ही आग जलती हुई दिखाई देवे ॥ २ ॥

अथो वह्निं तदा मन्दं विधाय घटयेत्पुनः।
लोहदर्व्या भवेद्यावद्भस्म तत्स्फटिकोपमम् ॥ ३ ॥

तब अग्नि मन्द कर दे और फिर लोहे की कड़छी से उस खप्पर के अन्दर पड़े हुए पारदादि को घोटता रहे जब स्फटिक के समान श्वेत भस्म हो जाये ॥३॥

तदादाय प्रयोक्तव्यं रोगेषु सकलेष्वपि।
अग्निमान्द्यं च षाण्ढ्यं च कासश्वासभगंदराः ॥ ४ ॥

तब उस भस्म को निकाल कर सभी रोगों में प्रयुक्त करे। इससे अग्निमांद्य, नपुंसकता, कास, श्वास, तथा भगन्दर ॥ ४ ॥

व्रणाश्च विविधाः सर्वे बलयः पलितानि च।
नश्यन्त्यनेन योगेन सत्यं शिववचोदितम् ॥ ५ ॥

विविध प्रकार के व्रण, बालियें, पालितरोग ये सब इससे नष्ट हो जाते हैं। यह बात सत्य है और शिव जी ने कही हैं ॥ ५ ॥

अथ ध्वजवृद्धिकरणम्—क्षौद्रं क्षुद्रातगरमरिचैः पिप्पलीसैन्धवाभ्यां
प्रत्यक्पुष्पीयवतिलगुडश्वेतासिद्धार्थमाषैः।
श्लक्ष्णीभूतैर्भवति मिलितं वाजिगन्धासनाथैः
श्रोणीश्रोत्रभुजकुचशिरःशेफसां वृद्धिकारी ॥ १ ॥

शहद, छोटी कटेली के फल, तगर, मिरच, पीपली, सेंधानमक, अपामार्ग की जड़, जौ, तिल, गुड, श्वेत सरसों, उड़द और असगन्ध इन सबको समान भाग लेकर बारीक चूर्ण करके लेप करें तो चूतड़, कान, भुजायें, स्तन तथा लिंग की वृद्धि होती है ॥ १ ॥ इति राजमार्तण्डात्।

कुष्ठादिलेपः—सकुष्ठमातङ्गबलाबलानां वचाश्वगन्धागजपिप्पलीनाम्।
तुरङ्गशत्रोर्नवनीतयोगाल्लेपेन लिङ्गं मुशलत्वमेति ॥ २ ॥

कूठ, नागबला, बला, बच, असगन्ध, गजपीपल, कनेर की जड़ सबको सम-भाग लेकर पीसकर मक्खन के साथ लेप करें तो लिंग मूसल के समान मोटा हो जाता है ॥ २ ॥ इत्यनङ्गरङ्गात् । इति वाजीकरणाधिकारः ।

अथांगमैथुनम्—स्मरणं कीर्तनं केलिः प्रेक्षणं गुह्यभाषणम् ।
संकल्पोऽध्यवसायश्च क्रियानिर्वृत्तिरेव च ॥ १ ॥

विषय की बातों का तथा स्त्री का स्मरण करना, उसी की ही बातें करनी, स्त्री को देखते रहना, स्त्री से विषय क्रीडा करनी, स्त्री से गुप्त भाषण करना, मन में उसके लिये अनेक संकल्प करना, काम वासना तृप्ति का यत्न करना और मैथुन या भोग कर लेना ॥ १ ॥

एतन्मैथुनमष्टाङ्गं प्रवदन्ति मनीषिणः ।
विपरीतं ब्रह्मचर्यमेतदेवाष्टलक्षणम् ॥ २ ॥

ये आठ प्रकार का मैथुन विद्वानों ने कहा है । इन आठों प्रकार के मैथुनों से बचना और इसके विरुद्ध आचरण करना ब्रह्मचर्य कहाता है ॥ २ ॥

अथ कामेश्वरः—जातीफलं च सौराष्ट्री कृष्णधत्तूरबीजकम् ।
जातीपुष्पमफेनं च नागं हिङ्गुलमेव च ॥ १ ॥

जायफल, सोरठमाटी (अभाव में फिटकरी या कीचड़ की पपड़ी लें, या गोपी चन्दन अर्थात् तिलक लगाने की मिट्टी लें) काले धतूरे के शुद्ध बीज, जावित्री, अफीम, सीसाभस्म, शुद्ध हिंगुल ॥ १ ॥

एतानि समभागानि खसक्काथेन मर्दयेत् ।
गुञ्जामात्रां च वटिकां सितया सह भक्षयेत् ॥ १ ॥
नाम्ना कामेश्वरः प्रोक्तो रमते कामिनीशतम् ॥ २ ॥

इन में से प्रत्येक द्रव्य समान भाग लेकर खसखस का क्काथ करके उससे सबको मर्दन करे । फिर एक रत्ति की गोली बना लेवे । इस गोली को खांड से मिलाकर खावे तो यह कामेश्वररस इतनी सामर्थ्य देता है कि मनुष्य सौ स्त्रियों को भोग सकता है २

अथ वंगेश्वरः—रसं वङ्गसमं कृत्वा चतुर्भागं च गन्धकम् ।
कुमारीरससंयुक्तं दिनमेकं तु मर्दयेत् ॥ १ ॥

शुद्ध पारा एक भाग, शुद्ध बंग एक भाग पिघलाकर पारे में डाले और दोनों को खूब खरल करे । फिर शुद्ध गन्धक चार भाग डाले और खरल करे । फिर घीकुमारी के रस से एक दिन खरल करे ॥ १ ॥

मन्दमध्यमतीव्राग्निवालुकायन्त्रगं पचेत् ।
अश्वगन्धामृतासारमोचारसशतावरीः ॥ २ ॥

फिर एक शीशी में डालकर बालुकायंत्र में रखकर मन्द मध्यमे और तीव्र अग्नि देकर एक दिन पका लेवे । इस रस को स्वांग शीतल होने पर निकाल कर

रखे। इसको शीशी में डालकर पृथक् रखे। और असगन्ध, गिलोय का सत, मोचरस, शतावर ॥ २ ॥

गोक्षूरधात्री कूष्माण्डी वाराही पत्रमागधी।
त्रिफला कर्कटी मुस्ता यष्टीमधुसमन्वितम् ॥ ३ ॥

गोखरु, आंवला, पेठा, वराहीकन्द, तेजपत्र, पिप्पली, त्रिफला, ककड़ी का फल या बीज, मोथा, मुलट्ठी इन में से प्रत्येक द्रव्य एक २ भाग लें ॥ ३ ॥

सर्वसाम्यं सितायुक्तं चूर्णं कर्षार्धसंयुतम्।
गुञ्जाचतुष्टयां मात्रां गोक्षीरमनुपानतः ॥ ४ ॥

सब चूर्ण के समान खांड मिलाकर रखे। अब इस चूर्ण को आधा कर्ष भर लेकर इसमें पूर्व शीशी वाले वंगेश्वर रस की ४ रत्ति मात्रा मिलाकर खा जावें और ऊपर से गौ का दूध अनुपान में पीवे ॥ ४ ॥

प्रातरुत्थाय सेवेत लवणाम्लं च वर्जयेत्।
बहुमूत्रं मूत्रकृच्छ्रं रक्तमूलप्रमेहकम् ॥ ५ ॥

वह प्रातःकाल ही खाना चाहिये। इसे सेवन करते समय नमक तथा अम्ल रस बन्द कर देना चाहिये। इसे सेवन करने वाले मनुष्य का बहुमूत्ररोग, मूत्र-कृच्छ्र, रक्तमूल वाला प्रमेह अर्थात् रक्तजप्रमेह ॥ ५ ॥

मधुमेहं नष्टशुक्रं नष्टलिङ्गं च नाशयेत्।
सर्वमेहप्रशमनो वङ्गेश्वर इति स्मृतः ॥ ६ ॥

मधुमेह तथा नष्टशुक्र अर्थात् वीर्यनाश होजाना, नष्टलिङ्ग अर्थात् लिंग में चैतन्य न होना ये सभी रोग नष्ट होजाते हैं। यह सब प्रमेहों का नाश करनेवाला है इसे बङ्गेश्वर कहते हैं ॥ ६ ॥ इति बङ्गेश्वररसः ॥

शतावर्यादिचूर्णम्—शतावर्यश्वगन्धा च वानरी मुशली तथा।
गोकण्टो शर्कराक्षीरं पिबेन्नष्टेन्द्रियो नरः ॥ १ ॥

शतावर, असगंध, कौंच, मूसली, गोखरू इन को समभाग लेकर चूर्ण करके रखे। दूध में खांड मिलाकर इस से इस चूर्ण को पीवे तो इन्द्रिय की शक्ति नष्ट भी होगई हो, तो फिर जीवित होजाती है ॥ १ ॥

तिलगोक्षुरादिचूर्णम्—तिलगोक्षुरचूर्णेन साधितं छागलं पयः।
पीत्वा सशर्कराक्षौद्रं शीघ्रं गच्छति षण्ढता ॥ २ ॥

तिल, गोखरू समान भाग लेकर चूर्ण कर के बकरी के दूध में पकालें। उस दूध को खांड तथा शहद मिलाकर पिलावें तो शीघ्र नपुंसकता नष्ट होजाती है॥

गोक्षुरादिपयः—सेवेत गोक्षुरं चूर्णं छागक्षीरेण साधितम्।
शर्करामधुसंयुक्तं शीघ्रं गच्छति षण्ढता ॥ ३ ॥

गोखरू का चूर्ण बकरी के दूध में पकाकर खांड तथा शहद मिलाकर पिलावे

जाय तो शीघ्र ही नपुंसकता नष्ट होजाती है ॥ ३ ॥

सिन्दूरादियोगः—सिन्दूरं कनकं बीजं विजया क्षुरबीजकैः ।
जातीफलं जातिपत्रीं कटुशिग्रुमफेनकम् ॥ ४ ॥

शुद्ध किया हुआ (दूध तथा अम्लरस के योग से सिन्दूर शुद्ध होजाता है) सिन्दूर, शुद्ध धतूरे के बीज, शुद्ध भांग, गोखरूबीज, जायफल, जावित्री, कड़वा सुहांजना, अफीम ॥ ४ ॥

समुद्रशोषसंयुक्तं लवङ्गं च तथैव च ।
विजयारसनैर्मर्द्यं याममेकं प्रशस्यते ॥ ५ ॥
बदरीबीजमात्रं तु स्त्रीशतं रमते मुदा ।

समुन्द्रसोख, लौंग । इन सब का चूर्ण करके भांग के स्वरस से एक प्रहर तक मर्दन करे ॥ ५ ॥ इस रस को एक बेर की गुठली के बराबर लेकर भांग के रस से इन्द्रिय पर मल ले तो मनुष्य सौ स्त्रियों को आनन्द से भोग सकता है ।

अब्धिशोषादि—अब्धिशोषं च सिद्धार्थांश्चतुर्वल्लमितान् पृथक् ॥ ६ ॥

समुद्रसोख, श्वेतसरसों पृथक्-२ चार २ वल्ल या बारह २ रत्ति ले ॥ ६ ॥

अर्धशिष्टं च तद्दुग्धं सायंकाले पिबेन्नरः ।
बिन्दुपातं न कुरुते वाजीकरणमुत्तमम् ॥ ७ ॥

इन को डालकर दूध पकावे जब वह औटकर आधा रह जावे (अथवा इन की फंकी खाकर ऊपर से अधौटा दूध पीवे) सायंकाल पीवे । तो मनुष्य का एक बूंद वीर्य भी मैथुन के समय नहीं गिरता । यह उत्तम वाजीकरण है ॥ ७ ॥

अथ रसभस्मयोगः—शुद्धं सूतं द्विधा गन्धं लौहपात्रेऽग्निसंस्थिते ।
आर्द्रन्यग्रोधदण्डेन चालयेद्भस्मतां नयेत् ॥
रक्तिकाद्वितयं भुक्तं रेतःपुष्टिकरं परम् ॥ १ ॥

एक लोहे के पात्र को आग पर रखें। उस में शुद्ध पारा एक तोला, शुद्ध गंधक दो तोला डाले और एक ताजी वड़ की शाखा से या डंडे से उस पारदादि को चलाता जाये और तब तक घोटता रहे जब तक भस्म न होजाये । इस भस्म की दो रत्ति मात्रा खावे तो वीर्य्य को परम पुष्ट करती है ॥ १ ॥

अथ वीर्यस्तम्भवटी—जातीफलं लवङ्गं च जातीपत्रं सकुङ्कुमम् ।
सूक्ष्मैला चाहिफेनं च त्वाकारकरभं तथा ॥१॥

जायफल, लौंग, जावित्री, कश्मीरी केसर, छोटी इलायची, अफीम, अकरकरा ।

प्रत्येकं कर्षमात्राणि कर्पूरं शाणमात्रकम् ।
नागवल्लीदलरसैर्वटी चणकसंनिभा ।
वीर्यसंस्तम्भनी ह्येषा बलवर्णाग्निदीपनी ॥ २ ॥

प्रत्येक पदार्थ एक २ कर्ष लें, कपूर एक शाण लें । सबको विधिपूर्वक पीसकर

पान के रस में घोटकर, चने के समान गोली बनावें। इस गोली को सेवन करावे। इससे वीर्य्य स्तम्भ होता है तथा बल वर्ण और अग्निदीपन होती हैं ॥ २ ॥

अथ कपिकच्छूपाकः—निस्तुषं वानरीबीजं कृत्वा विंशत्पलानि च।
त्रिंशत्पलां सितां दत्त्वा घृतं दत्त्वा पलाष्टकम् ॥१॥

कौंच के बीजों के छिलके दूर करके २० पल लेवें। ३० पल खांड डालें। घी ८ पल डालें ॥ १ ॥

दुग्धाढकसमायुक्तं मृदुना वह्निना पचेत्।
यावद्दर्वीप्रलेपः स्यात्तन्मध्ये चूर्णितं क्षिपेत् ॥ २ ॥

दूध एक आढक डालें। सबको एकत्र करके मन्द २ अग्नि से पका लें। जब गाढ़ा २ होकर कड़छी से लगने लगे तब आगे लिखे हुए पदार्थों का चूर्ण उसमें डाल देवे ॥ २ ॥

जातीफलं त्रिकटुकं त्रिगन्धं देवपुष्पकम्।
अकल्करं जातिपत्री कोकिलाबीजकेसरम् ॥ ३ ॥

जायफल, सोंठ, मिरच, पीपल, दारचीनी, तेजपात, लौंग, अकरकरा, जावित्री तलमखाना, नागकेसर ॥ ३ ॥

पुनर्नवा पले द्वे च मुसली साहिफेनकम्।
पारदं लोहचूर्णं च त्वभ्रकं च पलार्धकम् ॥ ४ ॥

पुनर्नवा प्रत्येक पदार्थ दो २ पल लें। मूसली, अफीम, पारदभस्म, लोहभस्म तथा अभ्रकभस्म प्रत्येक पदार्थ आधा २ पल लें ॥ ४ ॥

चन्दनागरुकस्तूरीकर्पूरं शाणमात्रकम्।
पलार्धं भक्षयेत्तत्तु क्रमाद्वीर्यबलप्रदम् ॥ ५ ॥

लालचन्दन, अगर, कस्तूरी, कपूर प्रत्येक पदार्थ एक २ शाण लें। सबको एकत्र मिलाकर आधा पल मात्रा क्रम से बढ़ाकर खावें तो वीर्य तथा बल को बढ़ाता है ५

अथ रसवैकृतियोगोऽभिलिख्यते—जनितविविधदाहे शीततोयाभिषेको
मलयजघनसारो लेपनं मन्दवातः।
तरुणदधि सिताक्तं नारिकेलीफलाम्भो
मधुरशिशिरपानं शीतमन्यच्च शस्तम् ॥ १ ॥

पारदादि खाने से विविध प्रकार का शरीर में दाह होने पर शीतल जल का सिंचन करना चाहिये। चन्दन तथा कपूर का लेप करना चाहिये। मन्द २ वायु सेवन करनी चाहिये। ताजा दही खांड मिलाकर खिलावें, नारियल का पानी पिलावें। तथा अन्य मधुर तथा शीतल पदार्थ पिलाने चाहियें तथा सभी शीतल पदार्थ सेवन करने उत्तम हैं ॥ १ ॥

सौभाग्यादि—सौभाग्यमेघनादाङ्घ्रिसितामधुकचन्दनम्।

तुषोदकेन पातव्यं सर्वस्मिन् रसवैकृते ॥ २ ॥

सुहागा, चौलाई की जड़, खांड, मुलठ्ठी तथा चन्दन इन सबको चूर्ण करके तुषोदकसे पिलावें तो सब प्रकार का रस अर्थात् पारे का विकार नष्ट हो जाता है ॥२॥

छर्दौ—छर्द्यां चेक्षुरसो देयः कपित्थं वा सितान्वितम्।
कुमारीगिललेपश्च सर्वाङ्गेण प्रशस्यते ॥ ३ ॥

पारा सेवन से वमन आवे तो ईख का रस पिलावें या खांड से मिलाकर कैथ का चूर्ण खिलावें। घीकुमार तथा जम्बीरी नीबू के रस को सारे शरीर पर लेप कर देवे तो लाभ होता है ॥ ३ ॥

क्षीरं मधुसितोपेतं क्वाथो वाऽमृतबिन्दुकः।
उपचारा अमी सर्वे प्रशस्ता रसतापिनाम् ॥
रसदाहे भवेत्सर्वं पित्तज्वरभिषग्जितम् ॥ ४ ॥

शहद तथा खांड से मिलाकर दूध पिलावें। अथवा (अमृतबिन्दुकः—गिलोय, जलपीपल) गिलोय तथा जल पीपली का क्वाथ पिलावें। ये सभी उपाय पारे के सेवन से जो संतप्त हों उनके लिये लाभ देते हैं। पारे से हुए २ दाह में पित्तज्वर नाशक कार्य्य करने चाहियें ॥ ४ ॥

अथ रससारः—मुक्ताविद्रुमवङ्गभूतिसहितं वल्लं पृथक् स्वर्णकं
छिन्नासत्त्वतुगासितानवनितं चाऽऽलोड्य संभक्षयेत्।
संजाते तृषि नारिकेलसलिलं तत्कालिकं प्राशये-
त्सर्वस्मिन् रसवैकृते च गदितं ह्येतच्च योगामृतं ॥१॥

मोती भस्म, मूंगाभस्म, बंगभस्म प्रत्येक एक वल्ल लें। तथा सुवर्णभस्म, गिलोय का सत, वंशलोचन, खांड, मक्खन सबको मिलाकर खिलावें। और प्यास लगने पर नारियल का जल तत्काल ही मिला देवे। ये सभी पदार्थ सब प्रकार के रस अर्थात् पारदादि से हुए २ विकारों में प्रयुक्त करने चाहियें ॥ १ ॥

सर्वस्मिन् रसवैकृते हि शिशिरं स्वेच्छाम्बुपानादिकं
देयं तापशमाय दाडिमतरोरग्राणि दूर्वाशिफाः।
संपेष्यामलया ददीत च तदा स्वेच्छावशेन त्यजे-
द्यावत्पूर्वबलं भवेत्पटुतरं तावत्स्त्रियं न स्पृशेत् ॥ २ ॥

सब प्रकार के पारे के विकार में शीतल जल यथेष्ट पिलावें इससे ताप की शान्ति होती है। और अनार क कोंपल, दूब की जड़, आंवलों के साथ पीसकर पिलावें। और जब तक पहले से भी अधिक बल न हो जाये तब तक स्त्री को न छुवे२

यष्ट्यादि—यष्टीपटोलनिष्क्काथो मधुना मधुरीकृतः।
तीव्रपित्तज्वरोन्मादनाशनो रसदाहजित् ॥ ३ ॥

मुलठ्ठी, पटोलपत्र इन दोनों का क्वाथ करके शहद डालकर मीठा करके

पिलाया जाये तो तीव्र पित्त ज्वर से हुए २ उन्माद का नाश होता है तथा पारे की दाह शान्त होती है॥ ३ ॥

छिन्नादिक्काथः—छिन्नायष्टीघनोशीरधान्यपर्पटचन्दनैः।
रसदाहं जयेत्क्काथो खण्डवंशीकसंयुतः ॥ ४ ॥

गिलोय, मुलठ्ठी, मोथा, खस, धनियां, पित्तपापड़ा, लालचन्दन इन सबका क्काथ खांड तथा वंशलोचन से मिलाकर पिलाया जाये तो पारे का दाह नष्ट होता है४

चन्दनोदीच्यशीतैश्च क्काथः खण्डोपलान्वितः।
रसदाहं जयत्याशु पित्तज्वरहरः परः ॥ ५ ॥

चन्दन, सुगन्धबाला (शीतैः—पुण्डरीक, सुगन्धतृण, कपूर, पापड़ा, नीम वेतस) तथा पित्तपापड़ा का क्वाथ करके उसमें मिश्री मिलाकर पिलावें तो पारे की दाह तथा पित्तज्वर नष्ट होता है ॥ ५ ॥

दूर्वादिघृतम्—दूर्वासोत्पलकिञ्जल्कमञ्जिष्ठाशैलवालुकम्।
सितासितमुशीरं च मुस्तं चन्दनपद्मकम् ॥ ६ ॥

दूब, नीलोफरका केसर, मंजीठ, (शैलवालकम्-शिलारस, एलवालुक वा शैवाल) शिलारस एलवालुक नामक सुगंध द्रव्य, खांड (सित-चन्दने, सिता-खांड, आमलक्यां च) या आंवला, चन्दन, श्वेत खस, मोथा, चन्दनलाल, पद्माख॥

तत्समं च भवेत्क्षीरं घृतप्रस्थं विपाचयेत्।
जीवकर्षभकौ मेदा महामेदा तथैव च ॥ ७ ॥

इन का कल्क करे। इस से चौगुना घी ले जो एक प्रस्थ हो, और दूध भी १ प्रस्थ डालकर घी पका लेवे। यह घी परमोत्तम है ॥ तथा जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा ॥ ७ ॥

काकोली क्षीरकाकोली मृद्वीका मधुकं तथा।
मुद्गपर्णी माषपर्णी विदारी रक्तचन्दनम् ॥ ८ ॥

काकोली, क्षीरकाकोली, मुनक्का, मुलठ्ठी, मुद्गपर्णी, माषपर्णी, विदारीकन्द, लालचन्दन इन का चूर्ण कर ले ॥ ८ ॥

शर्करामधुसंयुक्तं सिद्धं विस्रावयेद् घृतम्।
रक्तपित्तविकारेषु वातरक्तगदेषु च ॥ ९ ॥

खांड तथा शहद मिलाकर इन सब को उसी घी से मिलाकर खिलावे तो रक्तपित्त के विकार तथा वातरक्त के रोग नष्ट होते हैं ॥ ९ ॥

क्षीणशुक्रे प्रदातव्यं वाजीकरणमुत्तमम्।
अङ्गदाहं शिरोदाहं ज्वरं पित्तसमुद्भवम् ॥ १० ॥

वीर्य की क्षीणता में दें तो उत्तम वाजीकरण है। अंगों की दाह, सिर का तपना, पित्तज्वर इन सब को यह घी नष्ट करता है ॥ १० ॥

अशुद्धपारददोषशान्तिः—विकारो यदि जायेत पारदान्मलसंयुतात्।

गन्धकं सेवयेत्तत्र शोधितं विधिपूर्वकम् ॥११॥

यदि मलयुक्त पारे के सेवन करने से विकार हो जाय तो विधिपूर्वक शुद्ध की हुई गंधक सेवन करनी चाहिये ॥ ११ ॥

अपरोगंधकयोगः—गन्धकं माषयुग्मं च नागवल्लीदलैः सह ।
खादेच्चेत्पारदग्रस्तो दोषशान्तिस्तदा भवेत् ॥ १२ ॥

शुद्धगंधक दो मासा लेकर पान के रस के साथ खाई जाये तो पारदग्रस्त पुरुष के दोषों की शान्ति होजाती है ॥ १२ ॥

अथान्यच्च—लाक्षाकूष्माण्डखण्डांश्च तुलसीं शतपुष्पिकाम् ।
लवङ्गं वत्सनागं च गन्धकेन समात्रकम् ॥ १ ॥
कर्षमात्रं पयो भुक्तं सर्वं तत्र पृथक् पृथक् ॥
सर्वयोगोत्तरासाध्यः सूतदोषविकारनुत् ॥ २ ॥

लाख और शुद्ध गंधक, पेठे का रस और शुद्ध गंधक, खांड तथा शुद्धगंधक, तुलसी का रस तथा शुद्ध गंधक, सौंफ तथा शुद्धगंधक, लौंग तथा शुद्धगंधक, शोधित वत्सनाभविष तथा शोधित गंधक प्रत्येक पदार्थ अपनी मात्रानुसार ले और एक कर्ष खावें (विष तथा गंधक के योग में अत्यन्त कम मात्रा लें । विष की मात्रा रत्ति का १६वां भाग उचित होगी) अथवा लाख आदि सब द्रव्य पृथक् २ मात्रानुसार खावें और साथ में दूध पीवें तो सब योगों से असाध्य पारे के दोष में भी इस से लाभ होता है ॥ २ ॥

अथान्यच्च—नागवल्लीरसप्रस्थं भृङ्गराजरसं तथा ।
तुलस्याश्च रसं प्रस्थं छागदुग्धं समांशकम् ॥ १ ॥
मर्दनं सर्वगात्रेषु यामयुग्मं दिनत्रयम् ।
स्नानं शीतलतोयेन सूतदोषप्रशान्तये ॥ २ ॥

पान का रस एक प्रस्थ, भांगरे का स्वरस एक प्रस्थ । तुलसी का स्वरस एक प्रस्थ, बकरी का दूध सबके समान डालकर एकत्र करके सारे शरीर पर दो पहर या छः घण्टे तक तीन दिन मलते रहें । और शीतल जल से स्नान करें तो पारे के दोष दूर हो जाते हैं ॥ २ ॥ इतिरसवैकृतियोगाः ।

अथ रसायनाधिकारः ।

तत्र रसायनस्य लक्षणमाह—यज्जराव्याधिविध्वंसि वयसः स्तम्भकं तथा ।
चक्षुष्यं बृंहणं वृष्यं भेषजं तद्रसायनम् ॥ १ ॥

जो भेषज बुढ़ापे तथा रोगों को नाश करती हो आयु को स्थिर रखती हो । आंखों का हित करे । धातुओं को बढ़ावे, वृष्य अर्थात् शरीर को सांड के समान वीर्य युक्त तथा शक्त बनावे उस औषध को रसायन कहते हैं ॥ १ ॥

रसायनस्य फलमाह—दीर्घमायुः स्मृतिं मेधामारोग्यं तरुणं वयः ।
देहेन्द्रियबलं कान्तिं नरो विन्देद्रसायनात् ॥ १ ॥

दीर्घ आयु, स्मरण शक्ति, मेधा बुद्धि, आरोग्यता, युवावस्था, देह तथा इन्द्रियों में बल, सौन्दर्य ये सभी बातें मनुष्य को रसायन से प्राप्त होती हैं ॥१॥

तद्विधिमाह—**पूर्वे वयसि मध्ये वा मनुष्यस्य रसायनम्।**
प्रयुञ्जीत भिषक्प्राज्ञः स्निग्धशुद्धतनोः सदा ॥ १ ॥

विद्वान वैद्य सदा पूर्व आयु में वा मध्य आयु में अर्थात् १६ से ७० वर्ष तक की आयु में स्नेहन किये हुए तथा वमन विरेचनादि से शुद्ध हुए २ शरीर वाले मनुष्य को ही रसायन सेवन करावे ॥ १ ॥

नाविशुद्धशरीरस्य युक्तो रासायनो विधिः।
आभाति वाससि क्लिष्टे रङ्गयोग इवाऽऽहितः ॥ २ ॥

अशुद्ध शरीर वाले अर्थात् वमन विरेचनादि न किये हुए मनुष्य को रसायन विधि न करावे। जैसे मैले कपड़े पर रग चढ़ायें तो उस कपड़े पर ठीक नहीं चढ़ता इसी प्रकार से अशुद्ध शरीर वाले प्राणी पर रसायन का पूरा गुण नहीं होता ॥२॥

अथ तदुदाहरणानि—**शीतोदकं पयः क्षौद्रं घृतमेकैकशो द्विशः।**
त्रिशः समस्तमथवा प्राक् पीतं स्थापयेद्वयः ॥ १ ॥

शीतल जल, दूध, शहद, घी इन में से प्रत्येक पदार्थ पृथक् २ प्रातःकाल यदि मनुष्य सेवन करे। अथवा शीतल जल और दूध, दूध और शहद; शहद और घी मिलाकर कोई एक योग सेवन करें। अथवा जल दूध तथा शहद, दूध शहद वा घी इन दो प्रयोगों में से कोई एक योग सेवन करें तो आयु स्थिर होती है। अथवा इन चारों को इकठ्ठा मिलाकर प्रयोग करें तो आयु स्थिर होती है ॥१॥

मण्डूकपर्ण्यादि—

मण्डूकपर्ण्याः स्वरसः प्रभाते प्रयोज्य यष्टीमधुकस्य चूर्णम्।
रसो गुडूच्यास्तु समूलपुष्प्याः कल्कः प्रयोज्यः खलु शङ्खपुष्प्याः ॥

मण्डूकपर्णी का स्वरस प्रातःकाल पिया जाये, मुलठी का चूर्ण प्रातःकाल खाना चाहिये। गिलोय का स्वरस और अपामार्ग का रस, शंखपुष्पी का कल्क २

आयुःप्रदान्यामयनाशनानि बलाग्निवर्णस्वरवर्धनानि।
मेध्यानि चैतानि रसायनानि मेध्या विशेषेण च शङ्खपुष्पी ॥ ३ ॥

ये पृथक् २ सब प्रयोग आयु बढ़ाने वाले हैं, रोगनाशक हैं, बल, वर्ण, अग्नि तथा स्वर बढ़ाने वाले हैं, मेधावर्धक हैं तथा रसायन हैं। विशेष करके शंखपुष्पी मेधावर्धक है ॥ ३ ॥

त्रिफलारसायनम्—**विशेषेण तुगाक्षीर्या पिप्पल्या लवणेन च।**
त्रिफला सितया वाऽपि युक्ता सिद्धं रसायनम् ॥४॥

हरड़, बहेड़ा, आंवला तीनों समभाग लेकर चूर्ण करे। इस चूर्ण को वंशलोचन से मिलाकर या पिप्पली के चूर्ण के साथ मिलाकर या सेंधालवण से

मिलाकर अथवा खांड मिलाकर खावें तो यह रसायन करती है और सिद्धफल है॥४॥

ऋतुहरीतकी—सिन्धूत्थशर्कराशुण्ठीकणामधुगुडैः क्रमात्।
वर्षादिष्वभया प्राश्या रसायनगुणैषिणा ॥ ५ ॥

बड़ी हरड़ के चूर्ण को सेंधानमक से मिलाकर वर्षा ऋतु मे खावें। खांड से मिलाकर शरद ऋतु में खावें। सोंठ से मिलाकर हेमन्त में खायें। पिप्पली के समभाग चूर्ण से मिलाकर शिशिर में खावें। शहद से मिलाकर वसन्त में खावें। गुड से मिलाकर ग्रीष्म में खावें तो यह हरड़ रसायन के गुण करती है और कोई रोग नहीं आता है ॥ ५ ॥

अथ ग्रन्थान्तराद्धरीतक्यनुपानानि—

ग्रीष्मे तुल्यगुडां सुसैन्धवयुतां मेघावनद्धाम्बरे
सार्धं शर्करया शरद्यमलया शुण्ठ्या तुषारागमे।
पिप्पल्या शिशिरे वसन्तसमये क्षौद्रेण संयोजितां
राजन्भुङ्क्ष्व हरीतकीमिव गदा नश्यन्तु ते शत्रवः ॥ १ ॥

हे राजन् ग्रीष्मकाल में समान भाग गुड से, वर्षाकाल मे सेंधानमक से, शरद्काल में खांड समभाग मिलाकर, हेमन्त में सोंठ के चूर्ण के साथ, शिशिर में पिप्पली के चूर्ण के साथ, बसन्त में शहद के साथ मिलाकर बड़ी हरड़ के चूर्ण को खा, इस प्रकार हरड़ के सेवन से जैसे सभी रोग नष्ट होजाते हैं वैसे ही तेरे शत्रु तुझ से नष्ट होजावें ॥ १ ॥

पुनर्नवायोगः—पुनर्नवस्यार्धपलं नवस्य पिष्टं पिबेद्यः पयसाऽर्धमासम्।
मासद्वयं तत्त्रिगुणं समां वा जीर्णोऽपि भूयः स पुनर्नवः स्यात् २

नई पुनर्नवा को आधा पल लेकर पीसकर जो मनुष्य दूध के साथ आधा मास पीवे, दो मास पीवे, छः मास पीवे या एक साल पीवे तो वृद्ध जीर्ण शीर्ण मनुष्य भी फिर युवा होजाता है ॥ २ ॥

भृंगराजरसः—ये मासमेकं स्वरसं पिबन्ति दिने दिने भृङ्गरजःसमुत्थम्।
क्षीराशिनस्ते बलवीर्ययुक्ताः समाः शतं जीवनमाप्नुवन्ति ॥३॥

जो मनुष्य प्रतिदिन ताजे भांगरे का स्वरस एक मास तक पीते हैं, और केवल दूध ही पीते हैं। वे बल तथा वीर्य से युक्त होकर एक सौ वर्ष जीवित रहते हैं ॥३॥

शतावर्यादिचूर्णम्—

शतावरी मुण्डिनिका गुडूची सहस्तिकर्णी सहतालमूली।
एतानि कृत्वा समभागयुक्तान्याज्येन किं वा मधुनावलिह्यात् ॥४॥

शतावरी, मुण्डी, गिलोय, हस्तिकर्णपलाश, मूसली इन सब को समभाग पीसकर चूर्ण करे इसे घी से वा शहद से चाटे ॥ ४ ॥

जरारुजामृत्युवियुक्तदेहो भवेन्नरो वीर्यबलादियुक्तः।
विभाति देवप्रतिमः स नित्यं प्रभामयो भूरिविवृद्धबुद्धिः ॥ ५ ॥

तो बुढापा, रोग, मृत्यु अर्थात् अकाल मृत्यु से रहित होकर मनुष्य बलवीर्य से युक्त होता है। तथा वह मनुष्य प्रभायुक्त तेजस्वी तथा महा बुद्धियुक्त होकर देव के समान शोभित होता है ॥ ५ ॥

अश्वगंधायोगः—

पीताऽश्वगन्धा पयसाऽर्धमासं घृतेन तैलेन सुखाम्बुना वा।
कृशस्य पुष्टिं वपुषो दधाति नरस्य सस्यस्य यथाऽम्बुवृष्टिः ॥६॥

असगंध के चूर्ण को दूध से, घी से, तेल से वा कोसे जल से आधा मास भी सेवन किया जाये तो दुर्बल कृश पुरुष को इस प्रकार से पुष्टि अर्थात् मोटा कर देती है जिस तरह से वर्षा छोटे २ धानों को बरसकर बढ़ा देती है ॥ ६ ॥

शिशिरेऽश्वगन्धप्रयोगः—शिशिरे चाश्वगन्धायाः कन्दचूर्णं पयोन्वितम्।
मासमत्ति समध्वाज्यं स वृद्धोऽपि युवा भवेत् ॥७॥

शिशिर या पतझड़ की मौसम में जो मनुष्य असगंध के चूर्ण को दूध के साथ मिलाकर पकाकर शहद तथा घी डालकर एक मास खा लेवे तो यदि वृद्ध हो तो भी जवान होजाता है ॥ ७ ॥

आमलक्यादिः—घृतामलकशर्करातिलपलाशबीजानि यः
समानि शयनस्थितो मधुयुतानि खादेन्निशि।
वलीपलितवर्जितस्तरुणनागतुल्यो बली
बृहस्पतिसमः पुमान्भवति सोऽचिरेण ध्रुवम् ॥ ८ ॥

घी, आंवला, खांड, तिल, ढाक के बीज इन सब को एक २ भाग लेकर शहद से मिलाकर जो मनुष्य रात को सोते समय खाता है। वह वलि तथा पलितरोग से रहित होता है, जवान हाथी के समान बलवान होता है तथा शीघ्र ही बृहस्पति के समान बुद्धिमान् निश्चय से होजाता है ॥८॥ इति राजमार्त्तण्डात्

कृष्णतिलादि—असिततिलविमिश्रान्पल्लवान्भक्षयेद्यः
सततमिह पयोशी भृङ्गराजस्य मासम्।
भवति च चिरञ्जीवी व्याधिभिर्मुक्तदेहो
भ्रमरसदृशकेशः कामचारी मनुष्यः ॥ १ ॥

काले तिल तथा भांगरे के कोमल पत्तों को जो मनुष्य निरन्तर खाता रहे और केवल दूधमात्र पीवे। तो ऐसा एक मास करने से वह मनुष्य देर तक जीता है, सब रोगों से उस का देह छूट जाता है। भंवरे के समान काले बाल होजाते हैं तथा मनुष्य कामचारी होजाता है ॥ १ ॥ इति वृन्दात् ॥

सितादियोगः—

सासितया वचयाऽऽमलकैरथ त्रिफलया त्वथ वा घृतमिश्रया।
कनकलोहरजः सदलं कृतं परमिदं हि रसायनमिष्यते ॥ १ ॥

खांड, बच से मिलाकर अथवा आंवलों से मिलाकर अथवा त्रिफला चूर्ण और घी से मिलाकर सोने की भस्म तथा लोहे की भस्म (दलं तेजपत्र, अर्द्धांशे, गंधक) सममाग लेकर पूर्वलिखित खांड वचादि के चूर्णों से आधी लेकर एकत्र कर खाया जाये तो यह परमरसायन है॥ इति चिकित्साकालिकातः॥

धात्रीतिलादियोगः—

धात्रीतिलान्भृङ्गरजोविश्रान्ये भक्षयेयुर्मनुजाः क्रमेण।
ते कृष्णकेशा विमलेन्द्रियाश्च निर्व्याधयोऽप्यामरणाद्भवेयुः॥१॥

आंवला, तिल, भांगरा सब को समभाग लेकर चूर्ण कर के जो मनुष्य नित्य ही खाते रहते हैं। क्रम से उन के बाल काले होजाते हैं, इन्द्रियें निर्मल होजाती हैं तथा मृत्यु पर्यन्त रोग नहीं आते हैं॥ १॥

वर्द्धमानभल्लातकयोगः—पञ्च भल्लातकांश्छित्त्वा शोधयेद्विधिवज्जले।
कषायं तं पिबेच्छीतं घृतेनाक्तोष्ठतालुकम्॥२॥

पांच भिलांवों को काटकर जलमें डालकर विधिपूर्वक शुद्ध करले। फिर इनका क्वाथ कर के उस क्वाथ को शीतल कर के पीवे। और पीने से पहले घी से होंठ तथा तालु आदि चुपड़ रखे॥ २॥

पञ्चवृद्ध्या पिबेद्यावत्सप्ततिं ह्रासयेत्ततः।
जीर्णेऽद्यादोदनं शीतं घृतक्षीरोपसंहितम्॥ ३॥

दूसरे दिन दस भिलांवों का क्वाथ पीवें। इस प्रकार से पांच २ भिलांवें प्रतिदिन बढ़ाता जावे। जब ७० भिलावों का क्वाथ एक दिन में पी लेवे तब ५, ५ भिलांवें प्रतिदिन घटाकर क्वाथ कर के पिलाता जावे। जब भिलांवें का क्वाथ पच जाया करे तब चावल पकाकर शीतल कर घी तथा दूध मिलाकर खावे॥ ३॥

एतद्रसायनं मेध्यं वलीपलितनाशनम्।
कुष्ठार्शःक्रिमिदोषघ्नं दुष्टशुक्रविशोधनम्॥ ४॥

ऐसा करने से मेधा बढ़ती है, यह रसायन है, बलि तथा पलित का नाश होता है। कुष्ठ, बवासीर, क्रमिदोष ये सब नष्ट होते हैं। तथा दूषित वीर्य विशुद्ध होजाता है॥ ४॥ इति वृन्दात्॥

गुडूच्यपामार्गादियोगः—

गुडूच्यपामार्गविडङ्गशङ्खिनीबचाभयाशुण्ठिशतावरीः समाः।
घृतेन लीढ्वा प्रकरोति मानवं त्रिभिर्दिनैः श्लोकसहस्रधारिणम्॥१॥

गिलोय, अपामार्ग, विडंग, शंखपुष्पी, बच, हरड़, सोंठ, शतावर प्रत्येक द्रव्य समभाग लेकर चूर्ण कर के घी से मिलाकर खिलावें तो मनुष्य ३ दिन में ही १००० श्लोक कंठ कर सकता है॥ १॥

ब्रह्म्यादियोगः—ब्राह्मीवचाभयावासापिप्पल्यो मधुसैन्धवम्।

अस्य प्रयोगात्सप्ताहात्किन्नरैः सह गीयते ॥ २ ॥

ब्रह्मी, बच, हरड़ें, बांसा, पिप्पली, शहद, सेंधानमक (सैंधवं के स्थान में संयुतम् भी पाठ है) इन को समभाग चूर्ण कर के खाया जाये तो सात दिन में ही किन्नरों के समान गाने योग्य स्वर होजाता है ॥ २ ॥

आमलकीरसः—

हन्त्यम्लपित्तवमनारुचिदाहमोहखालित्यमेहतिमिरार्शसशुक्रदोषान्।
मुक्त्वा नरः सततमामलकीरसेन वृद्धोऽपि तेन च भवेत्तरुणीरिरंसुः

अम्लपित्त, वमन, अरुचि, दाह, मोह, गंजापन, प्रमेह, तिमिर, अर्श, शुक्रदोष ये सब केवल आंवले के स्वरस को नित्य पीने से दूर हो जाते हैं। और बूढ़ा मनुष्य भी इसके निरन्तर सेवन करने से तरुणी को भोगना चाहता है ॥ ३ ॥

अथ लोहगुग्गुलुः—

अयः पलं गुग्गुलुरत्र योज्यः पलत्रयं व्योषपलानि पञ्च।
पलानि चाष्टौ त्रिफलारजश्च कर्षं लिहन्यात्यमरत्वमेव ॥ १ ॥

लोहे की भस्म एक पल; शुद्ध गूगल ३ पल, त्रिकुटा का चूर्ण ५ पल लें। त्रिफला का चूर्ण ८ पल लें। सबको एकत्र कूट पीस लें। इस में से एक कर्ष खावें तो मनुष्य अमर हो जाता है अर्थात् अकाल मृत्यु नहीं होती है। इति लोहगुग्गुलुभविप्रकाशात्।

अथ गन्धकरसायनम्—

शुद्धो बलिर्गोपयसा विभाव्यस्ततश्चतुर्जातगुडूचिकाभिः।
पथ्याक्षधात्र्यौषधभृङ्गराजैर्भाव्योऽष्टवारं पृथगार्द्रकेण ॥ १ ॥

शुद्ध आंवलासार गन्धक को गौ के दूध से आठ वार भावित करे। फिर चतुर्जात अर्थात् दारचीनी, तेजपात, इलायची, नागकेसर समभाग ले इनके क्वाथ से आठ वार भावित करे। फिर गिलोय के स्वरस सें आठ बार भावित करे। फिर हरड़; बहेड़ा आंवले के क्वाथ से आठ वार भावित करे। फिर सोंठ के क्वाथ से आठ वार भावित करे। फिर भांगरे के स्वरस से आठ वार भावित करे। फिर अदरक के स्वरस से आठ वार भावित करे ॥ १ ॥

शुद्धे सितां योजय तुल्यभागां रसायनं गन्धकराजसंज्ञम्।
कर्षोन्मितं सेवितमेति मर्त्यो वीर्यं च पुष्टिं दृढदेहवह्निम् ॥ २ ॥

तब गन्धक शुद्ध हो गई समझो। इस गन्धक में समान भाग खांड डालें। इसे गन्धकराज रसायन कहते हैं। इसे एक कर्ष (मात्रा बलानुसार खावें) लेकर सेवन करावें तो मनुष्य का वीर्य बढ़ता है, पुष्टि होती है तथा शरीर दृढ़ हो जाता है तथा अग्नि दृढ़ होती है ॥ २ ॥

कण्डूं च कुष्ठं विषदोषमुग्रं मासद्वयेनेह जयेत्प्रयोगः।
घोरातिसारं ग्रहणीगदं च हरेच्च रक्तं दृढशूलयुक्तम् ॥ ३ ॥

कराडु, कुष्ठ, विष दोष भयंकर हों तो भी दो मास में इन सब रोगों को यह रसायन नाश करता है। घोर अतीसार को,ग्रहणी रोग को तथा अत्यन्त शूल से युक्त रक्त के बहने को यह प्रयोग नष्ट करता है ॥ ३ ॥

जीर्णज्वरे मेहगणे प्रकृष्टं वातामयानां हरणे समर्थम्।
प्रजाकरं केशमतीव कृष्णं करोति चेद्भक्षति चार्धवर्षम् ॥ ४ ॥

जीर्ण ज्वर,प्रमेह,वातरोग इन सब रोगों को यह रसायन नष्ट करता है।सन्तान करता है, तथा बालों को अत्यन्त काला करता है परन्तु यदि छह मास इसे खाया जाय तो पूर्वलिखित गुण होते हैं ॥ ४ ॥

रसायनं पर्वतजात्मबीजं क्षाराम्लतैलादिकराजिवर्जम्।
ससोमरोगं सहमुष्कवृद्धिं हरेच्च वै गन्धकराजयोगः ॥ ५ ॥

इस गन्धकराज रसायन के सेवन के समय क्षार, अम्ल, तैलादि और राई (अथवा तैल तथा ककाराष्टक करेला आदि आठों द्रव्य) ये पदार्थ नहीं खाने चाहियें।इससे सोमरोग,अराडवृद्धि ये सब नष्ट होते हैं ॥ ५॥ यह गन्धकराज सब रोगों को नष्ट करता है। मृतक सदृश लोगों को प्राण देता है तथा दीर्घ आयु करता है॥

हरति सकलरोगान्गन्धकाख्यः प्रयोग:
मृतसदृशनराणां प्राणदो दीर्घमायुः।
तदनु विहितयोगो भस्मसूतं सहेम
रमयति त्रिदशानां देहदीप्तिं सुरूपाम् ॥ ६ ॥

यदि इसके साथ रससिन्दूर तथा स्वर्णभस्म मिलायी जाय तो देवताओं के समान शरीर के सौन्दर्य को मनुष्यों में चमका देता है;और शरीर को सुन्दर कर देता है ६

वीर्यस्य वृद्धिं दृढदेहवह्निमशीतिवातान्विनिहन्ति कुष्ठम्।
प्रमेहदुष्टोदररोगजालं विशेषतो हन्ति तु संनिपातम् ॥ ७ ॥

वीर्य की वृद्धि करता है। देह दृढ़ करता है, अग्नि दीप्त करता है, अस्सी प्रकार के वातरोगों को नष्ट करता है,कुष्ठ, प्रमेह,दुष्ट उदररोग अन्य अनेक रोगों को तथा विशेषकर सन्निपात को नाश करता है ॥ ७ ॥

दोषज्वरं राजरुजं प्रमेहं पाराडुक्षयश्वासगुदाङ्कुरादीन्।
एतान्हि रोगान्विनिहन्ति शीघ्रं रसायनं जल्पितमीश्वरेण ॥ ८ ॥

वातादि से हुए २ ज्वर को, राजयक्ष्मा को, प्रमेह, पाराडु, क्षय, श्वास तथा गुदा के अंकुरों को इन सबको यह ईश्वर या महादेव जी का कहा हुआ रसायन शीघ्र नाश करता है ॥ ८ ॥ इति गन्धरसायनम्।

अथ तैलानि—

एरराडतैलमथ निम्बफलास्थितैलमेतद्रसायनमनामयकामकारि।
ज्योतिष्मतीफलपलाशफलोद्भवं वा तैलं वलीपलितहारि भिषक्प्रदिष्टम्

एरण्ड का तेल, नीम के फलों को तेल ये दोनों तेल पृथक् २ मालिश करने, सूंघने तथा खाने से रसायन हैं तथा शरीर को नीरोग करने वाले हैं। मालकंगनी का तेल वा ढाक के बीजों का तेल भी प्रयोग करने से वलि तथा पलित को नष्ट करता है ऐसा वैद्यों ने कहा है ॥ १ ॥

अथ रसायनफलम्—

न केवलं दीर्घमिहाऽऽयुरश्नुते रसायनं यो विविधं निषेवते ।
गतिं स देवर्षिनिषेवितां शुभां प्रपद्यते ब्रह्म तथैव चाक्षयम् ॥२॥

जो मनुष्य विविध प्रकार की रसायनों को सेवन करता है वह देवें तथा ऋषियों की पवित्र गति को प्राप्त होकर अक्षय ब्रह्म को प्राप्त होता है ॥ २ ॥

इति रसायनाधिकारः ॥

इति हरद्वारीय गुरुकुलविश्वविद्यालयस्नातकेन श्रीविद्याधरविद्यालंकारेणायुर्वेद-शास्त्रिणा लवपुरीय श्रीमद्दयानन्दायुर्वेदमहाविद्यालयीय वैद्यकविराजोपाधिधारिणा राजयक्ष्मचिकित्सकेन जलचिकित्साविशेषज्ञेन रसेन्द्रसारसंग्रहटीकाकर्त्रा कृतायां योगरत्नाकरस्य रत्नगर्भानाम्निटीकायां वाजीकरणरसायनप्रकरणम् समाप्तम् ।

अथ रोगानुसारेणौषधस्यानुपानानि ।

कैराताम्बुदपर्पटं ज्वरगदे तक्रं ग्रहण्यामथा-
तीसारे कुटजः कृमौ कृमिरिपुर्दुर्नामकेऽरुष्करम् ।
पाण्डौ किट्टमथ क्षयं गिरिजतु श्वासे तु भार्ग्यौषधं
मेहे त्वामलरात्रिके तृषि जलं संतप्तहेमान्वितम् ॥ १ ॥

ज्वर में चिरायता मोथा पित्तपापड़ा अनुपान में दें। ग्रहणी में तक्र या छाछ दें । अतीसार में कुड़े की छाल का प्रयोग करें, कृमिरोग में बिडंग दें । बवासीर में भिलांवा दें । पाण्डुरोग में मण्डूर दें । क्षय में शिलाजीत दें । श्वास में भारंगी तथा सोंठ देवें। प्रमेहों में आंवला तथा हल्दी दें । प्यास में सोने का बुझाया हुआ जल दें ।

शूले हिङ्गुकरञ्जमामपवने तैलं रुबोर्मूत्रयुक्-
श्चप्लीह्नि कणा विषे शुकतरुः कासे तु कण्टारिका ।
वातव्याधिषु गुग्गुलुश्च लशुनः स्याद्रक्तपित्ते वृषोऽ-
पस्मारे तु वचा सवागथ गरे हेमोदरे रेचनम् ॥ २ ॥

शूल में हींग तथा करञ्जवा । आमवात में एरण्ड का तेल गोमूत्र से मिलाकर पिलावें । प्लीहारोग में पिप्पली दें । विषरोग में सिरस दें। खांसी में छोटी कटेली दें । वात व्याधियों में गूगल तथा लहसुन दें । रक्तपित्त में बांसा देवें । अपस्मार में बच तथा ब्राह्मी दें । गर अर्थात् विष सेवन से हुए रोग में सोना भस्म देवें। उदररोग में विरेचन देवें ॥ २ ॥

वातास्रे तु गुडूचिकाऽर्दितगदे माषेण्डरी मेदसि

क्षौद्राम्भः प्रदरे तिरीटमरुचौ लुङ्गो व्रणेऽर्थः पुरः।
शोके मद्यमथाम्लपित्तरुजि तु द्राक्षाऽथ कृच्छ्रे वरी
कूष्माण्डाम्बु दृगामये तु त्रिफलोन्मादे पुराणं घृतम् ॥ ३ ॥

वातरक्त में गिलोय दें। अर्दित में माषएडरी दें। मेदरोग में शहद तथा जल मिलाकर पिलावें। उदररोग में लोध दें, अरुचि में बिजौरा नींबू, व्रण में नई गूगल। शोक में मद्य दें। अम्लपित्त में दाख दें। मूत्रकृच्छ्र में शतावर तथा पेठे का पानी। नेत्ररोगों में त्रिफला, उन्माद में पुराना घी ॥ ३ ॥

कुष्ठे खादिरसारवार्यथ पयो निद्राक्षये माहिषं
श्वित्रे बाकुचिफल्यजीर्णरुजि तु स्वापो भये तोषणम्।
छर्दौ लाजमधूर्ध्वजत्रुविकृतौ नस्यं सतीक्ष्णौषधं
शूलं पार्श्वभवे तु पुष्करजटा मूर्च्छासु शीतो विधिः ॥ ४ ॥

कुष्ठ में कत्थे का पानी। नींद की कमी में भैंस का दूध, श्वित्र में बावची की फल। अजीर्ण में सोना अर्थात् नींद भय में संतोष देना। छर्दि में लाजा तथा शहद दें। ऊर्ध्वजत्रुगत रोगों में तीक्ष्ण औषध की नस्य दें। पार्श्वशूल में पोहकरमूल। मूर्च्छारोग में शीतल जल धारा आदि की विधि करें ॥ ४ ॥

कार्श्ये मांसरसोऽश्मरीषु गिरिभिद्गुल्मेषु शिग्रुत्वचा
मोक्षोऽस्रस्य तु विद्रधौ चतुरसैर्हिध्मासु नस्यं हितम्।
दाहे शीतविधिर्भगन्दरगदे तूर्वीलताश्वास्थिनी
घृष्टे रासभलोहितैः स्वरगदे मध्वन्वितं पौष्करम् ॥ ५ ॥

कृशरोग में मांस का रस दें। अश्मरीरोग में पाषाणभेद दें। गुल्मरोग में सुहांजने की छाल देवें। विद्रधि में रक्तमोक्षण करावें। हिध्मा या हिक्का में लाख के रस से नस्य देवें। दाह में शीत विधि करें। भगंदर में केंचुआं तथा कुत्ते की हड्डी को गधे के खून में घिसकर लगावे। स्वररोग में पोहकरमूल शहद मिलाकर खिलावें ॥ ५ ॥ इति सर्वरोगेष्वनुपानानि ॥

अथानुपानगुणमाह—यत्किंचिदौषधं वैद्यैर्देयं रोगानुपानतः।
तत्तद्गुणकरं ज्ञेयमनुपानबलादिह ॥ १ ॥

जो कोई औषध रोगों के अनुपान के साथ दीजाती है वह उसी अनुपान के बल से उसी २ रोगनाशक गुण को करती हैं ॥ १ ॥

अथ ग्रन्थसंग्रहकारस्याशिषः।

यावद्व्योमनि बिम्बमम्बरमणेरिन्दोश्च विद्योतते
यावत्सप्त पयोधयः सगिरयस्तिष्ठन्ति पृष्ठे भुवः।
यावच्चावनिमण्डलं फणिपतेरास्ते फणामण्डले
तावत्सद्भिषजः पठन्तु परितः श्रीयोगरत्नाकरम् ॥ २ ॥

जब तक इस संसार में आकाश पर सूर्य तथा चांद चमकते हैं। और जब तक सातों समुद्र तथा पर्वत भूमि के पृष्ठ पर स्थित हैं। जब तक शेष नाग के फण पर पृथ्वी मण्डल स्थित है। तब तक सर्वत्र ही इस योगरत्नाकर ग्रन्थ को श्रेष्ठ वैद्य पढ़ते रहें ऐसा ग्रन्थकार का आशीर्वाद है ॥

इति योगरत्नाकरः समाप्तः।

इति हरद्वारीय गुरुकुलविश्वविद्यालयस्नातकेन श्रीविद्याधरविद्यालंकारेणायुर्वेद-
शास्त्रिणा लवपुरीय श्रीमद्दयानन्दायुर्वेदमहाविद्यालयीय वैद्यकविराजोपाधिधारिणा
कलिकातावास्तव्य श्रीताराचरणचक्रवर्त्तिसर्वदर्शनतीर्थायुर्वेदाचार्य्य यक्ष्म
चिकित्सादक्षशिष्येणायुर्वेदशास्त्रिणा राजयक्ष्मचिकित्सकेन जल-
चिकित्साविशेषज्ञेन रसेन्द्रसारसंग्रहटीकाकर्त्रा कृतायां योग-
रत्नाकरस्य रत्नगर्भानाम्निटीकायां सर्वरोगानु-
पानो नाम प्रकरणः समाप्तः।

समाप्तश्चयोगरत्नाकरः। इति शुभं भूयात् ॥



अथ

योगरत्नाकरे ।

उत्तरार्द्धस्य अकारादिक्रमेण सूची ।

समाप्तम् ।